NAAC ACCREDITED WITH "A" GRADE

[redacted]

Bhagwan Aadinath College of Education

Recognized by NCTE and Affiliated to Bundelkhand University Jhansi, Est. 2014

(A unit of Digamber Jain Education Welfare Society, Talabpura Lalitpur-U.P. 284403)

(2F&12B by UGC)

3.2.2 Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during the year

Sl. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	National / International	Year of publication	ISBN/ISSN number of the proceeding	Affiliating Institute at the time of publication	Name of the publisher
1	Dr.Rohit Kumar	Book	Bharat Me shiksha ka prasar "Ek Udan"			National	2022	9788195753925	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Writers Row Publication
2	Bhanu Pratap Bajpay	Various immersions of Education	Environmental Education			National	2021	9789390870912	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Akhand Publishing house
3	Dr.Sunil Kumar	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	उच्च शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई, चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा, ललितपुर

4	Dr. Rohit Kumar	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के साथ ही स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के लिए चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
5	Vinod Kumar Buddha	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	Opinion of the students of higher education about new education policy	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
6	Smt. Vineeta Jain	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उसकी चुनौतियाँ	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
7	Shiv Authar Yadav	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा को बदलना एक बड़ी चुनौती	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
8	Rajkumar	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा को बदलना एक बड़ी चुनौती	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
9	Ramakant Verma	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	Physical Education in India and Challenges in the Implementation of New Education Policy 2020	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House

प्राचार्य
...वान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूके...
महर्रा, ललितपुर

10	Raju Uf Chabile	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं नई चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
11	Ashutosh Kumar Agnihotri	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं नई चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
12	Smt.Nidhi Jain	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यन्वयन और उसकी चुनौतियाँ"	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
13	Atul Tiwari	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यन्वयन और उसकी चुनौतियाँ"	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
14	Kamta Prasad	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	An Assessment of New Education Policy 2020: Teacher's Opinion	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
15	Tanmay Gupta	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	An Assessment of New Education Policy 2020: Teacher's Opinion	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा, ललितपुर

16	Bhanu Pratap Bajpay	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा में समानता और समावेश सुनिश्चत करने में शिक्षक शिक्षण का प्रभाव	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
17	Shyam Pratap Singh	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा में समानता और समावेश सुनिश्चत करने में शिक्षक शिक्षण का प्रभाव	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
18	Ankit Namdev	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	Effects of New Education Policy 2020 on Higher Education	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
19	Anil Kumar Singh Kushwaha	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	Effects of New Education Policy 2020 on Higher Education	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
20	Dr. Rakesh Kumar verma	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय– भारतीय उच्चतर शिक्षा व्यवस्था हेतु एक नया और भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
21	Ku. Jyoti Kumari Shrivastava	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय– भारतीय उच्चतर शिक्षा व्यवस्था हेतु एक नया और भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय, सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा, ललितपुर

22	Amrendra Kumar Lal	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	उच्च शिक्षा में नवीन कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये शिक्षक की भूमिका एन0ई0पी0 2020 के संदर्भ में	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
23	Neeraj Kumar Tiwari	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	उच्च शिक्षा में नवीन कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये शिक्षक की भूमिका एन0ई0पी0 2020 के संदर्भ में	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
24	Rakesh Kumar	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	शिक्षा में समानता और समावेशन सुनिश्चित करने में शिक्षक शिक्षा का प्रभाव	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
25	Ku.Vandana Singh	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	शिक्षा में समानता और समावेशन सुनिश्चित करने में शिक्षक शिक्षा का प्रभाव	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
26	Ashiwani Kumar Jain	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ मे सीखने को बढ़ावा देने के लिए अभिनाव शिक्षा	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र मे नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
27	Jay Prakash	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ मे सीखने को बढ़ावा देने के लिए अभिनाव शिक्षा	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा, ललितपुर

28	Vipin Chand	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्र निर्माण में नई शिक्षा पद्धति का महत्व एक परिचय और विवेचना	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
29	Ramsewak Chandrakar	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	नवीन शिक्षा नीति–आवश्यकता और चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House
30	Satlesh Kumar	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	नवीन शिक्षा नीति–आवश्यकता और चुनौतियां	राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां	राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद(नैक)द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के बाद शिक्षा क्षेत्र में नई चुनौतियां 25 जुलाई 2022	National	2022	7989395037020	Bhagwan Aadinath College of Education, Maharra Lalitpur	Insta Publishing House

IQAC-COORDINATOR
Bhagwan Aadinath College of Education
Maharra-Lalitpur
IQAC Coordinator

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा, ललितपुर
Principal

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा, ललितपुर

भारत में शिक्षा का प्रसार

"एक उडान"

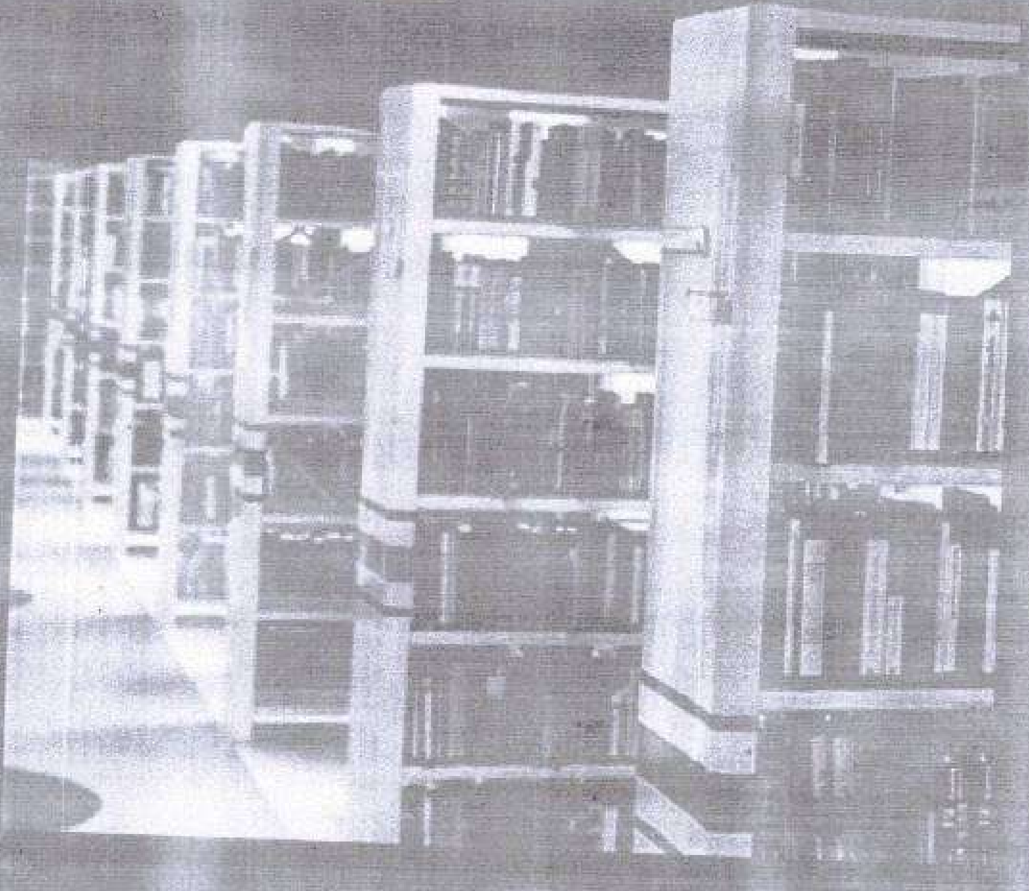

डा रोहित कुमार

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महरौनी, ललितपुर

Published by

Writers Row Publications 2022
#80, 2nd Cross Road, Indira Nagar,
Bangalore – 560 073
Phone number- +91 3867425717
Email – writersrowpublications@gmail.com
Website: www.writersrowpublications.com

Sales Headquarters – Bangalore

Copyright © DR. ROHIT KUMAR 2022

This book has been published with all reasonable efforts taken to make the material error-free after the consent of the respective authors. No part of this book shall be used, reproduced in any manner whatsoever without written permission from the editors, except in the case of brief quotations embodied in critical articles and reviews. The Authors of the respective chapters of this book is solely responsible and liable for its content.

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, transmitted, or stored any digital or electronic form. Also photocopying, recording or otherwise without the prior permission of the editor and publisher is strictly prohibited.

ISBN: 978-81-957539-2-5

First Edition 2022

No. of Pages – 280

₹399/-

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महरौ, ललितपुर

1. भारत में वैदिक कालीन
2. बौद्धकालीन शिक्षा का
3. भारत में मिशिनरियों द्वारा
4. भारत में ईस्ट इंडिया
5. लार्ड मैकाले का शिक्षा
6. ब्रिटिश सरकार द्वारा
सर्वेक्षण
7. आज्ञा पत्र 1833
8. वुड घोषणा पत्र
9. वुड घोषणा पत्र के
10. भारतीय शिक्षा आयोग
11. भारतीय विश्वविद्यालय
12. गोखले का प्रस्ताव
13. कलकत्ता विश्वविद्यालय
14. द्वैध शासन प्रणाली
15. हर्टॉग समिति
16. बुनियादी शिक्षा या नई
17. सार्जेन्ट आयोग 1944
18. स्वतंत्रता के पश्चात
19. राधाकृष्णन आयोग
20. माध्यमिक शिक्षा आयोग
21. भारतीय शिक्षा आयोग
22. राष्ट्रीय शिक्षा नीति –
23. राष्ट्रीय शिक्षा नीति
24. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में
25. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005
26. सर्व शिक्षा अभियान (S.S.A
27. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति

पीएच.डी. शिक्षाशास्त्र, यू जी सी नेट
2020 जून
एम.एड., बी.एड., एम.ए हिन्दी, अंग्रेजी
अर्थशास्त्र
पी जी डी सी ए

डॉ. रोहित कुमार जैन वर्तमान में भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन महरौनी ललितपुर (उत्तर प्रदेश) के बी.एड. विभाग में विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं इन्होंने अपनी शिक्षा अर्जन गृह जनपद ललितपुर एवं उच्चशिक्षा डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र. से ग्रहण की। 2018 में पैसिफिक विश्वविद्यालय उदयपुर से पीएच.डी. की शिक्षाशास्त्र में प्रदान की गई। वर्ष 2019 जून माह में यू जी सी नेट शिक्षाशास्त्र में सफलता प्राप्त की। डॉ. रोहित कुमार जैन पिछले 9 वर्षों से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे। लेखन क्षेत्र में भी इन्होंने अपना सराहनीय योगदान दिया है। यह लेखक द्वारा लिखी जाने वाली पाँचवी पुस्तक है। अभी तक इनके द्वारा 20 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं तथा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार्स में प्रतिभाग किया एवं अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में आपका विशिष्ट स्थान है।

WRITERS ROW
PUBLICATIONS

ISBN 9788195753925
₹499

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर

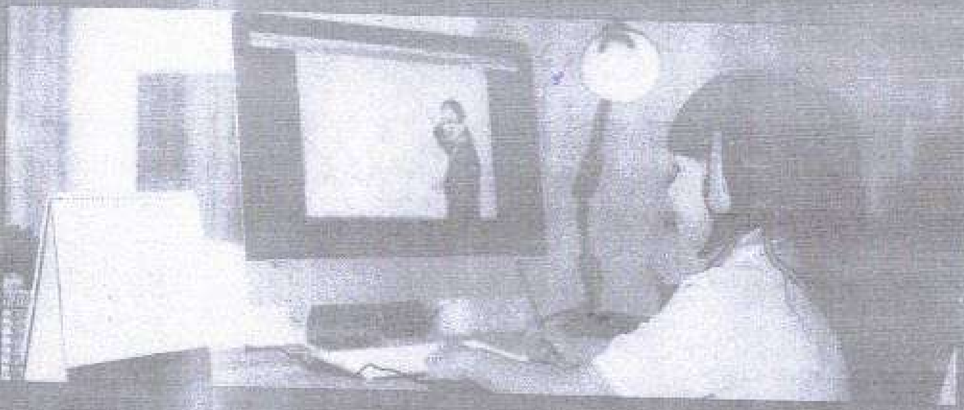

VARIOUS DIMENSIONS OF EDUCATION

Edited by

Ramesh Kumar Awasthi

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महरौनी, ललितपुर

Published by

AKHAND PUBLISHING HOUSE

Head Office : L-9A, First Floor, Street No. 42,
Sadatpur Extension, Delhi-110094 (INDIA)
Phone No.: 9968628081, 9555149955 & 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com,
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

Various Dimensions of Education

© Editor
First Edition 2021
ISBN: 978-93-90870-91-2

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, transmitted or utilized in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the copyright owner Author/Editors. Application for such permission should be addressed to the Publisher and Author/Editors. Please do not participate in or do not encourage piracy of copyrighted materials in violation of the author's rights. Purchase only authorized editions.

The responsibility for facts stated, opinion expressed or conclusions reached and plagiarism, if any, in this book is entirely that of the author. Neither the publishers nor the editors will be responsible for them whatsoever.

Printed in India

Published by Jhapsu Yadav for Akhand Publishing House. Cover Designed and Laser Typesetting at VM Graphic and Printed at Aarna Enterprises, Delhi.

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महरौ, ललितपुर

Contributors List

1. **Ramesh Kumar Awasthi**, Teacher Educator, Bajaj College of Management & Technology, Gadarpur, U.S. Nagar, (Uttarakhand).
2. **Dr. Bhalchandra Balkrishna Bhave**, Principal, Shikshan Prasarak Sanstha's College Of Education, Sangamner, Dist. Ahmednagar, Maharashtra,
3. **Dr. Indu Bala**, (Head, B.Ed. Department) Shri Gurunanak Dev PG College Nanamatta Udham Singh Nagar
4. **Dr. Sabahat Rafiq Qazi**, Lecturer, Govt. Degree College for Women Baramulla (JKUT)
5. **Dr. Vinod Kumar**, Principal, D.P.S. College of Education, Udhamsingh Nagar, (Uttarakhand)
6. **Mr. Ramshankar Varma**, Assistant Teacher, Chemistry Department, Shri S.K Somaiya Vinay Mandir and Jr. College of Arts, Science and Commerce, Vidyavihar, Mumbai, Maharashtra.
7. **Mr. Bhanu Pratap Bajpai**, Assistant Professor (BEd), BACE, Lalitpur, Uttar Pradesh
8. **Mrs Shally Verma**, Research Scholar, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh
9. **Mr. Deepak Tyagi**, Composite School Ladpur, District Muzaffarnagar, Department Of Basic Education Uttar Pradesh
10. **Fr. Baiju Thomas**, Research Scholar, Ramakrishna Mission Vivekananda Educational and Research Institute, Faculty of Disability Management and Special Education, Vidyalaya Campus, SRKV Post, Coimbatore – 20, Tamilnadu.

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा, ललितपुर

...inding——Recurrent Themes
...ing Reports
...arket in Europe'
...c Content Object Reference
...ia- A time for booster dosel,
...lonline.co.in
/profile...ml
...o Pages 17 -22, Vol. I, No. I,
...Edification: Challenges and

7

Environmental Education

Mr. Bhanu Pratap Bajpai

Introduction

The public must be sufficiently sensitised about the numerous elements of environment and development in order to pursue sustainable development and environmental conservation strategies, objectives, and targets. Environmental awareness and comprehension the concerns give the foundation and explanation for commitment and effective effort in the direction of the goals. Development that is both ecologically friendly and long-term. The importance of education has been identified. A driving force behind a variety of techniques for putting such policies and programmes into action.

Environmental education is best defined as a process that aims to raise environmental knowledge and comprehension, leading to responsible individual and community activities.Environmental education that works relies on techniques that encourage critical thinking.Problem-solving and decision-making abilities are essential. Environmental education makes use of Students participating in operations such as watching, measuring, classifying, experimenting, and other similar activities. Strategies for data collection these procedures aid students in debating, inferring, forecasting, and predicting. Analysing and interpreting environmental data.

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महरौ, ललितपुर

Environmental education is a process that allows individuals to explore environmental issues, engage in problem solving, and take action to improve the environment. As a result, individuals develop a deeper understanding of environmental issues and have the skills to make informed and responsible decisions. It is a multi-disciplinary field integrating disciplines such as biology, chemistry, physics, ecology, earth science, atmospheric science, mathematics, and geography.

The United Nations Educational, Scientific and Cultural Organisation (UNESCO) states that EE is vital in imparting an inherent respect for nature among society and in enhancing public environmental awareness. UNESCO emphasises the role of EE in safeguarding future global developments of societal quality of life (QOL), through the protection of the environment, eradication of poverty, minimization of inequalities and insurance of sustainable development (UNESCO, 2014a).

Environmental education does not advocate a particular viewpoint or course of action. Rather, environmental education teaches individuals how to weigh various sides of an issue through critical thinking and it enhances their own problem-solving and decision-making skills.

The National Environmental Education Act of 1990 requires EPA to provide national leadership to increase environmental literacy. EPA established the Office of Environmental Education to implement this program.

Environmental education programs often aim to (i) help students develop factual knowledge about the natural environment, particularly with regard to how ecosystems work and human impacts on the natural environment; (ii) foster more positive perceptions about the value of the natural world (iii) develop eco-friendly habits, (iv) engage students in environmental rejuvenation projects and (v) develop students' psychological and spiritual relationship with nature.

Objectives of Environmental Education

There are a broad number of objectives of environmental education.

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महरौनी, ललितपुर

The main aim of EE is to impart knowledge about the principles required for the conservation and utilization of natural resources for the existence of mankind. Environmental education gives required knowledge and experience realizing the value of such important views. The role of environmental education is important in the realization of the necessity of maintaining the well-balanced relationship between man and the environment.

Some general objectives of environmental education are the following:

1. EE develops a general sense among the students about the environment and its problems.
2. EE helps the students to realize the inter-relationship between man and environment.
3. EE helps to inform the students about the social norms that provide unity with environmental characteristics.
4. EE helps to create a positive attitude about the environment among the students.
5. EE helps to develop the proper skills required for the fulfilment of the aims of environmental education and educational evaluations.
6. EE helps the students to know about the environment and their surroundings.
7. It helps to create appropriate situations for the students participating in the process of decision making about the environment.
8. EE helps to inform them about their dependency on environmental resources.
9. EE helps students to alert them about the consequences of human actions on the environment both on humans and other forms of life.

Scope of environmental education

All fields of environmental science cover the scope of environmental education and awareness. this includes the effects of man on the environment- how he has exploded and devastated it, but more

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महरौनी, ललितपुर

importantly how a man can save himself from the problems which he has caused by the misuse of the resources provided by the nature him. environmental education should not only focus on the effects of environmental degradation but very importantly the understanding of the fundamental causes. These should also include the examination of social and economic factors that aggravate environmental degradation.

Scope of EE can be described as:-

- Education of the environment.
- Education from the environment.
- Education for the environment.

Components of environmental education

The economic, social, political, and ecological interdependence of the modern world is the main aim of environmental education, in which decisions and actions by different countries can have international repercussions. Environmental education should, in this regard, help to develop a sense of responsibility and solidarity among countries and regions as the foundation for a new international order which will guarantee the conservation and improvement of the environment.

The necessary components for environmental education are:

1. Knowledge and awareness of the environment and environmental challenges.
2. The attitude of concern for the environment and motivation to improve environmental quality.
3. Skills and capacity building to identify and help in resolving environmental challenges.
4. Evaluation of the environmental quality.
5. Participation in activities that led to the resolution of environmental challenges.

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महरौनी, ललितपुर

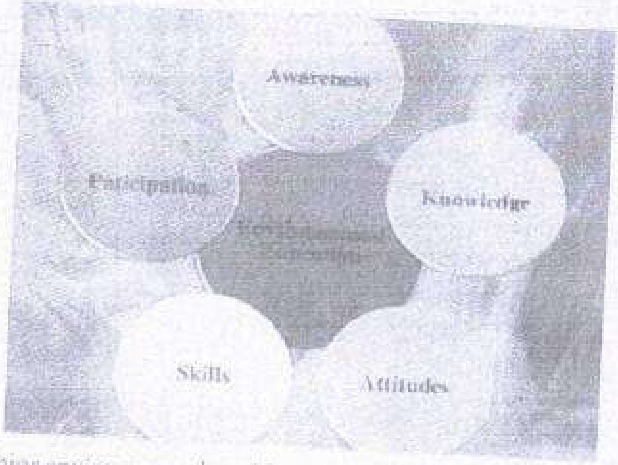

Major environmental problems which must be teaches

1. Climate change
2. Environmental degradation
3. Intensive farming
4. Land degradation
5. Nuclear issues
6. Overpopulation
7. Ozone depletion
8. Pollution
9. Resource depletion

Role of teachers in environmental education

A teacher plays an important role in environmental awareness and develops a positive attitude towards the conversation of the environment by shaping cognitive, affective and psychomotor domains simultaneously.

Conservation of the environment is not taken seriously by people, there is a "who cares" attitude or "the little I pollute, how does it matter much?" This attitude is because of a lack of environmental education. Effective learning happens in childhood to make environmental

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा, ललितपुर

education effective. The people who shoulder this responsibility need to be trained, hence the importance of teacher educators.

Conclusion

According to the above-mentioned headings and matter, we can say that environmental education is very important in today's scenario. Because in 21 century there are many environmental problems in society so we all need to be concerned about it and make a decision to solve it. We should work in partnerships to create a new generation that is more concerned about their surroundings.

The mission of the UNEP united nation environment Programme is *"to provide leadership and encourage partnership in caring for the environment by inspiring, informing, and enabling nations and peoples to improve their quality of life without compromising that of future generations."*

References

- Stapp, William B., et al. "The concept of environmental education." Journal of environmental education 1.1 (1969): 30-31.
- Neal, Philip, and Joy Palmer. *The handbook of environmental education*. Routledge, 2003.
- Jickling, Bob, and Arjen EJ Wals. "Globalization and environmental education: Looking beyond sustainable development." 40.1 (2008): 1-21.
- www.wikipedia.com
- Hart, Paul, and Kathleen Nolan. "A critical analysis of research in environmental education." (1999): 1-69.

प्राचार्य
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन
महरौनी, ललितपुर

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade
Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur
(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

उच्च शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव

डा सुनील कुमार जैन,
एम एड,एम ए (हिन्दी),पीएच डी (शिक्षाशास्त्र)
प्राचार्य,
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन,महर्रा ललितपुर

भारत सरकार द्वारा घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) कोविड–19 महामारी से उत्पन्न चुनौतियों के कारण दुनिया भर में सभी नकारात्मकताओं के बीच एक स्वागत योग्य बदलाव और ताजा खबर थी। एनईपी 2020 की घोषणा पूरी तरह से कई लोगों द्वारा अप्रत्याशित थी। एन.ई.पी. 2020 ने जिन बदलावों की सिफारिश की है, वे कुछ ऐसे थे जिन्हें कई शिक्षाविदों ने कभी आते नहीं देखा। हालाँकि शिक्षा नीति ने स्कूल और कॉलेज की शिक्षा को समान रूप से प्रभावित किया है, यह लेख मुख्य रूप से NEP 2020 और उच्च शिक्षा पर इसके प्रभाव पर केंद्रित है। यह शोध पत्र एन.ई.पी. की मुख्य विशेषताओं को भी रेखांकित करता है एवं विश्लेषण करता है कि वे मौजूदा शिक्षा प्रणाली को कैसे प्रभावित करते हैं। शिक्षा राष्ट्र की आधारशिला है क्योंकि यह देश की वृद्धि और विकास में एक शक्तिशाली भूमिका निभाती है।

इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि किसी देश और उसके नागरिको के लिए शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है और इस पर आधारित है भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान के पूर्व अध्यक्ष डॉ कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति द्वारा सिफारिशें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), नई शिक्षा नीति का मसौदा तैयार किया गया है ।

शिक्षा की गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही – इस पत्र में, लेखक अन्वेषण करने जा रहा है उल्लेखित राष्ट्रीय शिक्षा में विभिन्न नीतियों के कार्यान्वयन में आने वाले मुद्दों और चुनौतियों के बारे जो एन.ई.पी. 2020, प्रमुख क्षेत्र है अभी भी सम्मिलित नही किया गया है, एवं वर्तमान की जटिलताएँ भी इसमें शामिल सम्मिलित नही है। शोध पत्र हाल के आँकड़ों के साथ नीति और प्रथाओं के बीच विभाजन पर भी चर्चा करता है। सारे

रूप में कार्य करेगा और मान्यता, वित्त पोषण और शैक्षणिक मानक सेटिंग सहित कई कार्य स्वतंत्र वर्टिकल द्वारा किए जाएंगे। ये संस्थाएं अंततः विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) या अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (ए.आई.सी.टी.ई.) जैसे अन्य नियामक निकायों की जगह लेंगी।

अध्ययन का उद्देश्य – अध्ययन नीचे उल्लेखित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया जाता है–

1. उच्च शिक्षा के संबंध में एन.ई.पी. की मुख्य विशेषताएं जानने के लिए
2. भारतीय शिक्षा प्रणाली के इतिहास और इसकी वर्तमान स्थिति का पता लगाने के लिए।
3. उच्च शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव का विश्लेषण करना।

कार्यप्रणाली – कार्यप्रणाली में उच्च शिक्षा प्रणाली के संबंध में एन.ई.पी. 2020 की नीति के विभिन्न वर्गों पर प्रकाश डालते हुए, राष्ट्रीय शैक्षिक नीति ढांचे के सार को उजागर करने पर एक वैचारिक चर्चा शामिल है। उच्च शिक्षा पर एनईपी का प्रभाव फोकस समूह चर्चा पद्धति का उपयोग करके बनाया गया है। उच्च शिक्षा से संबंधित नई नीति की चुनौतियों और अवसरों का विश्लेषण भविष्य कहने वाला विश्लेषण तकनीक का उपयोग करके किया जाता है।

भारत की शिक्षा नीति का विकास – स्वतंत्रता से आज तक का एक रोड मैप–भारत की स्वतंत्रता के बाद पहली समिति विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948–49 थी जिसे राधाकृष्णन आयोग के नाम से भी जाना जाता है। इस समिति का नेतृत्व सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने किया था जो उच्च शिक्षा पर केंद्रित था।

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53 ने प्राथमिक विद्यालय के बाद और विश्वविद्यालय शिक्षा शुरू होने से पहले मुख्य रूप से शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया।

शिक्षा आयोग 1964–66 को डॉ. डी. एस कोठारी के नेतृत्व में कोठारी आयोग के रूप में भी जाना जाता है। इस आयोग का एक समग्र दृष्टिकोण था और प्राथमिक से स्नातकोत्तर तक प्रत्येक चरण को ध्यान में

रखते हुए शिक्षा के राष्ट्रीय पैटर्न और सामान्य नीतियों पर सरकार को सलाह देता था। 1968 में, कोठारी आयोग की सिफारिशों के आधार पर सरकार द्वारा शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति की घोषणा की गई थी और राष्ट्रीय एकीकरण और अधिक आर्थिक और सांस्कृतिक विकास को प्राप्त करने के लिए समान शैक्षिक अवसरों की नीति की घोषणा की गई थी।

शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति 1986 ने शिक्षा प्रणाली में असमानताओं को दूर करने पर विशेष जोर दिया और सभी के लिए शैक्षिक अवसर को समान करने का लक्ष्य रखा। इस अधिनियम को 1992 में संशोधित किया गया था । सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम विशेष रूप से महिलाओं, अनुसूचित जनजातियों (एस.टी.) और अनुसूचित जाति (एस.सी.) के लिए ।2009 में, बच्चों का मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम पारित किया गया, जिसने प्रारंभिक शिक्षा को प्रत्येक बच्चे के लिए एक मौलिक अधिकार बना दिया।टी.एस.आर. 2016 में नई शिक्षा नीति के विकास के लिए सुब्रमण्यम समिति या समिति ने कार्यान्वयन अंतराल को दूर करके शिक्षा की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में सुधार करने की मांग की।

अंत में डॉ. के. कस्तूरीरंगन समिति को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा तैयार करने के लिए तैयार किया गया और 31 मई, 2019 को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस मसौदे में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सामने पहुंच, इक्विटी, गुणवत्ता, सामर्थ्य और जवाबदेही की चुनौतियों का समाधान करने की मांग की गई थी। समिति ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय को शिक्षा मंत्रालय में बदल दिया।

उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए नीतियां एनईपी 2020 की मुख्य विशेषताएं – नीति में बदलाव–

1. व्यावसायिक शिक्षा सहित एच.ई. में सकल नामांकन अनुपात वर्तमान 26.3 प्रतिशत (2022) से बढ़कर 2035 तक 50 प्रतिशत हो जाएगा।
2. उच्च गुणवत्ता प्रदान करने वाले उच्च शिक्षा संस्थानों को सरकार से अधिक प्रोत्साहन मिलेगा।
3. प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों को भारत में कैंपस स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

4. उच्च शिक्षा संस्थान बहुविषयक शिक्षा और लचीली पाठ्यचर्या संरचना को बढ़ावा देंगे जो आजीवन सीखने के लिए नई संभावनाएं पैदा करने के लिए कई प्रवेश और निकास बिंदु प्रदान करेगी।
5. ऑनलाइन शिक्षा और ओपन डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) पर अधिक ध्यान केंद्रित करना, एक्सेस इक्विटी और समावेशन में सुधार के प्रमुख साधन के रूप में
6. उच्च शिक्षा के भीतर व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण। 2025 तक कम से कम 50 प्रतिशत शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव होगा।
7. अधिक अंतरराष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए H.E.गुणवत्ता को वैश्विक गुणवत्ता स्तर तक सुधारा जाएगाऔर पुरस्कार के लिए विदेशों में अर्जित क्रेडिट की गणना की जाएगी।

स्वास्थ्य शिक्षा प्रणाली को इस तरह से एकीकृत किया जाना चाहिए कि एलोपैथिक चिकित्सा शिक्षा के सभी छात्रों को आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी (आयुष) और इसके विपरीत की बुनियादी समझ होनी चाहिए। निवारक स्वास्थ्य देखभाल और सामुदायिक चिकित्सा के लिए स्वास्थ्य देखभाल शिक्षा के सभी रूपों में अधिक जोर दिया जाना चाहिए।

तकनीकी शिक्षा बह – विषयक शिक्षा संस्थानों के भीतर प्रदान की जानी चाहिए और अन्य विषयों के साथ गहराई से जुड़ने के अवसरों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। स्वास्थ्य, पर्यावरण और स्थायी जीवन के अनुप्रयोगों के साथ जीनोमिक अध्ययन, जैव प्रौद्योगिकी, नैनो प्रौद्योगिकी, तंत्रिका विज्ञान के अलावा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), 3–डी मशीनिंग, बड़े डेटा विश्लेषण और मशीन लर्निंग की पेशकश पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

शासी निकाय–यूजीसी, एआईसीटीई, एमसीआई, डीसीआई, आईएनसी, आदि जैसे एचई मॉनिटरिंग और कंट्रोलिंग संस्थानों को एचईआई के लिए एकल नियामक के रूप में भारतीय उच्च शिक्षा आयोग (एचईसीआई) के साथ मिला दिया जाएगा।

एन.ए.एसी. और एन.ए.बी. जैसे मौजूदा प्रत्यायन संस्थानों को एक मजबूत राष्ट्रीय प्रत्यायन परिषद (एन.ए.सी.) द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा।

एक अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ए.बी.सी.) की स्थापना की जाएगी जो विभिन्न मान्यता प्राप्त एच.ई.आई. (स्वयं और ओडीएल मोड) से अर्जित सभी पंजीकृत उम्मीदवारों के अकादमिक क्रेडिट को डिजिटल रूप से संग्रहीत करेगा, जिसे कॉलेज या विश्वविद्यालय द्वारा डिग्री प्रदान करते समय ध्यान में रखा जा सकता है।

वर्तमान में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न नामकरण जैसे मानद विश्वविद्यालय, संबद्ध विश्वविद्यालय, केंद्रीय विश्वविद्यालय, संबद्ध तकनीकी विश्वविद्यालय, एकात्मक विश्वविद्यालय, आदि को मानदंडों के अनुसार आवश्यक मानदंडों को पूरा करने के बाद विश्वविद्यालय द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा।

नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल को मजबूत किया जाएगा और विश्वविद्यालयों तक विस्तारित किया जाएगा ताकि योग्यता–आधारित छात्रों की वित्तीय जरूरतों को पूरा किया जा सके। निजी एचईआई को अपने छात्रों को बड़ी संख्या में मुफ्त जहाजों और छात्रवृत्ति की पेशकश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

विश्वविद्यालय स्तर–

1. मौजूदा खंडित एचईआई का दो प्रकार के बहु–विषयक विश्वविद्यालयों (एमयू) और बहु–विषयक स्वायत्त कॉलेजों (एसी) में समेकन।
2. बहुविषयक विश्वविद्यालय दो प्रकार के होंगे जैसे (1) अनुसंधान–गहन विश्वविद्यालय, और (2) शिक्षण–प्रधान विश्वविद्यालय।
3. विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में अनुसंधान के वित्तपोषण के लिए एक राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एनआरएफ) की स्थापना।
4. अनुसंधान को यूजी, पीजी, स्तर में शामिल किया जाएगा और इसमें समग्र और बहु–विषयक शिक्षा

दृष्टिकोण होगा।

सभी एचईआई (1) स्टार्ट–अप इन्क्यूबेशन केंद्र, (2) प्रौद्योगिकी विकास केंद्र, (3) अनुसंधान के सीमावर्ती क्षेत्रों में केंद्र, (4) उद्योग–शैक्षणिक संपर्क

केंद्र, और (5) मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान सहित अंतःविषय अनुसंधान केंद्र।

5. सभी एचईआई (1) स्टार्ट–अप इन्क्यूबेशन केंद्र, (2) प्रौद्योगिकी विकास केंद्र, (3) अनुसंधान के सीमांत क्षेत्रों में केंद्र, (4) उद्योग–शैक्षणिक जुड़ाव केंद्र, और (5) मानविकी और सामाजिक विज्ञान अनुसंधान सहित अंतःविषय अनुसंधान केंद्र।

5. सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में पेशेवर शैक्षणिक और करियर परामर्श केंद्र होंगे, जिसमें सभी छात्रों के लिए परामर्शदाता उपलब्ध होंगे ताकि शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक कल्याण सुनिश्चित किया जा सके।
6. सभी एचईआई विज्ञान, गणित, कविता, भाषा, साहित्य, वाद–विवाद, संगीत के क्षेत्र में आवश्यकतानुसार संकाय और अन्य विशेषज्ञों की सहायता से छात्रों द्वारा आयोजित विषय–केंद्रित क्लबों और गतिविधियों के लिए विकास, समर्थन और निधि प्रदान करेंगे। खेलकूद, आदि।
7. गुणवत्ता के वैश्विक मानक को प्राप्त करने के लिए डिग्री कार्यक्रमों में 40:30:30 अनुपात मॉडल के साथ इन–क्लास शिक्षण, ऑनलाइन शिक्षण घटक और ओडीएल घटक शामिल हो सकते हैं।
8. सभी निजी विश्वविद्यालय अपनी प्रत्यायन स्थिति के आधार पर श्रेणीबद्ध स्वायत्तता के पात्र हैं।
9. सभी निजी विश्वविद्यालयों/स्वायत्त कॉलेजों को अपने वित्तीय लेन–देन में खुलापन बनाए रखना होगा और लेखा प्रणाली में किसी भी तरह की अनियमितता के लिए बी.ओ.जी. जिम्मेदार है। बीओजी में एचईआई के तेजी से विकास का मार्गदर्शन करने के लिए अपने पेशेवर क्षेत्र में प्रतिष्ठित लोगों को शामिल करना चाहिए।
10. विधि षिक्षा प्रदान करने वाले विष्वविद्यालयो/संस्थानों को भविश्य के वकीलों और न्यायाधीषों के लिए अंग्रेजी और राज्य भाषा में द्विभाशी षिक्षा प्रदान करना पसंद करना चाहिए।

चतुर्थ संस्थान स्तर–

1. बहु अनुशासनिक स्वायत्त महाविद्यालय परिसर में 3,000 से अधिक छात्र होंगे। बहु–विषयक बनने की समय सीमा 2030 तक है और 2040 तक 3,000 और अधिक छात्र हैं।
2. प्रत्येक मौजूदा कॉलेज या तो डिग्री देने वाले स्वायत्त कॉलेज के रूप में विकसित होगा या विश्वविद्यालय के एक संविधान कॉलेज में स्थानांतरित हो जाएगा और पूरी तरह से विश्वविद्यालय का हिस्सा बन जाएगा।
3. सभी मौजूदा संबद्ध कॉलेज अंततः निर्धारित मान्यता स्तर में सुधार और सुरक्षित करके संबद्ध विश्वविद्यालय के परामर्श समर्थन के साथ स्वायत्त डिग्री देने वाले कॉलेज विकसित करेंगे।
4. कई निकास विकल्पों के साथ चार साल की बैचलर डिग्री, एक से दो साल की मास्टर डिग्री, बैचलर डिग्री में बिताए गए वर्षों की संख्या के आधार पर क्रमशः चार या तीन, और पीएचडी करने का विकल्प। चार साल के लिए शोध के साथ स्नातक की डिग्री संभव ळें
5. द्वितीय वर्ष में पूर्ण शोध के साथ दो वर्ष की मास्टर डिग्री, चार वर्षीय स्नातक डिग्री धारकों के लिए एक वर्ष की मास्टर डिग्री और पांच वर्ष की एकीकृत स्नातक/मास्टर डिग्री।
6. उच्च शिक्षा संस्थानों को सामान्य शिक्षा के साथ एकीकृत कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि और पशु चिकित्सा विज्ञान में पेशेवरों को तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। कृषि शिक्षा की पेशकश करने वाले उच्च शिक्षा संस्थानों को स्थानीय समुदाय पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और प्रौद्योगिकी ऊष्मायन और प्रसार को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्र में कृषि प्रौद्योगिकी पार्क स्थापित करने में शामिल होना चाहिए।
7. सभी उच्च शिक्षा संस्थानों को अपनी फीस संरचना तय करने में स्वायत्तता है और यदि कोई अधिशेष है तो उसे पारदर्शी लेखा प्रणाली के साथ विस्तार परियोजनाओं में पुनर्निवेश किया जाना चाहिए।
8. सभी निजी उच्च शिक्षा संस्थानों को मेधावी छात्रों के लिए पाठ्यक्रम शुल्क में 20: फ्री–शिप और 30: छात्रवृत्ति प्रदान करनी चाहिए, जो वे किसी दिए गए शैक्षणिक वर्ष के दौरान प्रदान करते हैं और इसे मान्यता प्रक्रिया द्वारा जांचा और पुष्टि की जानी चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभाव का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के तहत किया जा सकता है बड़े पैमाने पर समेकन से गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में मदद मिलेगी।

संस्थागत पुनर्गठन और समेकन का देश में उच्च शिक्षा संस्थानों के मूल्य की मात्रा को लगभग एक तिहाई तक कम करके महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। हालांकि यह ध्यान देने योग्य है कि भारत में प्रति कॉलेज औसत नामांकन वर्तमान में 693 (ए.आई.एस.एच.ई. 18–19, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, केपीएमजी इन इंडिया एनालिसिस) है, जबकि नीति का उद्देश्य 3000 से अधिक नामांकन के साथ उच्च शिक्षा संस्थान बनाना है। यह नई नीति उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए अधिक संख्या में स्वायत्त कॉलेजों पर केंद्रित है। भारत में 1000 से कम स्वायत्त कॉलेज भारत में लगभग 40,000 कॉलेजों में से हमारे मौजूदा हैं। इससे पता चलता है कि भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों में नीति की सीमा में बहुत सारे समेकन और सहयोग होंगे। यह उम्मीद की जाती है कि उपरोक्त कदम के परिणामस्वरूप उच्च शिक्षा संस्थान भारत के 50000 कॉलेजों से 15000 कॉलेजों में आ जाएंगे।

बहु–विषयक शिक्षा पर ध्यान दें– भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली को IIT , IIM और AIIM जैसे उत्कृष्टता के एकल अनुशासनात्मक द्वीपों की विशेषता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम में बड़े बहु–विषयक विश्वविद्यालयों के निर्माण की ओर बढ़ रही है, जिन्हें बहु–विषयक शिक्षा और अनुसंधान विश्वविद्यालय (एम.ई.आर.यू.) कहा जाता है। एम.ई.आर.यू.का निर्माण देश के सभी जिलों और दूरदराज के स्थानों को कवर करते हुए, समाज के सभी क्षेत्रों में विविध क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रदान करेगा। इससे छात्रों को अपनी रुचि के क्षेत्रों के चयन में व्यापक गुंजाइश मिलेगी।

फैकल्टी की कमी और फैकल्टी क्वालिटी में सुधार की जरूरत–शिक्षा का अधिकार अधिनियम 1:30 के बाद वर्तमान संकाय छात्र अनुपात हमारा देश है, इसे 1:20 तक सुधारना चाहिए जिसे स्वस्थ अनुपात माना जाता है। इस संशोधन से सिस्टम में न्यूनतम 500000 नए संकाय सदस्यों की भर्ती होगी। फैकल्टी की कमी को दूर करने के अलावा फैकल्टी की गुणवत्ता पर भी ध्यान देने की जरूरत है। 2022 तक शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पेशेवर मानक (एनपीएसटी) का एक सेट बनाया जाएगा जो

कार्यकाल, निरंतर व्यावसायिक विकास प्रयासों, वेतन, पदोन्नति और अन्य मान्यता सहित शिक्षक कैरियर प्रबंधन के सभी पहलुओं को निर्धारित करेगा। नीति शिक्षकों के लिए प्रदर्शन मानकों को बनाने के बारे में भी बात करती है जिसमें स्पष्ट रूप से उस चरण के लिए आवश्यक विशेषज्ञता और दक्षताओं के विभिन्न स्तरों पर शिक्षक की भूमिका का वर्णन किया गया है।

अनुसंधान गतिविधियों को उत्प्रेरित करना– एनईपी द्वारा प्रस्तावित नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एनआरएफ) गुणवत्ता अनुसंधान की ओर एक समर्पित ध्यान केंद्रित करने की संभावना है, जिसमें अनुसंधान फंडिंग को प्रतिस्पर्धी बनाकर और वित्त पोषण प्रक्रियाओं की दक्षता में सुधार करके अनुसंधान पहलों के वित्तपोषण के लिए अधिक लक्षित दृष्टिकोण शामिल है। छात्रों में उनकी छोटी उम्र से ही अनुसंधान गतिविधियों को आत्मसात किया जाएगा।

ओपन डिस्टेंस लर्निंग (ओडीएल) और ऑनलाइन कार्यक्रमों के माध्यम से पहुंच और इक्विटी में सुधाररू भारत में कुल उच्च शिक्षा नामांकन के लगभग 40 लाख यानी 11 प्रतिशत शिक्षार्थी ओडीएल के माध्यम से हैं। महामारी के मुद्दे से ओडीएल प्रणाली में भी सुधार होता है, और आने वाले वर्षों में इसमें उल्लेखनीय वृद्धि देखने को मिल सकती है जो भारत के सकल नामांकन को दोगुना करने में मदद करेगी।

निष्कर्ष – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक अच्छी नीति है क्योंकि इसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की जरूरतों और 2030 के सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप समग्र लचीला बहु–विषयक बनाना है। एनईपी एक व्यापक अभ्यास का एक उत्पाद है जो 2030 तक 100 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करने का प्रयास करता है। एक अधिक समावेशी एकजुट और उत्पादक राष्ट्र बनाने के उद्देश्य से हाल ही में अनावरण की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मानव मंत्रालय द्वारा एक महत्वपूर्ण सुधार आया है। संसाधन विकास एमएचआरडी। नीति की मंशा कई मायनों में आदर्श प्रतीत होती है लेकिन यह कार्यान्वयन है जहां सफलता की कुंजी है। एनईपी 2020 के तहत, सुधारों के फोकस क्षेत्र छात्रों के बीच 21 वीं सदी के कौशल को विकसित करना चाहते हैं, जिसमें महत्वपूर्ण सोच समस्या समाधान रचनात्मकता और डिजिटल

साक्षरता शामिल है। तकनीकी प्रगति के रूप में तेजी से वैश्वीकरण और अभूतपूर्व विकास जैसे कि कोविड –19 महामारी – काम के भविष्य को बदल देते हैं, मौजूदा शिक्षा मॉडल को वैश्विक अर्थव्यवस्था की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची–

1. https://www-researchgate-net/publication/343769198_Analysis_of_the_Indian_National_Educatio n_Policy_2020_towards_Achieving_its_Objectives
2. https://wwwresearchgatenet/publication/346654722_Impact_of_New_Education_Policy_2020_o n_Higher_Education
3. https://www-education-gov-in › ...पीडीएफ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार
4. https://www-google-com/amp/s/www-hindustantimescom/education/new&education&policy–2020–T इलाइट्स–की–टेकअवे–ऑफ–नेप–टू–मेक–इंडिया–ए–वैश्विक–ज्ञान–महाशक्ति/-html
5. https://niepid-nic-in › nep_2020PDF राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 –NIEPID
6. https://assets-kpmg › 2020/08PDF:राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव और उच्च शिक्षा के अवसर।
7. https://www-ugc-ac-in 5294...पीडीएफ एनईपी 2020 की मुख्य विशेषताएं।

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade

Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur

(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
	About the College	v
	संदेश	vii
	संदेश	ix
	Forward	x
	Preface	xi
1	उच्च शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव	1
2	नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के साथ ही स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के लिए चुनौतियां	12
32	बालकों के संरक्षण में शिक्षकों की भूमिका विशेषतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में	20
4	Opinion of the students of higher education about new education policy	32
5	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उसकी चुनौतियाँ	40
6	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा को बदलना एक बड़ी चुनौती	45
7	वैदिक शिक्षा प्रणाली : राष्ट्र की अंखण्डता संस्कृति हेतु आवश्यक कड़ी	50
8	Physical Education in India and Challenges in the Implementation of New Education Policy 2020	58
9	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं नई चुनौतियां	66
10	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यन्वयन और उसकी चुनौतियाँ"	70
11	"Challenges in Teacher Education in the context of NEP, Higher Education and teaching skills for NEP 2020"	78
12	Challenges of Physical education and Sports Technology in India	88
	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 के अनुसार विद्यालयों	95

नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के साथ ही स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के लिए चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार जैन
यू जी सी नेट, पी. एच. डी. शिक्षा शास्त्र विभागाध्यक्ष
बी. एड. भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा ललितपुर

सारांश – आज, वर्तमान में हमारे देश में इस आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है कि शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव की आवश्कता है इसी को ध्यान में रखते हुये तत्कालीन भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति तैयार करने का प्रयास सन् 2017 में प्रारम्भ किया और तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावेडकर ने इसरो के भूतपूर्व चेयर मैन श्री के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया एवं उन्हें यह दायत्वि सौपा गया । स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के संचालन के लिए वित्त की व्यवस्था स्वयं करना होता है जबकि शिक्षकों की नियुक्ति विश्वविद्यालय द्वारा की जाती है। नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पूर्व बी0ए0,बी0काम0,बी0एस0सी0, कोर्स वार्षिक होते थे परन्तु नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात इन सभी कोर्स को सेमेस्टर कर दिया गया है। नई शिक्षा नीति में स्नातक कोर्स को 4 वर्षीय करने का प्रावधान है एवं शिक्षक प्रशिक्षण कोर्स जैसे बी0 एड0 भी 4 वर्षीय होने जा रहा है 2030 तक सम्पूर्ण देश में बी0एड0 4 वर्षीय हो जायेगा। नई शिक्षा नीति में शिक्षा पर व्यय जी0डी0पी0 का 6 प्रतिशत करने का प्रावधान रखा गया है । पृथक शोध विश्वविद्यालय स्थापित करने का एवं शोध के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए परास्नातक के बाद सीधे शोध में प्रवेश के लिए अवसर प्रदान करने की बात भी कही गयी है। उपरोक्त व्यवधानों को दूर कर लिया जाये तो निश्चत रुप से नई शिक्षा नीति 2020 आने वाले भविष्य के लिए नागरिक तैयार करेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

मुख्य संकेतक – स्ववित्त पोषित महाविद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।

प्रस्तावना–बदलते हुये दुनिया के परिवेश के साथ हमें भी बदलने की आवश्यकता है । किसी भी देश में परिवर्तन लाने के लिये देश की शिक्षा प्रणाली में बदलाव की आवश्यकता होती है । आज, वर्तमान में हमारे देश में इस आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुये तत्कालीन भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति तैयार करने का प्रयास सन 2017 में प्रारम्भ किया और तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावेडकर ने इसरो के भूतपूर्व चेयर मैन श्री के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया एवं उन्हें यह दायत्वि सौपा गया। नई शिक्षा नीति के ड्राफ्ट तैयार करने का इस समिति में अध्यक्ष के अतिरिक्त 10 सदस्य और सम्मिलित किये गये जो निम्नलिखित हैं –

1. बसुधा कामत,पूर्व वाइस चांसलर एस.एन.डी.टी. वूमेन युनीवसिटी मुम्बई,।
2. केजी. एलेफोन्स,।
3. मंजुल भार्गव संस्थापक प्रिसिटोन विश्वविद्यालय प्रिंसटोन यू.एस.ए., ।
4. राम शंकर कुरील भूतपूर्व संस्थापक एप कुल सचिव बाबा साहिब अंवेडकर सोसल साइंस विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश,।
5. टी.वी. कहीयानी कुल सचिव, इंदिरा गांधी ट्राइबल विश्वविद्यालय अमरकंटक मध्य प्रदेश ,।
6. कृष्णा मोहन त्रिपाठी डायरेक्टर ऑफ एजूकेशन एण्ड भूतपूर्व चेयरमेन उत्तर प्रदेश, ।
7. मजहर आसिफ प्रवक्ता, Cent of Persion and cantral asian studier school of Language Literatureand culuse syudier JNU New Delhi.
8. एम.के श्रीधर भूतपूर्व सचिव सदस्य कर्नाटका नालेज कमीशन बैगलूर कर्नाटक,।
9. राजेन्द्र प्रताव गुप्ता भूतपूर्व सलाकार स्वास्थय एवं परिवार कल्याण मंत्री भारत सरकार, ।
10. शकीला टी.सम्सू (OSD (NEP) उच्च शिक्षा मानव विकास मंत्रालय भारत सरकर नई दिल्ली ।

इन चुने हुये सदस्यों ने लगन एवं अपने दायित्वों की पूर्ति करते हुये नई शिक्षा नीति का ड्राफ्ट 2019 तक तैयार कर दिया। 29 जुलाई 2020 को

कैबिनेट से मंजूरी मिल गई । 2021 से इसे लागू करने का निर्णय लिया गया एवं 2030 तक पूर्ण रुप से सभी सुधारों को लागू करने की समय सीमा तय की गयी। आने वाला भविष्य ही बतलायेगा कि हम इसको लागू करने में कितने सफल हुए। भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले देश में नई शिक्षा नीति हमें हमारे गौरवशाली इतिहास से जोडेगी एवं बदलते आधुनिक परिवेश को अपने में समाहित करने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विजन– " राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक भारत केन्द्रित शिक्षा प्रणाली की कल्पना करती है जो सभी को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करके हमारे राष्ट्र को एक न्याय संगत और जीवंत ज्ञान समाज में लगातार बदलने में योगदान देती है। छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में बल्कि व्यवहार, बुद्वि ,और कार्यो में भी और साथ ही ज्ञान , कौशल , मूल्यों और सोच में भी होना चाहिए जो मानवाधिकारों , स्थायी विकास और जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्व हो, ताकि वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सकें ।

स्ववित्त पोषित महाविद्यालय – स्ववित्त शिक्षण संस्थान का उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बडा योगदान है सम्पूर्ण भारत में शिक्षा के प्रसार में श्रेष्ठ भूमिका अदा कर रहे है स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थान वे संस्थान है जिन्हे बेहतर शिक्षा के संचालन के लिए सरकार से कोई वित्तीय सहायता प्राप्त नही होती है। इन शिक्षण संस्थानों के लिए कक्षा ,फर्नीचर ,प्रयोगशाला एवं शिक्षकों का वेतन भी स्वयं ही देना होता है । इनके आय का मुख्य साधन केवल विद्यार्थियों से प्राप्त होने वाला शिक्षण शुल्क है। स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थानों में सरकारी शिक्षण संस्थानों की तुलना में फीस अधिक होती है।

स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात चुनौतियां –

स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के संचालन के लिए वित्त की व्यवस्था स्वयं करना होता है जबकि शिक्षकों की नियुक्ति विश्वविद्यालय द्वारा की जाती है। नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पूर्व बी0ए0,बी0काम0,बी0एस0सी0, पाठ्यक्रम वार्षिक होते थे परन्तु नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात इन सभी कोर्स को सेमेस्टर कर दिया गया है । नई शिक्षा नीति में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

स्नातक पाठ्यक्रम को 4 वर्षीय करने का प्रावधान हैं एवं शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जैसे बी0एड0 भी 4 वर्षीय होने जा रहा है 2030 तक सम्पूर्ण देश में बी0एड0 4 वर्षीय हो जायेगा। ये व्यवस्था लागू होने के पश्चात स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थान को निम्न चुनौतियों का सामना करना पडा रहा है –

- प्रवेश प्रक्रिया
- परीक्षा प्रक्रिया
- वित्त या फण्ड्स
- मेजर एवं माइनर विषय
- आंतरिक मूल्यांकन
- अतिरिक्त विषय के लिए शिक्षकों की उपलब्धता
- इंफ्रास्ट्रचर
- पुस्तकों की उपलब्धता
- नैक मूल्याकंन अनिवार्य

1. **प्रवेश प्रक्रिया –** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में 1985 के पश्चात आई है इस नीति में उन विद्यार्थियों का भी ध्यान रखा गया है जो अपनी शिक्षा पूरी नही कर पाते और उन्हे बीच में ही डिग्री कोर्स छोडना पडता है इस कारण उनके द्वारा 1 या 2 वर्ष का अध्ययन काल व्यर्थ हो जाता है।इस शिक्षा नीति में इन विद्यार्थियों के लिए नया प्रावधान किया गया है 1 वर्ष बाद कोई विद्यार्थी डिग्री कोर्स छोडता है तो उसे महाविद्यालय सर्टीफिकेट प्रदान करेगा और 2 वर्ष पूर्ण होने के बाद डिप्लोमा प्रदान करेगा । कोर्स पूर्ण होने पर डिग्री प्रदान की जायेगी। इस शिक्षा नीति में विद्यार्थियों के ग्रेड टांस्फर का भी प्रावधान है । यदि कोई विद्यार्थियों किसी वर्ष भी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय परिवर्तित कर सकता है। इसे प्रकार के प्रवेश प्रक्रिया में स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थानों को हमेशा विद्यार्थियों के महाविद्यालय छोडकर दूसरे महाविद्यालयों में स्थान्तारण का भय होगा । एवं उन विद्यार्थियों के लीविंग सर्टीफिकेट एवं अन्य पत्रों के देखरेख करने और उनके ग्रेड स्थान्तरण के लिए टेक्निकल स्टाफ की आवश्कता होगी। प्रवेश प्रक्रिया विश्वविद्यालय द्वारा संचालित होती है और मेरिट के आधार पर प्रवेश दिया जाता है जिस कारण प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण

होने में अगस्त तक या और अधिक समय लगता है जिस कारण सही समय पर सेमेस्टर कक्षाएं और परीक्षाओं के संचालन में बहुत परेशानी आ रही है।

2. परीक्षा प्रक्रिया :– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 में बी0 ए0, बी0 एस0 सी0, बी0 काम0 जैसे स्नातक कोर्स सेमेस्टर प्रणाली के अंतगर्त लिए गये है । अतः इनकी विश्वविद्यालय के द्वारा प्रत्येक सेमेस्टर में परीक्षा ली जायेगी। इसके अतिरिक्त प्रत्येक सेमेस्टर में आंतरिक मूल्यांकन भी होता है। कई विश्वविद्यालयों ने सेमेस्टर परीक्षा का प्रारुप बहुविकल्पीय किया है। प्रश्न पत्र में 50 प्रश्न आयेगे जिनमें से 35 प्रश्न ही करना है । परन्तु महाविद्यालयों मेविद्यार्थियों को बहुविकल्पीय विधि को आधार बनाकर शिक्षण कार्य नही कराया जाता है इस कारण से विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम संतोषजनक नही आ रहा है।

3. वित्त या फण्ड – स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों को सरकार के द्वारा किसी भी प्रकार की वित्तीय सहायता प्राप्त नही होती है। मुख्य रुप से उन्हे वित्त केवल विद्यार्थियों के द्वारा जमा शिक्षण शुल्क से अथवा दान के माध्यम से होता है । नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार विद्यार्थियों में विविध कौशल विकास के लिए अलग अलग सेमेस्टर में माइनर कोर्स के रुप में विविध विषयों को जोडा गया है जिनके अध्यापन के लिए अतिरिक्त वित्त की आवशकता होगी जो स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थान अपने को कर पाने मे असहज महसूस कर रहे है। सामान्य पराम्परागत विषय जैसे – बी0 ए0 बी0 काम0, बी0 एस0 सी0 कोर्स संचालित करने वाले महाविद्यालयों मे छात्राकंन भी कम है जिस कारण इन विषयों के शिक्षण कार्य मे दिक्कत आ रही है इसी कारण इस सेमेस्टर के परीक्षा परीणाम को देखा जाए तो सर्वाधिक विद्यार्थी इन्ही विषयों में अनुत्तीर्ण हुए है।

4. मेजर एवं माइनर विषय :– नई शिक्षा नीति 2020 के अंतगर्त बी0 ए0, बी0 काम0, बी0 एस0 सी0 कोर्स में विषयों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है 1.मेजर विषय और 2.माइनर विषय ।

1. मेजर विषय – प्रत्येक संकाय में तीन मेजर विषयों का चयन करना होता है जैसे बी0 एस0 सी0 में गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान,

जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान में से तीन विषय का चयन मेजर विषयों के रुप में किया जाता है।

2. **माइनर विषय** – मेजर विषय के अतिरिक्त अलग अलग सेमेस्टर में दो विषय के रुप मे एक से चार सेमेस्टर तक माइनर विषयों का चयन किया जाता है। जिसमें डेक्सटाप प्रिटिंग,स्वास्थ्य एवं योगा, टेली, एन.सी.सी., फूड्स एण्ड न्यूट्रीशन, फस्टएड एण्ड हेल्थ, ह्यूमन वेल्यू एण्ड इन्वायरोमेंट स्टडी, आदि विषय सेमेस्टर के अनुसार विद्यार्थियों इन विषयो का चयन करते है। परन्तु महाविद्यालयों मे इनके अध्यापन के लिए सुमूचित व्यवस्था नही है । पर्याप्त मात्रा में कम्प्यूटर्स नही है विश्वविद्यालय द्वारा कम्प्यूटर अध्यापक या इन्सट्रक्टर रखने के कोई आदेश नही है। नगर में संचालित इस प्रकार के गैर सरकारी एवं सरकारी लोगों के पास मुफ्त में सेवा प्रदान करने को कोई तैयार नही है। इन विषयों को लेकर विद्यार्थियों और शिक्षकों में बहुत भम्र की स्थिति है।

5. **आंतरिक मूल्यांकन** – आंतरिक मूल्यांकन 25 अंक का प्रत्येक सेमेस्टर मे महाविद्यालयों के हाथ में है जिनमें अंक प्रदान करने का अधिकार विषय शिक्षकों को दिया गया है परन्तु पद्वति का निर्धारण विश्वविद्यालयो के द्वारा किया गया है। शिक्षक स्वयं आधार बनाकर उनका निर्धारण नही कर सकता है।

6. **अतिरिक्त विषय के लिए शिक्षकों की उपलब्धता** – नई शिक्षा नीति में अतिरिक्त विषयों के अध्ययन का अवसर प्रदान किया गया है परन्तु इन विषयों के विषय विशेषज्ञ उपलब्ध नही होने के कारण इन विषयों के अध्यापन में अधिक परेशानी आ रही है। माइनर विषयों के लिए अन्य महाविद्यालयो से या किन्ही अन्य संस्थानों से सहयोग की आवश्यकता होगी । इसमें भी धन के आभाव में व्यवस्था हो पाना संभव नही हो पा रहा है। स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थानों में वेतन भी शिक्षकों की योग्यतानुसार प्रदान नही किया जा रहा है इस कारण शिक्षक अधिक समय तक एक महाविद्यालय में नही रहते है। चूॅकि शिक्षकों की नियुक्ति विश्वविद्यालय द्वारा की जाती है जिनकी शैक्षिक योग्यता यू0जी0सी0 नेट या पीएच0 डी0 आवश्यक है जिस कारण शिक्षकों की उपलब्धता आसान नही होती ।

7. इंफ्रास्ट्रचर – नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार महाविद्यालयों को मानक अनुसार इमारत ,प्रयोगशालायें, खेल का मैदान, आदि को व्यवस्थित करना होगा एवं विद्यार्थियों के कौशल विकास हेतु अन्य साधन भी उपलब्ध कराने होगें । इस कारण से इन्हे अपने इंफ्रास्ट्रचर में परिवर्तन की आवश्यकता संभव होना प्रतीत होता है जो स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थानों के लिए संभव प्रतीत होता नही लगता।

8. नवीन पुस्तकों की उपलब्धता – नई शिक्षा नीति में सभी विश्वविद्यालयों के लिए समान पाठ्यक्रम अपनाने की कोशिश की गई है इस कारण पाठ्य पुस्तकों में बदलाव किया गया है महाविद्यालय के पुस्तकालय में रखी पुस्तकें अब काम में नही आ रही है अब सेमेस्टर पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तकों की आवश्यकता है । नये पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तके अभी बाजार में भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नही है । इस कारण विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य में व्यवधान हो रहा है।

9. नैक मूल्याकंन अनिवार्य – यू0 जी0 सी0 ने नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सभी शिक्षण संस्थानों का 2023 तक नैक मूल्याकंन कराना अनिवार्य कर दिया है । नैक मूल्याकंन नही होने की स्थिति में महाविद्यालयों की मान्यता रद्द करने का प्रवाधान है । स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थान नैक कराने से बच रहे है। नैक के मानक के अनुसार उनके यहॉ शिक्षक एवं इंफ्रास्ट्रचर नही है ।

सुझाव – नई शिक्षा नीति 2020 के अंर्तगत शिक्षा पर व्यय 6 प्रतिशत कुल जी0 डी0 पी0 का निर्धारित किया गया है। यदि स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थान जिन्होने नैक द्वारा मूल्याकंन कर लिया है "ए" ग्रेड का रैंक प्राप्त किया है वित्तीय सहायता प्रदान करना चाहिए। जिससे वे अपने शिक्षा प्रदान करने के कार्य को और बेहतर कर सके।

उपसंहार – निश्चत ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आगामी भविष्य को ध्यान में रखकर बनाई गई है परन्तु वर्तमान समय में उसका पूर्णता अनुपालन करना संभव प्रतीत नही हो रहा है। धरातल पर बहुत अधिक कार्य की आवश्यकता है । नई शिक्षा नीति में शिक्षा पर व्यय जी0डी0पी0 का 6 प्रतिशत करने का प्रावधान रखा गया है । पृथक शोध विश्वविद्यालय स्थापित करने का एवं शोध के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए

परास्नातक के बाद सीधे शोध में प्रवेश के लिए अवसर प्रदान करने की बात भी कही गयी है। उपरोक्त व्यवधानों को दूर कर लिया जाये तो निश्चत रुप से नई शिक्षा नीति 2020 आने वाले भविष्य के लिए नागरिक तैयार करेगी।

सन्दर्भ सूची –

1. MHRD India द्वारा प्रकाशित गजट। www.mhrd.gov.in
2. स्वतत्रंता के पश्चात भारत में गठित शिक्षा आयोग – ड़ा0 रोहित कुमार HSRA Publication 2020
3. Google.co.in

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade

Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur

(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
	About the College	v
	संदेश	vii
	संदेश	ix
	Forward	x
	Preface	xi
1	उच्च शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव	1
2	नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के साथ ही स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के लिए चुनौतियां	12
32	बालकों के संरक्षण में शिक्षकों की भूमिका विशेषतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में	20
4	Opinion of the students of higher education about new education policy	32
5	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उसकी चुनौतियाँ	40
6	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा को बदलना एक बड़ी चुनौती	45
7	वैदिक शिक्षा प्रणाली : राष्ट्र की अंखण्डता संस्कृति हेतु आवश्यक कड़ी	50
8	Physical Education in India and Challenges in the Implementation of New Education Policy 2020	58
9	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं नई चुनौतियां	66
10	''राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यन्वयन और उसकी चुनौतियाँ''	70
11	"Challenges in Teacher Education in the context of NEP, Higher Education and teaching skills for NEP 2020"	78
12	Challenges of Physical education and Sports Technology in India	88
	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 के अनुसार विद्यालयों	95

Opinion of the students of higher education about new education policy

Vinod Kumar Baudha
Asst. Professor (Physical Education)
Bhagwan Aadinath College of Education
& Brajendra Kumar Yadav
Asst. Prof. (Education Department)
Bhagwan Aadinath College of Education

Abstract

The objective of this research is to find out the opinion of students about the new education policy. Our country has been under the control of a strict education system, for almost the past 34 years, which has hindered the growth of many renowned persons in the society. India, being a growing liberal country for educational reformation, at present near about 845 universities and approximately 40,000 higher education institutions (HIEs), showing the overall high fragmentation and many small sized HEIs in the country which are affiliated by these universities. The researcher obtained the primary source of data by conducting an empirical study on seeking responses from the college going students based on a questionnaire. Total (N=70) subjects has been chosen by using convenient sampling methods. The students which were taken for the study were from rural background of Madhyapradesh. Subjects were given self made questionnaire. Data were collected under supervision. Once data were collected and put in SPSS software also results were shown in graphical representation. Four draft questionnaires were distributed to students. .Finallyquestionnaire was finalized with the approval of mentors. The required data collected through questionnaire

usedLIKERT scale. Maximum people hope that new education policy will bring the changes in education system and students will be benefitted by that and they suggested that teacher should be trained about new education policy.

Key Word: Education, Higher Education, NEP, Questionnaire,

Introduction

Our country has been under the control of a strict education system, for almost the past 34 years, which has hindered the growth of many renowned persons in the society. In a momentous shift from the 1986 policy, which strapped for a 10+2 structure of school education, the new NEP-2020 pitches for a "5+3+3+4" scheme corresponding to the age sets 3-8 years (foundational phase), 8-11 (preparatory), 11-14 (middle), and 14-18 (secondary)(National Education policy 2020. To bring the changes in education practical based learning has been implemented (Gopal, 2021).The objective of this research is to find out the openion of students about the new education policy. At the university/HEI level, no single stream/discipline university shall remain in existence but transformed into multidisciplinary, holistic delivery systems (Sreeraman Aithlal, 2020).The Australian education policy as a case of global educational reform activity covering range of points which exemplifies aspects of current assemblage of global education reform activity (Ball, 2019). India, being a growing liberal country for educational reformation, at present near about 845 universities and approximately 40,000 higher education institutions (HIEs), showing the overall high fragmentation and many small sized HEIs in the country which are affiliated by these universities (B.Venkateshwarlu, 2020). As per NEP-2020, the first 10 years is the implementation period and the next 10 years is the operational period. (National Education Policy 2020).

Methodology:

Research Design

The researcher obtained the primary source of data by conducting an empirical study on seeking responses from the college going students based on a questionnaire and also relied on secondary sources of data such as Journals, books, e-sources, articles and newspapers. The research method followed in this research is empirical research.

Participants:

Total (N=70) subjects has been chosen by using convenient sampling methods. The students which were taken for the study were from rural background of Uttar Pradesh.

Data collection:

Subjects were given self made questionnaire. Data were collected under supervision. Once data were collected and put in SPSS software also results were shown in graphical representation. Four draft Questionnaires were distributed to students. Finally questionnaire was finalized with the approval of mentors. The required data collected through questionnaire used Self made. There spondent was ensured that all the information would be kept confidential. Questions were translated in Hindi language so that it can be understood by everyone.

Results:

Table 1" you are aware of the New Education Policy (NEP) of 2020"

Agree		Undecided		Disagree	
Freq	Percentage	freq	Percentage	Freq	Percentage
39	55.71	14	20	17	24.28

From the above table it is evident that 55.71 percent of respondents agree with opinion that they are aware about New

Education Policy. Whereas 24.8 percentages of people are disagreeing with same opinion.17 percentage of respondents have not expressed any opinion.

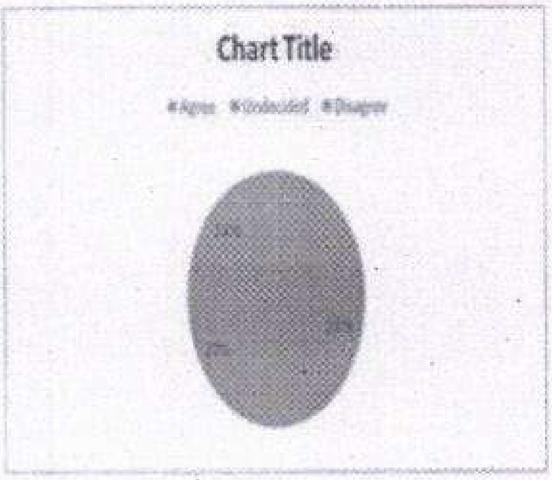

Figure 1: They are aware of the New Education Policy (NEP) of 2020"

Table 2 "You agree with the new changes will come after implementation of National Education Policy"

Agree		Undecided	Disagree		
Frequency	Percentage	frequency	Percentage	Frequency	Percentage
54	77.14	4	5.71	12	17.14

From the above table it is evident that 77.14 percent of respondents agree with opinion that "they are agree with the new changes will come after implementation of National Education Policy" Whereas 17.14 percentages of people are disagreeing with same opinion.5.71 percentage of respondents have not expressed any opinion.

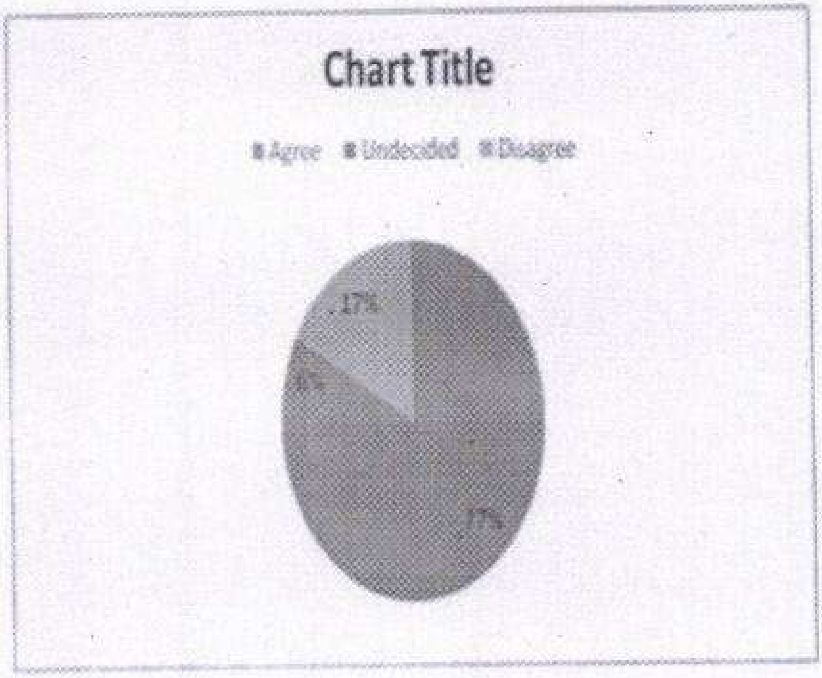

Figure 2 Agree with the new changes will come after implementation of National Education Policy

Table 3"it is easy to bring about sudden changes in the educational level without adequate trained staff and resources"

Agree		Undecided		Disagree	
Frequency	Percentage	frequency	Percentage	Frequency	Percentage
20	28.57	3	4.28	47	67.14

From the above table it is evident that 28.57 percent of respondents agree with opinion that "it is easy to bring about sudden changes in the educational level without adequate trained staff and resources" Whereas 67.14 percentages of people are disagreeing with same opinion 4.28 percentage of respondents have not expressed any opinion.

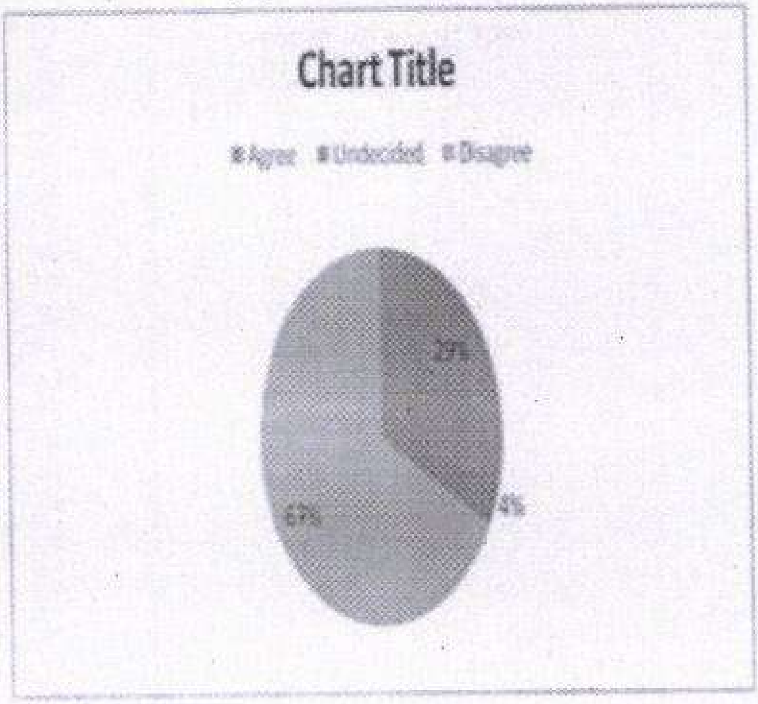

Agree		Undecidd		Disagree	
Frequency	Percentage	frequency	Percentage	Frequency	Percentage
51.	72.85	11	15.71	18	25.71

From the above table it is evident that 72.85 percent of respondents agree with opinion that "This New education policy will bring new changes in education could bring out many practical implications and challenges" Whereas 25.71 percentages of people are disagreeing with same opinion 15.71 percentage of respondents have not expressed any opinion.

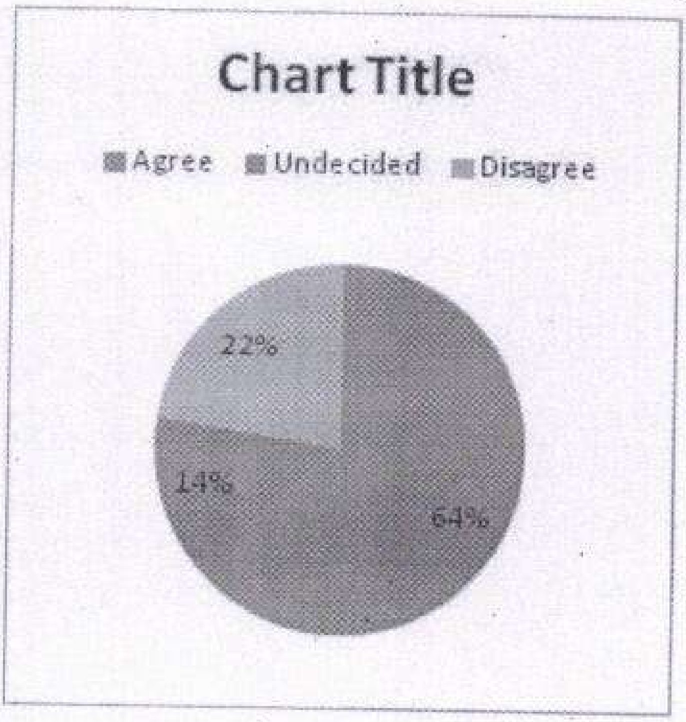

Figure 4 "This New education policy will bring new changes in education could bring out many practical implications and challenges"

Discussions and conclusions:

In spite of the limitations imposed by slow and limited growth of education, education has become one of the influential instruments of social change. It has led to the mobilization of people's aspirations for development and change. Maximum subjects agreed that they are aware of New Education policy as it was advertised through different communication media various website, school education portal and higher education Sites etc. Only a few students agreed that new education policy will bring changes without sufficient trained staff and resources. Most of the students hope that new education will bring the changes in society and education system. Maximum students also hope that students can overcome many challenges and they will benefitted by practical implementation.

References

- Albirini, A. (2006). Teachers' attitudes toward information and communication technologies: The case of Syrian EFL teachers. Computers & Education, 47(4), 373-398.
- Arthur-Mensah, N. (2020). Bridging the industry–education skills gap for human resource development.*Ind. Commer.Train.*,*52*, 93–103
- B.Venkateshwarlu. (2020). A critical study of nep 2020: issues, approaches, challenges, oppertunities and criticism. *internationaljournalof multidisciplinaryeducationalresearch* ,10(2) 191-196.
- Ball, S. J. (2019). Australian education policy – a case of global. *Journal of education policy* ,34(6), 747.
- Brosnan, T. (2001).Teaching Using ICT. University of London: Institute of Education.
- Gopal, K. N. (2021). Public Opinion on The New Education Policy 2020. *Journals educators, teachers and trainner* ,13(1), 183-192.
- Sreeraman Aithlal, S. A. (2020). Analysis of the Indian National Education Policy 2020 towards Achieving its Objectives. *International Journals of mangement and technology and social sciences(IJMTS)* ,5(2), 19-41.

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade
Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur
(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0

Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
	About the College	v
	संदेश	vii
	संदेश	ix
	Forward	x
	Preface	xi
1	उच्च शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव	1
2	नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के साथ ही स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के लिए चुनौतियां	12
32	बालकों के संरक्षण में शिक्षकों की भूमिका विशेषतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में	20
4	Opinion of the students of higher education about new education policy	32
5	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उसकी चुनौतियाँ	40
6	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा को बदलना एक बड़ी चुनौती	45
7	वैदिक शिक्षा प्रणाली : राष्ट्र की अंखण्डता संस्कृति हेतु आवश्यक कड़ी	50
8	Physical Education in India and Challenges in the Implementation of New Education Policy 2020	58
9	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं नई चुनौतियां	66
10	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यन्वयन और उसकी चुनौतियाँ"	70
11	"Challenges in Teacher Education in the context of NEP, Higher Education and teaching skills for NEP 2020"	78
12	Challenges of Physical education and Sports Technology in India	88
	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 के अनुसार विद्यालयों	95

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उसकी चुनौतियाँ

श्रीमती विनीता जैन प्रवक्ता
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा, ललितपुर (उ.प्र.)
रविप्रकाश यू0जी0सी0नेट (शिक्षाशास्त्र)
सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन,महर्रा ललितपुर

विश्व में दो प्रकार की विचार धाराएँ चल रही है। एक विचार धारा व्यक्ति को महत्व देती है और दूसरी विचार धारा समूह को महत्व देने में तत्पर है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने शिक्षा दर्शन में एक तीसरी विचार धारा को प्रतिपादित किया। उन्होंने लिखा जब तक व्यक्ति में विवेक जागृत न हो जाये तब उसे निरंकुश नही छोड़ा जाना चाहिए। इस विवेक को जागृत करने के लिए ही शिक्षा की अनिवार्यता को वे महत्वपूर्ण मानते है। उनकी दृष्टि में शिक्षा मानव जीवन का प्रथम मजबूत स्तंभ है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपनी चहुँदिश उत्थान कर सकता है। वेद सूत्र 'सा विद्या या विमुक्तये'[13] अर्थात शिक्षा या विद्या मनुष्य को सभी तरह के बन्धनों से मुक्त करती है। हर तरह की संकीर्णताओं या रूढ़ियों या सड़ी–गली परम्पराओं से ऐसा कह सकते है कि स्वार्थो से ऊपर उठाती है। ऐसी स्थिति में वह मनुष्य महापुरूष की श्रेणी में आ जाता है। शिक्षा शास्त्रीयों के दर्शनों का सार तत्व है यह कि मनुष्य सौ हाथों से श्रम पूर्वक कमायें और हजार हाथों से उसका समुचित वितरण करें। उसे संग्रहीत धन का त्याग पूर्वक भोग करना चाहिए क्योंकि अकेला खाने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से अधम श्रेणी में ही आता है। यह शिक्षा व्यक्ति में धर्म, दया और मानवीय भावों को जगा कर उसे उदार प्रवृत्ति का बनाती है भारतीय संस्कृति धर्म की भावनाओं से ओतप्रोत है। हमारे जीवन में एक व्यापक दृष्टिकोण निवास करता है जो सभी के हित के लिए कर्मशील होकर अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। शिक्षा का मानव जीवन में विशेष महत्व है।

13

मनुष्य चारों तरफ से सीखता है। काल से सीखता है, अनुभव से सीखता है यह शिक्षा ही है। बिना शिक्षा के भी यदि मनुष्य में उदार भावनायें विकसित है तब भी वह शिक्षित ही माना जायेगा। यदि शिक्षित होकर भी उसके भीतर विसंगतियाँ, अराजकताएँ या अनाचार जैसे कुकृत्य बसे है तो वह दुनिया का निकृष्टतम प्राणी ही कहा जायेगा क्योंकि इनसे समस्त प्रगति अवरूद्ध होती है। इसीलिए शिक्षा मानव की आधारशिला घोषित की गई है। शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का स्वाभाविक और सर्वागींण प्रगतिशील विकास है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक एवं बौद्धिक विकास संभव है। ऐसा ज़रूरी है कि हमें जीने के लिए वायु की आवश्यकता है, पानी की आवश्यकता है, प्रकृति के सुरम्य पर्यावरण की जरूरत है। ऐसे ही मनुष्य को अपनी उन्नति और सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षा के उन आधारभूत तत्वों की बेहद आवश्यकता है जो सही मायनों में उसे शिक्षित कहते है।

कबीर ने कहा है–'सांच बराबर तप नही' यानी यह तप ही सही अर्थो में हमारे शैक्षिक संघर्ष का सुपरिणाम है। हमें पशुता से अलग कर एक श्रेष्ठ मानव की श्रेणी में यह विवेक शिक्षा ही खड़ा करती है। भारतीय विचारकों ने शिक्षा को ज्ञान के बराबरी पर रखा है। अज्ञान का अर्थ सिर्फ पोथियों को पढ़ना ही नही उनके सार तत्व और रस तत्व को जी कर सम्पूर्ण जगती को जिलाना भी है। अनुभव, कल्पना और अभ्यास हमारे ज्ञान को पूर्णतः देते है। हमारे व्यक्तित्व को ऊर्ध्वमुखी बनाते है। शब्द साधना और अर्थ साधना ही ज्ञान का लक्ष्य है। हम अंधेरे में जुगनू के प्रकाश में भी राह खोज सकते है लेकिन ज्ञान के प्रकाश में हम स्वतः स्फूर्त हो, सघन तिविर को पार कर मंजिल प्राप्त कर सकते है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के यहीं अभीष्ट भी है। कहते है कि विशाल मंजिल को प्राप्त करने के लिए हमें चलना पड़ता है और चलते–चलते अनेक बाधक तत्वों से जूझना पड़ता है। साधक के समक्ष ये चुनौतियाँ ही उसे अपने पथ पर अग्रसर होने के लिए बार–बार प्रेरित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख आयामों में सबका साथ, सब का विकास आत्म निर्भर भारत, समय मूल्यवान है। उसका उचित उपयोग और पूर्व से नियोजित अनावश्यक नियमों में सद्पयोगी परिवर्तन रोजगार की दृष्टि में हस्त कौशल विकास, व्यक्तित्व विकास, आत्म विकास जैसे सुगम साधन

दिये गये है लेकिन इनको प्राप्त करने में हमें जो त्याग, लगन, श्रम, निष्ठा, ईमान का परिचय देना होगा वह ही हमें इस शिक्षा नीति को सफल बनाने में मदद करेगी। शिक्षा के उद्देश्यों में चाहे वह स्त्री–पुरूष समानता हो, धार्मिक या व्यवसायिक और जनतातंत्रिक, एकात्मवादी, जीवनोपयोगी, होना जरूरी है। अगर हम सारांश में कहे तो गुरूकुली पद्धति इसका श्रेष्ठ आधार है।

गोपाल कृष्ण गोखले ने निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की बात कही थी। इसके लिए उचित संसाधनों की नितांत आवश्यकता पूर्ण होनी चाहिए। बाल शिक्षा पर जब तक हम अधिकार रूप में या अनिवार्य रूप में ध्यान नही देंगे तब तक हमारी उच्च शिक्षा का कोई अर्थ नही रह जायेगा। आज हम डिग्रियों के माध्यम से कैरियर तो चुन पा रहे है लेकिन हमारे कैरेक्टर पर घुन लग रहा है। भारतीय सरकार को आरम्भिक शिक्षा चाहे वह बालक की हो या बालिका की। समान रूप से योजनाबद्ध तरीकों से कार्य मूर्त रूप देना होगा। सर्व शिक्षा अभियान हो या सार्वभौमिकीकरण में गुणवत्ता आवश्यक है। भारत एक विशाल देश है यहाँ अनेक जाति, धर्म, भाषा आदि को मानने वाले लोग हैं जिनमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, अल्प संख्यक वर्ग, स्वर्ण वर्ग जाति आदि के लिए शिक्षा या रोजगार में अलग–अलग विभक्तिकरण है जो एक तनावपूर्ण संघर्ष को जन्म देता है। इसके कारण शिक्षा कानून के मापदंडों से बहुत दूर है। यानी शिक्षा का अधिकार कानून के क्रियान्वयन में एक बड़ी चुनौती अर्थ (वित्त) की है जो परस्पर शिक्षा के शिक्षार्थियों में भेदभाव पैदा करती है जिसे पूरी तरह समाप्त होनी चाहिए। 02 मई 2022 भारतीय गजट में उपलब्ध राष्ट्रीय शिक्षा नीति के समीकरणों को समझना पड़ेगा और उन्हें हर हाल में जमीन पर कार्य करने की पद्धति और यथार्थपरक लाभ देने के लिए भ्रम को खत्म होना चाहिए।

एक समय में दो डिग्री राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अवधारणा भी है। अब इसमें निश्चित रूप में एक व्यक्ति, एक संस्थान, एक पाठ्यक्रम के असमंजस्य को दूर होना चाहिए। इसमें जो फीस की संरचना है उसमें भी सरलीकरण होना चाहिए। शिक्षा में एक बहुत बड़ी चुनौती यह भी है कि शिक्षार्थी नियमित रहें। समान दृष्टि से रहें। रोजगार के भी समान अवसर मिले तभी राष्ट्रीय शिक्षा नीति यथार्थपरक हो सकती है।

संरक्षणवाद पूरी तरह खत्म होना चाहिए। वेलगाम होते इन्टरनेट पर अंकुश लगने चाहिए। ऑनलाईन पद्धति की शिक्षा में भी हमारे सामने चुनौतियाँ है जो कमजोर तबके के शिक्षार्थी है उन्हें मोवाइल या लेपटॉप उपलब्ध होते है तो नेट की समस्या आती है और यदि ये भी उपलब्ध है तो घर बैठे विद्यार्थी की परिपक्व मानसिकता की तैयारी भी होना चाहिए कि उसे हर हाल में इसके सम्पूर्ण उपक्रम समझ में आयें और वह शिक्षा को पूरी तरह ग्रहण करें। शिक्षा मानव जीवन की निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। अंधेरे से उजाले की ओर की प्रक्रिया में शिक्षा एक बहुत बड़ा आधार है। इस शिक्षा के माध्यम से आचरण, मूल्य, संस्कार, बुद्धि का परिमार्जन भावनात्मक विकास, निरोगी काया, कौशल विकास, प्रकति के सभी जीवों के प्रति दयालुता की भावना इस शिक्षा के प्रमुख आशय है। क्योंकि यह शिक्षा ही अनमोल और शाश्वत मानी गयी है। शिक्षा का अर्थ चार दीवारी से बाहर आ अपने भीतर अन्नत सम्भावना को विस्तार देना भी है। रविन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय,स्वामी विवेकानन्द जी आदि की शैक्षिक भूमिकायें व्यक्ति निर्माण के साथ समाज निर्माण, राष्ट्र निर्माण फलतः संस्कृति का उन्नयन ही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत सरकार की 29 जुलाई 2020 को घोषित की गई थी जिसकी अध्यक्षता अन्तरिक्ष वैज्ञानिक कस्तुरीरंगन ने की थी। इस शिक्षा में समता गुणवत्ता, महनीता और उत्तरदायित्व जैसे मुद्दों की चर्चा है। जिसमें प्राथमिक शिक्षा बहुस्तरीय खेल और गतिविधि आधारित है। इसमें भाषायी विविधता का संरक्षण है। इन्टरशिप की व्यवस्था भी लागू है। छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन के लिए मानक निर्धारक निकाय (परक) की स्थापना है। इस नीति का परिपूर्ण रूप में पालन तभी हो सकता है जब प्रभावी शिक्षकों की उपस्थिति हों। उच्च शिक्षा में एक वर्ष बाद प्रमाण पत्र, दो वर्षो के बाद एण्डवांस डिप्लोमा, तीन वर्षो के बाद स्नातक की डिग्री तथा चार वर्षो के बाद शोध के साथ स्नातक डिग्री प्रदान की जायेगी। एक संस्थान का दूसरे संस्थान से मेमोरेनडम ऑफ अण्डरस्टेडिंग (एमओयू) महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए किसी छात्र को एक साथ दो डिग्री एम.ए.एलएलबी. पूर्ण करनी है तो तीन साल में फाइनल की डिग्री एक साथ नही होगी जो हमारा एमओयू है वह टयूनिंग डिग्री के माध्यम से हल होगा। जैसे एक संस्थान में 70 प्रतिशत पाठ्यक्रम पूर्ण कराया जायेगा तो दूसरे संस्थान में 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम पूर्ण कराया जायेगा। इसी

आधार पर शिक्षार्थी को फाइनल डिग्री दी जायेगी। इस सबंध में प्रो. ए.डी. एन. बाजपेयी जी कहते है राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक महत्वाकांक्षी योजना है यह जड़ता से चेतना की ओर ले जाने वाली नीति है। जब तक हम अपना भ्रम दूर नही करेगे तब तक इसकी सफलता सम्भव नही होगी।

संदर्भ सूची

1. शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, डॉ. ओ.पी. सिंह, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. दैनिक जागरण समाचार पत्र, 15 जून 2022 गिरीश्वर मिश्र, पृ. 06
3. हम और हमारी शिक्षा, हरिश्चन्द्र व्यास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा को बदलना एक बड़ी चुनौती

शिवऔतार सहायक प्राध्यापक– हिंदी
भगवान आदिनाथ कॉलेज आफ एजुकेशनमहर्रा, ललितपुर।
रामसिंह यादव
सहायक प्राध्यापक– बी एड
भगवान आदिनाथ कॉलेज आफ एजुकेशन
महर्रा, ललितपुर।

सारांश – उच्च शिक्षा मनुष्य को आत्मावलंबी श्रेष्ठ सुसंस्कृत तथा अधिक गरिमा पूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं उच्च शिक्षित व्यक्ति उच्च शिक्षित व्यक्ति समाज की दृष्टि में आदरणीय और ज्ञान वृद्ध माना जाता है एक लोकतांत्रिक न्याय संगत सामाजिक रुप से जागरूक सुसंस्कृत और मानवीय राष्ट्र जो सभी के लिए स्वतंत्रता समानता बंधुत्व और न्याय को बनाए रखता है। गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चंद्रगुप्त को सम्राट बनाने में चाणक्य इसलिए सफल है कि वह स्वयं में भी सभी कलाओं में पारंगत थे तभी तो वह सम्राटों चित्त सभी सद्गुण चंद्रगुप्त में विकसित कर सके। भारत की नई शिक्षा नीति बेहतर होने के साथ उच्च शिक्षा संस्थानों के पुनर्गठन और एकत्रीकरण की सिफारिश करती हैं।

प्रस्तावना – उच्च शिक्षा मनुष्य को आत्मावलंबी श्रेष्ठ सुसंस्कृत तथा अधिक गरिमा पूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं उच्च शिक्षित व्यक्ति उच्च शिक्षित व्यक्ति समाज की दृष्टि में आदरणीय और ज्ञान वृद्ध माना जाता है एक लोकतांत्रिक न्याय संगत सामाजिक रुप से जागरूक सुसंस्कृत और मानवीय राष्ट्र जो सभी के लिए स्वतंत्रता समानता बंधुत्व और न्याय को बनाए रखता है।

उच्च शिक्षा स्थाई आजीविका और राष्ट्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं जैसे–जैसे भारत एक ज्ञान अर्थव्यवस्था और

समाज़ बनने की ओर अग्रसर होता है वैसे वैसे अधिक से अधिक युवा भारतीयों के उच्च शिक्षा की आकांक्षा रखने की संभावना है।

गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में आधुनिक सुविधाओं का होना अत्यंत आवश्यक होता है जिससे जिससे विद्यार्थी नित्य होने वाले नवीन परिवर्तनों से परिचित हो सकें यद्यपि यह बात सही है की भारत की ज्ञान पिपाशा ने अत्यंत अभावों में भी शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कीर्तिमान स्थापित किए हैं किंतु अब यह भी सही है की वैसी शारीरिक और मानसिक शक्ति ना रही हैं।

विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय – विश्वविद्यालय और कॉलेज की गुणवत्ता में जहां कुर्सी मेज और आधुनिक सुविधाओं से युक्त भव्य भवन आवश्यक है वहीं शिक्षण कौशल वे दक्षता योग्य शिक्षक भी आवश्यक है किसी भी विश्वविद्यालय अथवा कॉलेज की गुणवत्ता उसके भवन नहीं बल्कि उसके प्रोफेसर निर्धारित करते हैं। बूढ़े परसराम से शिक्षा पाकर कर्ण विश्व विश्रुत योद्धा ही नहीं सही में उदार दानी दयालु तथा उच्च कोटि के मनुष्य भी हुए। जंगल में गुरु संदीपन के यहां शिक्षा पाए श्री कृष्णा और सुदामा की मैत्री मनुष्यता के लिए आदर्श है। गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र के सानिध्य में रहकर राम और लक्ष्मण विश्व मानव के लिए आदरणीय बने हुए हैं।

बहुत आवश्यक है कि भवन की भव्यता से ज्यादा आचार्य की नव्यता और सभ्यता पर ध्यान दिया जाए चंद्रगुप्त को सम्राट बनाने में चाणक्य इसलिए सफल है कि वह स्वयं में भी सभी कलाओं में पारंगत थे तभी तो वह सम्राटों चित्त सभी सद्‌गुण चंद्रगुप्त में विकसित कर सके।

आज शिक्षा के निजीकरण हो जाने पर कालेज कम वेतन में ऐसे स्नातक ला रहे हैं जो अभी स्वयं भी परिपक्व नहीं है। और ज्ञान के क्षेत्र में तो पकने की बात छोड़िए उनका कच्चा ज्ञान और व्यक्तित्व किसी भी क्षेत्र में छात्र को प्रभावित नहीं कर पा रहा है इस संदर्भ में यह कविता कितनी प्रासंगिक होती है–

"बड़े बड़े बाल अरु बड़ी सी चोटइया है।
साधुन से दाढ़ी पर ज्ञान अधकचरा है।
कोट पेंट टाई है गले में गल फांसी मानों
बोली ऐसी मीठी कि मानव कोई बकरा है।

आधुनिकता के चक्कर में ऐसे केस वेश रचे,
रस नहीं एको बस सूखो सो लकरा है।''

वैभव में पले बढ़े राजकुमारों को जब भी ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा हुई विभव की वेशभूषा उतार कर आश्रम के कष्ट पूर्ण जीवन को स्वीकार करना पड़ा उस गुरुकुल व आश्रम की गुणवत्ता उसके आचार्य ही हुआ करते थे जिनका तपः पूत जीवन गंभीरं विषय बोध तथा उत्कृष्ट व्यक्तित्व जीवन के हर क्षेत्र में उन्हें प्रभावित करता था।

कुछ पंक्तियां इस संदर्भ में कितनी उपयोगिता लगती है–

''भगवान हुए राम विश्वामित्र और वशिष्ठ पाकर।
संदीपन को पाकर कृष्ण जगत बंधु हो गए।
लव और कुश की अजेयता है विश्व विदित,
व्यास वाल्मीकि के पुनीत छंद हो गए।''

फिर भी आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में विश्वविद्यालय और कॉलेज की गुणवत्ता की बात करते हैं तो लगता है कि भारत सबसे ज्यादा उच्च शिक्षा में खर्च कर रहा है फिर भी शिक्षा गुणवत्ता पूर्ण नहीं है इसके मूल कारणों पर हमें विचार करना ही होगा।

यहां पर हमें यह भी देखना है की प्राथमिक शिक्षा कितनी गुणवत्तापूर्ण है। यही बच्चे उच्च शिक्षा में दाखिला लेते हैं कमजोर नींव पर भव्य भवन की अपेक्षा कैसे की जा सकती है। हमें यह कहने में बिल्कुल संकोच नहीं है की प्राथमिक स्तर पर अगर प्राइवेट शिक्षा ना होती तो शिक्षा व्यवस्था पंगु हो जाती है।

प्राथमिक स्तर की ओछी मनोवृति और अकर्मण्यता ने उच्च शिक्षा को बुरी तरह प्रभावित किया है।

आंज भारत में लगभग 1000 विश्वविद्यालय हैं कई लाख कॉलेज उनसे संबंध हैं फिर भी स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा में पूर्णता ना होने के कारण भारत में छात्रों के लिए आगे पढ़ने की राह असमंजस पूर्ण होती जा रही है उत्तर भारत में बड़ी संख्या में शैक्षणिक पलायन हो रहा है आज उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सुधार तभी संभव है जब हम उसकी चुनौतियों को पहचान सके जिसके लिए हमें कुछ दशक पीछे जाना होगा

सबसे पहले 80 के दशक में शिक्षा नीति में अनुदान की प्राथमिकता थी हालांकि तब से ही बिना अनुदान की नीति को बढ़ावा दिया जाने लगा।

आम जनमानस में यह धारणा रही है की शिक्षा के लिए दिया गया दान उच्च कोटि का दान है। भगवान बुद्ध के समय नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों के लिए तत्कालीन राजाओं तथा धन पतियों ने प्रचुर मात्रा में दान दिया था। जिसमें विदेशों से आकर छात्र ज्ञानार्जन करते थे और सात समुंदर पार जिसकी ख्याति थी।

सन 2010 का दशक आते–आते स्थिति यह हो गई कि हमने उच्च शिक्षा में बिना अनुदान की नीति को स्वीकार कर लिया इसका परिणाम यह हुआ कि सार्वजनिक क्षेत्र की उच्च शिक्षा में गुणवत्ता का स्तर खराब होता गया और शिक्षा का बाजारीकरण साफ तौर पर सामने आया परिणाम स्वरूप सामान्य परिवारों के लिए शिक्षा साल दर साल महंगी होती चली गई। उच्च शिक्षा की मौजूदा स्थिति को समझने के लिए फिर से पीछे जाए तो वर्ष 2004 में निजी विश्वविद्यालय विधेयक व अध्यादेश आने के बाद बड़ी तादाद में निजी विश्वविद्यालयों की स्थापना को बढ़ावा मिला था। दूसरी तरफ उच्च शिक्षा के निवेश में साल दर साल कटौती किए जाने से गरीब परिवारों के लिए स्थिति पहले से विकट हुई है। इसकी पुष्टि केंद्र द्वारा शिक्षा के लिए दिए जाने वाले बजट के लिए आकलन करने से होती है। पिछले 5 वर्ष के दौरान शिक्षा पर किए जाने वाले निवेश को बढ़ाने के बजाय इसमें लगातार कटौती हुई है। इसलिए दूसरी सबसे बड़ी चुनौती बुनियादी सुविधाओं का अभाव और गुणवत्ता में आई कमी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – भारत की नई शिक्षा नीति बेहतर होने के साथ उच्च शिक्षा संस्थानों के पुनर्गठन और एकत्रीकरण की सिफारिश करती हैं इसके मुताबिक यदि किसी शिक्षा संस्थान में विद्यार्थियों की संख्या कम है तो इसका किसी अन्य संस्थान में विलय कर दिया जाएगा ऐसा हुआ तो आशंका यह है कि देश के दूरदराज क्षेत्रों में उच्च शिक्षा का प्रसार और प्रोत्साहन रुक जाएगा । इससे कई ग्रामीण पहाड़ी और जनजातीय अंचल के शिक्षा स्थान बंद हो जाएंगे।

सन्दर्भ सूची –

1. MHRD India द्वारा प्रकाशित गजट। www.mhrd.gov.in
2. स्वतत्रंता के पश्चात भारत में गठित शिक्षा आयोग – डा0 रोहित कुमार HSRA Publication 2020
3. Google.co.in

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade

Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur

(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
	About the College	v
	संदेश	vii
	संदेश	ix
	Forward	x
	Preface	xi
1	उच्च शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव	1
2	नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के साथ ही स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के लिए चुनौतियां	12
32	बालकों के संरक्षण में शिक्षकों की भूमिका विशेषतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में	20
4	Opinion of the students of higher education about new education policy	32
5	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उसकी चुनौतियाँ	40
6	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा को बदलना एक बड़ी चुनौती	45
7	वैदिक शिक्षा प्रणाली : राष्ट्र की अंखण्डता संस्कृति हेतु आवश्यक कड़ी	50
8	Physical Education in India and Challenges in the Implementation of New Education Policy 2020	58
9	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं नई चुनौतियां	66
10	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यन्वयन और उसकी चुनौतियाँ"	70
11	"Challenges in Teacher Education in the context of NEP, Higher Education and teaching skills for NEP 2020"	78
12	Challenges of Physical education and Sports Technology in India	88
	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 के अनुसार विद्यालयों	95

Physical Education in India and Challenges in the Implementation of New Education Policy 2020

Ramakant Verma
Assistant Professor
Dept. of Physical Education
Bhagwan Aadinath College of Education

Abstract:
Physical education and sports have great impact on the physical as well as mental development of children. Many contemplate that physical education is less significant field in whole curriculum but it is as important as other subjects such as science and math. Physical education in the educational institutes is the area to be targeted for the upliftment of sports. The survival of human being is primarily physical. The first lesson a human child learns is a lesson of physical activity. Curriculum is supposed to bedesigned in such a way that physical activities become a part of daily lesson plan. Sports are among the highlights of media these days and it is turning to be a big industry in the world. In spite of being ignored by majority of people in society, sports have noteworthy influence on most of them, directly or indirectly.The National Education Policy, 2020 aims to shift towards more scientific approach to education. It will help to cater ability of the child in different stages of development. This includes cognitive development, social and physical development. When implemented, the policy will bring India at par with leading countries of the world.The **New Education Policy 2020**, is a commendable step by the government to achieve the goal of providing quality education and having a skillful, talented, and professional youth population. Learning systems like online learning and digital courses are also being

encouraged. Lastly, it also lies emphasis on learning and preserving traditional languages like Sanskrit in India which are losing fast.**It is an exemplary policy as it targets at making the education system flexible, multidisciplinary, aggregate and aligned to the needs of the 21st century.**

Keywords: Physical Education, Curriculum, Sports, NEP 2020, Digital courses.

Introduction:

Physical education is the main parts of our program of study for so many years. In spite of being having its relevant aspect in our life, it was ignored by the each part of the society like administration, professionals and students. In physical education, we deal with the theoretical and practical aspects as well. General concept of society regarding physical education is not so good. People think that playing is just a wasting of time that is ironically wrong. We use our time when we are under game situations and that must be considered fullest utilization of time devoted to that task. Awareness about health need to be spread to get maximum output from physical education and sports. So hurdle onthe way of sports must be removed so that to enlighten the society with the brightest light of sports. Now that being the part of total education process, physical education and sports have great impact on the physical as well as mental development of children. Many contemplate that physical education is less significant field in whole curriculum but it is as important as other subjects such as science and math. Curriculum is supposed to bedesigned in such a way that physical activities become a part of daily lesson plan. Sports are among the highlights of media these days and it is turning to be a big industry in the world. In spite of being ignored by majority of people in society, sports have noteworthy influence on most of them, directly or indirectly. Lots of issues which adversely affect the sports need to be settled. Cooperation with the advanced countries is required in this regard because we are not up to mark in sports field so far.

We must set up an agenda of action plan for the encouragement and expansion of physical education and sport.

In present scenario the matter of concern is the declining status of physical education and sports. It is a key challenge for world's developing countries to set up a connection with other developed nations to get guidance from their coaches and authorities. Consequently, developing countries can gain knowledge about the world-class infrastructure and technological equipments related to sports. Physical education in the educational institutes is the area to be targeted for the upliftment of sports. The survival of human being is primarily physical. The first lesson a human child learns is a lesson of physical activity. No education, however ideal and decorous in its objectives without stress on motor activity. The human body is a gift of nature. Its growth, development and competency is mostly depend upon the quantity and quality of motor activities and its performs. Some people are often flawed in defining physical education. They often guess that physical education is sport education. Simply but, physical education is a process of education through physical activity. Way of physical education is different from education as it tries to fulfill it through the medium of physical exertion. Trend in the physical education has been changed recently in a manner that students are being introduced with other activities like bowling, hiking and walking and these may turn to be a habit during later stage of life.

Stress which is a common phenomenon in general life and sports as well is being reduced through yoga. The trend of health and nutrition to the physical education curriculum is in early stage. All school districts with a central funded school meal program develop wellness policies that address nutrition and physical activity. Quality Physical Education programs will benefit the lifestyle of young people. It is more important for the elementary classes because they have no health and nutritional specific classes.

Health and physical education classes are now added in the curriculum of primary schools.

Structured physical education must be made an integral part of school curriculums in India. For such a young and socio-economically diverse population, Physical education through schools can become a powerful holistic development tool for Indian children. Most schools in India have failed to integrate structured physical education into the school's curriculum. Focus is on mainstream subjects, as schools fail to see how a structured PE curriculum can add to the development of young children, by aiding in their physical, mental, emotional and social growth. With 29.5% of India's population under 14 years old (Indian Census, 2011), Physical education must be utilized as an effective tool for the holistic development of Indian children, from diverse socio-economic backgrounds.

Major Challenges in the Implementation of New Education Policy 2020:

The NEP 2020 is the first new education policy to be introduced in India in the 21st century, the last having been implemented in 1986, 34 years ago. The NEP, thus, replaces the National Policy on Education, 1986, which was modified once in 1992. Before that, the first education policy was passed in 1968. Major Challenges in the Implementation of New Education Policy 2020 is as follows:

Opening universities every week is a strenuous task:

India today has around 1,000 universities across the country. Doubling the Gross Enrolment Ratio in higher education by 2035 which is one of the stated goals of the policy will mean that **we must open one new university every week, for the next 15 years.**Opening one University every week on an ongoing basis is an undeniably massive challenge.

The numbers are no less intimidating in reforms to our school system:

The National Education Policy 2020 intends to bring 2 crore children who are currently not in schools, back into the school

system. Whichever way you view at it, accomplishing this over 15 years requires the setting up of around 50 schools every week.This certainly requires a substantial amount of investment in classrooms and campuses which will be extremely challenging.

Need to create a large pool of trained teachers:

In school education, the policy envisages a sweeping structural reformulation of the curriculum a very welcome step. Many of the curricular changes require considerable mindset shifts on the part of teachers as well as parents.

Inter-disciplinary higher education demands for a cultural shift:

In higher education, the NEP 2020's focus on inter-disciplinary learning is a very welcoming step. In India, education has for decades been very isolated and monotonous. For the entire higher education system to be composed of "exceptions" professors who are curious about, respect and lean in to other disciplines while being experts in their own is not an easy task. This requires a cultural shift in the entire higher education ecosystem, over the next 15-20 years.

Challenge of effective use of Digital Devices by the Teachers and Students:

The challenges due to digital gadget usage in the world are not a new concept anymore and every citizen across the countries in the world including India is not an exception.The National Education Policy is looking forward to taking advantage of the habit of utilizing digital devices for a productive purpose is a welcome move. The iniquitousness in the availability of the digital devices for an affordable price by any citizen of this country will make this strategic move to survive in this country. The only hitch will arise is the quality of the 4G network and the accessibility for all the citizens and with special cuts on the cost of usage for the educational purposes.The recent COVID 19 have opened up

various platforms for all the kinds of institutions to utilise ZOOM, Microsoft teams, skype and other apps as per the ability to use is a new beginning to stay forever. But the utility rate and the effectiveness of common man who is well below the payable capacity needs to be checked out.

The Implementation of National Educational Technology Forum:

This challenge is all about the ambitious goal setting of the NEP a new National Educational Technology Forum. Although a pilot study on the importance of the experiments and the use of technology for improving the quality of education in school as well as higher education have been undertaken all around the country over the last two decades, the level of utility and its benefits are to be analysed yet. Hence it is high time that it is required to be reviewed for their outcomes and carefully evaluated for their benefits, risks and effectiveness, as well as their potential to scale up, in the different contexts in which they need to be deployed. This complex task requires a wide range of expertise since the National Educational Technology Forum will be a platform for the free exchange of ideas on the use of technology to improve learning, assessment, planning and administration.

The challenges of translation of content into multiple languages:

The inbuilt challenges for creating new types of interactive and immersive content to strengthen educational planning and management and bring greater transparency and efficiency to the examination system as well as to administrative and governance processes needs to be done.The challenges for assisting and getting assistance from the top management of educational initiatives such as supporting teacher development programmers, for scaling up the ODL system so that it can respond to the growing demand for education from all age groups, across school education, higher

education, professional and vocational education, adult education, and lifelong learning.

Conclusion:

Present paper concluded that the new education policy has a laudable vision but its influence will depend on whether it is able to effectively merge with the government's other policy initiatives like Digital India, Skill India and the New Industrial Policy to name a few in order to effect a coherent reconstruction. For instance, policy linkages can ensure that education policy speaks to and learns from Skill India's experience in engaging more dynamically with the private sector to shape vocational education curricula in order to make it a success. There is also a need for more evidence-based decision-making, to adapt to rapidly evolving shifts and disruption. NEP has encouragingly provisioned for real-time evaluation systems and a consultative monitoring framework. This shall enable the education system to constantly reform itself, instead of waiting for a new education policy every decade for a shift in curriculum. This, in itself, will be a remarkable achievement. The National Education Policy, 2020 aims to shift towards more scientific approach to education. It will help to cater ability of the child in different stages of development. This includes cognitive development, social and physical development. When implemented, the policy will bring India at par with leading countries of the world.The **New Education Policy 2020**, is a commendable step by the government to achieve the goal of providing quality education and having a skillful, talented, and professional youth population. Learning systems like online learning and digital courses are also being encouraged. Lastly, it also lies emphasis on learning and preserving traditional languages like Sanskrit in India which are losing fast.**It is an exemplary policy as it targets at making the education system flexible, multidisciplinary, aggregate and aligned to the needs of the 21st century and the 2030 sustainable development goals.**

References:

1. Kales ML, Sangria MS, History of Physical Education, Prakash Brothers, Ludhiana, 1988. p.94.
2. Chu Donald, Dimension of Sports Studies, John Wiley & Sons,New York Chicester Brisbane Toronto Singapore 1982. p.87.
3. Connor-Kuntz, Dummer, Teaching across the curriculum: language-enriched physical education for preschool children. Adapted Physical Activity Quarterly, 1996; p.54.
4. Gail Brenner, Webster's New World American Idioms Handbook. Webster's New World. p.65.
5. Nathan M. Murata, Language Augmentation Strategies in Physical Education, The Journal of Physical Education, Recreation & Dance,2003, p.74.
6. Government Report, NEP 2020, p.34.

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade
Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur
(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
	About the College	v
	संदेश	vii
	संदेश	ix
	Forward	x
	Preface	xi
1	उच्च शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव	1
2	नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के साथ ही स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के लिए चुनौतियां	12
32	बालकों के संरक्षण में शिक्षकों की भूमिका विशेषतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में	20
4	Opinion of the students of higher education about new education policy	32
5	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और उसकी चुनौतियाँ	40
6	गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय और कॉलेज उच्च शिक्षा को बदलना एक बड़ी चुनौती	45
7	वैदिक शिक्षा प्रणाली : राष्ट्र की अंखण्डता संस्कृति हेतु आवश्यक कड़ी	50
8	Physical Education in India and Challenges in the Implementation of New Education Policy 2020	58
9	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं नई चुनौतियां	66
10	"राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यन्वयन और उसकी चुनौतियाँ"	70
11	"Challenges in Teacher Education in the context of NEP, Higher Education and teaching skills for NEP 2020"	78
12	Challenges of Physical education and Sports Technology in India	88
	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2022 के अनुसार विद्यालयों	95

डॉ. रोहित कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं नई चुनौतियां

राजू उर्फ छबीले,यू जी सी नैट इतिहास
इतिहास विभाग,प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन ,
महर्रा ललितपुर।
आशुतोष कुमार अग्निहोत्री
प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन ,
महर्रा ललितपुर।

पिछले साल जुलाई में भारत में नई शिक्षा नीति एनईपी जारी की गई थी। ये शिक्षा क्षेत्र के लिए 21वीं सदी की पहली और सबसे व्यापक नीति है। शिक्षा जगत के लिए 1986 के बाद पहली बार अनेक मकसदों वाला नीतिगत दस्तावेज सामने रखा गया। इसमें कोई शक नहीं कि भारत का शिक्षा क्षेत्र फिलहाल संकट के दौर से गुजर रहा है। लिहाजा नई शिक्षा नीति के सामने इन समस्याओं से पार पाने की चुनौती है। NEP 2020 की पहली सालगिरह के मौके पर अपने संबोधन में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा–"हम आजादी के 75वें साल में प्रवेश कर रहे हैं। एक प्रकार से नई शिक्षा नीति पर अमल इस अवसर से जुड़ी प्रमुख घटना बन गई है। नया भारत बनाने और भविष्य के लिए युवाओं को तैयार करने में इस नीति की बड़ी भूमिका रहने वाली है।"

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने NEP2020 को 21वीं सदी की ज़रूरतों के हिसाब से एक दूरदर्शी शिक्षा नीति करार दिया। उनका कहना था कि इस नीति के जरिए भारत में एक–एक छात्र की क्षमताओं का विकास सुनिश्चित हो सकेगा। साथ ही हम शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाते हुए क्षमताओं का निर्माण करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। NEP 2020 भारत में शिक्षा को समग्र, सस्ता, सुलभ और न्यायपूर्ण बनाएगी। ऐसे में सवाल उठता है कि इस सिलसिले में अब तक क्या प्रगति हुई है? क्या नई शिक्षा नीति लागू होने से लेकर अब तक हालात पटरी पर है? आने वाले समय में इस व्यापक शिक्षा नीति के सामने की बड़ी चुनौतियां क्या–क्या हैं?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

अहम उपलब्धियां और पड़ाव

नई शिक्षा नीति 2020 लागू हुए 20 माह से ज्यादा का वक्त बीत चुका है। इस काल खण्ड में वैश्विक स्वास्थ्य संकट के चलते पैदा हुई चुनौतियों के बावजूद NEP 2020 ने कुछ अहम पड़ाव पार कर लिये हैं। राष्ट्रीय स्तर पर कई समारोह आयोजित किये गये। सरकार ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD)का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया। इस मंत्रालय में नई उर्जा और गतिशीलता लाने के लिए मंत्री के तौर पर धर्मेन्द्र प्रधान को कमान सौंपी गई। विपक्षी पार्टियों के शासन वाले राज्यों में नई शिक्षा नीति लागू करने में कई तरह की अड़चनों और विरोधों का सामना करना पड़ सकता है।

NEP 2020 में मौजूदा दौर की बदलती जरूरतों को पूरा करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रम में बदलाव किया गया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AIZ) और वित्तीय जगत से जुड़े साहित्य को स्कूली सिलेबस में शामिल किया गया है। NEP 2020 में मातृभाषा और स्थानीय भाषाओं पर खास जोर दिया गया है। इनके अलावा नई शिक्षा नीति से जुड़े कई और भी कार्यक्रम भी शुरू किए गए हैं। इनमें निपुण (NIPUN) भारत मिशन, विद्या प्रवेश, दीक्षा (DIKSHA) और निष्ठा (NSHTHA) शामिल है। निपुण (NIPUN)भारत मिशन का लक्ष्य तीसरी कक्षा पूरी होने तक बच्चों में पढ़ने–लिखने और अंकगणित से जुड़े कौशल में सुधार लाना और उनकी सीखने की क्षमता को धारदार बनाना है।

नई शिक्षा नीति लागू करने वाला सबसे पहला राज्य कर्नाटक है। 24 अगस्त को कर्नाटक में नई शिक्षा नीति लागू की गयी थी। हाल ही में मध्यप्रदेश और हिमाचल प्रदेश तथा अन्य राज्यों में भी NEP 2020 से जुड़े कई कार्यक्रमों की शरूआत हुई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से शैक्षिक ढॉचे को बेहतर बनाने का सरकार का प्रयास अपने आप में एक सराहनीय कार्य है, लेकिन इसके समक्ष कई चुनौतियां हैं, जिन्हें निम्न बिन्दुओं के तहत वर्णित किया जा सकता है।भारत में लगभग एक तिहाई बच्चे प्राथमिक शिक्षा पूरी करने से पहले स्कूल छोड़ देते हैं। यह उल्लेखनीय है कि अधिकांश बच्चे, जो स्कूल जाने में असमर्थ हैं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, धार्मिक अल्पसंख्यकों और दिव्यांग समूहों से संबंधित है।एक महत्वपूर्ण

चुनौती बुनियादी ढॉचे की कमी से संबंधित है। यह आमतौर पर देखा गया है कि स्कूलों और विश्वविद्यालयों में बिजली, पानी, शौचालय, चारदीवारी, पुस्तकालय, कम्प्यूटर आदि की कमी है, जिसके परिणाम स्वरूप शिक्षा प्रणाली प्रभावित होती है।विश्व बैंक की विश्व विकास रिपोर्ट 2018 की लर्निंग टू रियलाइज एजुकेशन प्रॉमिस के अनुसार–भारत की शिक्षा प्रणाली बदतर स्थिति में है।

शिक्षा क्षेत्र में सुधार के लिए सरकार द्वारा किए गए प्रयासों के विफल होने का खतरा है। उसका कारण शिक्षा नीति में बदलाव करते समय रोडमैप का पालन नहीं करना और नीतियों को बनाते समय सभी हितधारकों को ध्यान में नहीं रखना है।

ASER के अनुसार, जो कि एक MGO है, जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में है, पूरे भारत में ग्रामीणा और शहरी मलिन बस्तियों में बच्चों के साथ काम करता है। सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा क्षेत्र के बुनियादी ढांचे में निवेश किया हो ऐसा हो सकता है, लेकिन यह अपेक्षाकृत सफल नहीं रहा है।

नई शिक्षा प्रणाली के सामने एक चुनौती शिक्षकों की कमी को दूर करना भी है। नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (CAG)की 2017 की रिपोर्ट के अनुसार, एकल शिक्षक के भरोसे बड़ी संख्या में स्कूल चल रहे हैं, जो शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करता ळें UGC के एक नवीन सर्वेक्षण के अनुसार, कुल स्वीकृत शिक्षण पदों में से प्रोफेसर के 35 प्रतिशत, एसोसिएट प्रोफेसर के 46 प्रतिशत पद और 26 प्रतिशत सहायक प्रोफेसर के पद भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों में रिक्त है।

एक अन्य चुनौती उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना है। यह उल्लेखनीय है कि बहुत कम भारतीय शिक्षण संस्थानों को शीर्ष–200 विश्व रैकिंग में जगह मिलती है। शिक्षा नीति के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में प्रोफेसरों की जवाबदेही और प्रदर्शन सुनिश्चित करने से सम्बन्धित सूत्र को लागू करना भी है। आज, दुनिया के कई विश्वविद्यालयों में, अपने साथियों और छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर शिक्षकों के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जाता है।मसौदे में त्रिभाषी नीति भी NEP 2020 के सामने एक चुनौती पेश कर रही है, जिसमें गैर हिन्दी क्षेत्रों में मातृभाषा और अंग्रेजी भाषा के अलावा हिन्दी को तीसरी भाषा बनाने की सिफारिश की गई है। तीन भाषा सूत्र नया नहीं है और पिछली

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade

Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur

(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

शिक्षा नीतियों में, 1968 और 1986 में इसकी पहले से ही सिफारिश की गई थी।

निष्कर्ष रूप में, यह कहा जा सकता है कि NEP 2020 सरकार द्वारा शिक्षा प्रणाली में एक बड़े बदलाव का संकेत देता है, लेकिन इसमें कई चुनौतियां भी हैं। उल्लेखनीय है कि इन चुनौतियों से निपटने का प्रयास पूर्व में भी किया जा चुका है, लेकिन उपलब्धियां सराहनीय नहीं रही है। इस संदर्भ में, कुछ सुझावों को यहां लागू करने की आवश्यकता है। इस नीति के तहत, शिक्षा अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार, नागरिकों, सामाजिक संस्थाओं, विशेषज्ञों, अभिभावकों समुदाय के सदस्यों को अपने स्तर पर काम करना चाहिए।

कुल मिलाकर कहे तो NEP 2020 सचमुच हर लिहाज से एक कांतिकारी दस्तावेज है। इस नीति के तहत तमाम दूसरे मसलों के साथ–साथ शैक्षणिक मुद्दों और ढांचागत विषमताओं के निपटारे पर जोर दिया गया है। इसमें 21वीं सदी में भारत की जरूरतों के मद्देनजर शिक्षा को व्यापक और सुलभ बनाने और छात्रों को भावी मांग के हिसाब से तैया करने का खाका खींचा गया है।

डॉ. रोहित कुमार

''राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यन्वयन और उसकी चुनौतियाँ''

श्रीमति निधि जैन
प्रवक्ता
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा,ललितपुर
अतुल तिवारी
सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा,ललितपुर

सारांश – किसी भी देश की प्रगति के साथ–साथ उसके नागरिकों के विकास के लिये शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण आधार माना गया है। देश की स्वतंत्रता से लेकर अब तक आधुनिक भारत के निर्माण में भारतीय शिक्षा प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत सरकार द्वारा जुलाई 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, को मंजूरी दी गई।NEP–2020 को पूर्व इसरो प्रमुख डॉ0 के.कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में बनी एक समिति की सिफारिशों के आधार पर तैयार किया गया है। इस नीति में प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक पाठ्यक्रम अवसंरचना शिक्षा प्रणाली आदि में महत्वपूर्ण बदलावों का प्रस्ताव किया गया है, हालाकिं इन बदलावों को लागू करने के लिये संसाधनों का प्रबन्ध एक बड़ी चुनौती होगा। वर्तमान में देश में लगभग दो हजार विश्वविद्यालय है इतने अधिक छात्रों को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिये बहुत से नये विश्वविद्यालयों की स्थापना करनी होगी।

प्रमुख्य संकेताक्षर – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,आई एस एल,एकीकृत बी एड,

प्रस्तावना– किसी भी देश की प्रगति के साथ–साथ उसके नागरिकों के विकास के लिये शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण आधार माना गया है। देश की

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

स्वतंत्रता से लेकर अब तक आधुनिक भारत के निर्माण में भारतीय शिक्षा प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आधुनिक समय की जरूरतों के अनुरूप भारतीय शिक्षा प्रणाली में अपेक्षित बदलाव लाने के लिये केन्द्र सरकार द्वारा जुलाई 2020 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, को मंजूरी दी गई। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के माध्यम से भारतीय शिक्षा परिदृश्य में बड़े बदलावों का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है हालाकिं इसकी सफलता प्रधानमंत्री और शिक्षा मंत्री से लेकर अन्य सभी हित धारकों द्वारा इसके कार्यान्वयन के प्रति गंभीर प्रतिबद्धता पर निर्भर करेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति का संक्षिप्त परिचय–

- भारत की स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1968 में कोठारी आयोग (1964–1966) की सिफारिशों के आधार पर पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गयी।
- वर्ष 1986 में देश की शिक्षा प्रणाली में आवश्यक सुधारों के साथ शिक्षा की पहुँच को मजबूत करने और शिक्षा क्षेत्र में व्याप्त असमानताओं (विशेष रूप से महिलाओं, दिव्यांगों तथा अनुसूचित जातियों/जनजातियों आदि के संदर्भ में) को दूर करने हेतु दूसरी राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गयी।
- वर्ष 1992 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में संशोधन किया गया जिसके तहत देश में तकनीकि और व्यवसायिक शिक्षा कार्यक्रमों में प्रवेश के लिये राष्ट्रीय स्तर पर एकल प्रवेश परीक्षा की अवधारणा प्रस्तुत की गयी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के उद्देश्य– नई शिक्षा नीति–2020 के तहत 3 वर्ष से 18 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अंतर्गत रखा गया है। 34 वर्षो के पश्चात् आयी इस नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है। जिसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व प्राथमिक शिक्षा (3–6 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौमिक बनाना है।

इस शिक्षा नीति में 10+2 के फॉर्मेट को पूरी तरह खत्म कर दिया गया है, अब इसे 10+2 से बांटकर 5+3+3+4 फॉर्मेट में डाला गया है। बचपन की देखभाल और शिक्षा पर जोर देते स्कूल पाठ्यक्रम के 10+2

ढ़ांचे की जगह 5+3+3+4 का नया पाठ्यक्रम संरचना लागू किया जायेगा जो क्रमशः 3–8, 8–11, 11–14 और 14–18 उम्र के बच्चों के लिये है, इसमें अब तक दूर रखे गये 3–6 वर्ष के बच्चो को स्कूली पाठ्यक्रम के तहत लाने का प्रावधान है। नई प्रणाली में 3 वर्ष की आंगनबाड़ी/प्री–स्कूलिंग के साथ 12 वर्ष की स्कूली शिक्षा होगी।

एन.सी.ई.आर.टी. 8 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिये प्रांरभिक बचपन देखभाल और शिक्षा के लिये एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढ़ांचा विकसित करेगा। एक विस्तृत और मजबूत सस्थान प्रणाली के माध्यम से प्रांरभिक बचपन देखभाल और शिक्षा मुहैया करायी जायेगी इसमें आंगनबाड़ी और प्री–स्कूल भी शामिल होंगें।

स्कूल के पाठ्यक्रम और अध्यापनकला का लक्ष्य यह होगा कि 21वीं सदी के प्रमुख कौशल या व्यावहारिक जानकारियों से विद्यार्थियों को लैस करके उनका समग्र विकास किया जाये और आवश्यक ज्ञान प्राप्ति एवं अपरिहार्य चिंतन को बढ़ाने व अनुभवात्मक शिक्षण पर अधिक फोकस करने के लिये पाठ्यक्रम को कम किया जाए।

विद्यार्थियों को पसंदीदा विषय चुनने के लिये कई विकल्प दिए जायेगें स्कूलों में छठें ग्रेड से ही व्यावसायिक शिक्षा शुरू हो जायेगी और इसमें इंर्टनशिप शामिल होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020–

- NEP–2020 को पूर्व इसरो प्रमुख डॉ0 के.कस्तूरी रंगन की अध्यक्षता में बनी एक समिति की सिफारिशों के आधार पर तैयार किया गया है।
- NEP–2020 का उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के साथ शिक्षा में नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देना तथा भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाना है।
- इसके तहत वर्तमान में सक्रिय 10+2 के शैक्षिक मॉडल के स्थान पर शैक्षिक पाठ्यक्रम कों 5+3+3+4 को प्रणाली क्रमशः (3–8, 8–11, 11–14, 14–18 उम्र के बच्चों) के आधार पर विभाजित किया गया है।
- NEP-2020 के तहत कक्षा पाँच तक मातृभाषा/स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को अपनाने और आगे की शिक्षा में मातृभाषा को प्राथमिकता देने की बात कही गयी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

- बधिर छात्रों के लिये राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर पाठ्यक्रम सामग्री के विकास तथा भारतीय सांकेतिक भाषा (Indian Sign Language-I.S.L.)को पूरे देश में मानकीकृत करने का लक्ष्य रखा गया हैं।
- इसके तहत पाठ्यक्रम के बोझ को कम करते हुए छात्रो में 21वीं सदी के कौशल के विकास, अनुभव आधारित शिक्षण और तार्किक चिंतन को प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान दिया गया है साथ ही इसके तहत कक्षा 6 से ही शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल कर दिया जायेगा।
- इसके तहत तकनीकि शिक्षा, भाषायी बाध्यताओं को दूर करने, दिव्यांग छात्रों के लिये शिक्षा को सुगम बनाने आदि के लिये तकनीकि के प्रयोग को बढ़ावा देने और छात्रों को अपने भविष्य से जुड़े निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने के लिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित सॉफ्टवेयर का प्रयोग करने की बात कही गयी है।
- इस नीति के तहत शिक्षण प्रणाली में सुधार हेतु शिक्षकों के लिये राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों का विकास और 4 वर्ष के एकीकृत बी. एड. कार्यक्रम की अवधारणा प्रस्तुत की की गयी है।
- साथ ही इसके तहत देश में IIT और IIMके समकक्ष वैश्विक मानकों के बहुविषयक शिक्षा एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है।

नीतिगत सफलता के आधार–

- नीतियों के कार्यान्वयन से जुड़े अध्ययनों से पता चलता है कि नीतिगत विफलताओं से बचने में मजबूत साधन कार्यप्रणाली और कार्यान्वयन तंत्रिका तंत्र की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है।
- किसी नीति की असफलता के लिये ब्रिटिस शोधकर्ताओं बॉवहड्सन, डेविड हण्टर और स्टीफन पैकहम ने निम्न चार प्रमुख्य कारकों को उत्तरदायी बताया है।

1. अत्यधिक आशावादी अपेक्षाऐं।
2. बिखरी हुई शासन व्यवस्था में कार्यान्वयन।
3. नीति–निर्धारण में अपर्याप्त सहयोग।
4. राजनैतिक चक्र की अनियमिता।

विशेषज्ञों के अनुसार किसी नीति की असफलता के लिये चार खतरे इतने व्यापक है कि सामान्य प्रक्रिया में इसे हल करना एक बड़ी चुनौती होगी। यदि सरकार किसी नीति को लागू करने के बारे में गंभीर है तो इसके लिये एक मजबूत नीति समर्थन कार्यक्रम विकसित करना बहुत ही आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में चुनौतियां–

- इस नीति में प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक पाठ्यक्रम अवसंरचना शिक्षा प्रणाली आदि में महत्वपूर्ण बदलावों का प्रस्ताव किया गया है, हालाकिं इन बदलावों को लागू करने के लिये संसाधनों का प्रबन्ध एक बड़ी चुनौती होगा।
- NEP–2020 के तहत वर्ष 2035 तक उच्च शिक्षा में सकल नामाकंन अनुपात दो गुना करने का लक्ष्य रखा गया है। वर्तमान में देश में लगभग दो हजार विश्वविद्यालय है इतने अधिक छात्रों को शिक्षा उपलब्ध कराने के लिये बहुत से नये विश्वविद्यालयों की स्थापना करनी होगी।
- वर्तमान में शिक्षा तंत्र और अन्य संसाधनों के मामले में देश के अलग–अलग राज्यों की स्थिति में भारी अन्तर है। वर्ष 2019 में नीति आयोग द्वारा जारी स्कूली शिक्षा गुणवत्ता सूचकांक में देशभर में स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में भारी अन्तर पाया गया है, ऐसे में छात्रों के लिये इन परिवर्तनों के अनुरूप स्वंय को ढ़ालना कठिन होगा।

समाधान – राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु 5 बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए–

1. **उच्च शिक्षा सुधार हेतु विशेष कार्यबल की स्थापना–** प्रधानमंत्री का यह कार्यबल एक सलाहाकारी निकाय हो सकता है जिसमें सार्वजनिक और निजी उच्च शिक्षा संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल होंगे यह कार्यबल NEPके कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों को समझने और एक निश्चित जबावदेही के साथ समयबद्ध कार्यान्वयन सुनिश्चित करने में प्रधानमंत्री की सहायत करेगा।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के कार्यान्वयन हेतु स्थायी समिति–

(a) इस समिति की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षामंत्री द्वारा की जायेगी। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों/संस्थानों के कुलपति/निदेशक इस समिति के सदस्य होंगे।

(b) इस समिति को समयबद्ध तरीके से NEP की कार्यान्वयन योजना को तैयार करने और इसके निगरानी करने का कार्य सौंपा जायेगा।

(c) समिति के पास कुछ विशिष्ट शक्तियों के साथ इसमें विषयगत उप समितियों और क्षेत्रीय समितियों को भी शामिल किया जायेगा।

(d) यह समिति उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा NEP-2020को लागू करने के दौरान आने वाली चुनौतियों को दूर करने मे सहायता करेगी।

3. राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री परिषद–

(a) इस परिषद में सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के शिक्षामंत्री शामिल होंगे तथा परिषद की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षामंत्री द्वारा की जायेगी।

(b) यह परिषद राज्यों में सभी राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में NEPके कार्यान्वयन की निगरानी करने के लिये एक महत्वपूर्ण संस्थागत तंत्र होगा।

(c) साथ ही NEPके कार्यान्वयन के मुद्दो पर चर्चा और समस्याओं के निवारण के साथ राज्यों के बीच समन्वय स्थापित करने के लिये एक मंच के रूप में कार्य करेगा।

4. इंस्टीट्यूट ऑफ एमीनेन्स में सुधार–

(a) प्रधानमंत्री द्वारा इंस्टीट्यूट ऑफ एमीनेन्स की अवधारणा के तहत देश में विश्वस्तरीय विश्वविद्यालयों की स्थापना का दृष्टिकोण पेश किया गया था।

(b) वर्तमान में IOE के दृष्टिकोण को NEPकार्यान्वयन योजना के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है और IOES को अधिक स्वतंत्रता स्वायत्यता देने के साथ संसाधनों के मामले में सशक्त बनाने की आवश्यकता है।

(c) इसके माध्यम से भारत के विश्वविद्यालयों को वैश्विक विश्वविद्यालय रैंकिंग में अपनी स्थिति सुधार करने में सहायता मिलेगी।

5. राष्ट्रीय उच्च शिक्षा परोपकार परिषद–

(a) वर्तमान में देश के 70 प्रतिशत उच्च शिक्षण संस्थान निजी क्षेत्र के हैं और 70 प्रतिशत से अधिक छात्र उच्च शिक्षा के लिये निजी संस्थानों में प्रवेश करते है।

(b) भारतीय शिक्षा प्रणाली की पहुँच के विस्तार में निजी शिक्षण संस्थानों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही है।

(c) निजी क्षेत्र के उच्च शिक्षण संस्थानों के संचालन की वित्तीय चुनौतियों और छात्रों के समक्ष आने वाले शुल्क सम्बन्धी चुनौतियों को देखते हुए एक राष्ट्रीय उच्च शिक्षा परोपकार परिषद की स्थापना पर विचार किया जा सकता है।

अन्य चुनौतियाँ – वर्ष 1968 में जारी की गयी पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा पर केन्द्रीय बजट का 6 प्रतिशत व्यय करने का लक्ष्य रखा गया था जिसे अगली सभी शिक्षा नीतियों में दोहराया गया, परन्तु अभी तक इस लक्ष्य को प्राप्त नही किया जा सका।

कोविड–19, के कारण देश की अर्थव्यवस्था में आयी गिरावट के बीच राज्यों के लिये इन सुधारों को लागू करने के लिये आवश्यक धन एकत्रित करना बहुत ही कठिन होगा।

आगे की राह– सरकार के लिये किसी भी नीति के कार्यान्वयन में सफलता हेतु प्रोत्साहन, साधन, सूचना, अनुकूलनशीलता, विश्वसनीयता और प्रबंधन जैसे तत्वों पर ध्यान देना बहुत ही आवश्यक है।

NEP–2020 के सफल कार्यान्वयन क लिये सरकार को पारदर्शी कार्य प्रणाली और सभी हितधारकों की भागीदारी के माध्यम से विश्वसनीयता बढ़ानी होगी तथा प्रबंधन के प्रभावी सिद्धांतो को विकसित करना होगा।

साथ ही सरकार को कानूनी नीतिगत नियामकी और संस्थागत सुधारों को अपनाने के साथ एक विश्वसनीय सूचना तंत्र का निर्माण और

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां नियामक संस्थाओं सरकारी एजेन्सीओं तथा उच्च शिक्षण संस्थाओं के बीच अनुकूलनशीलता के विकास पर विशेष ध्यान देना होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अहम बिन्दु–

- मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय।
- स्कूलों में की 10+2 जगह 5+3+3+4 फॉर्मूला।
- शिक्षा पर सरकारी खर्च 4.43 प्रतिशत से बढ़ाकर जी.डी.पी. का 6 प्रतिशत का लक्ष्य है।
- ग्रेजुऐशन में तीन चार साल की डिग्री व एम.फिल. की अनिवार्यता खत्म।
- छठीं कक्षा से ही छात्रों को प्रोफेशनल और स्किल की शिक्षा।

संदर्भ–1. MHRDराष्ट्रीय शिक्षानीति ड्राफ्ट 2019.

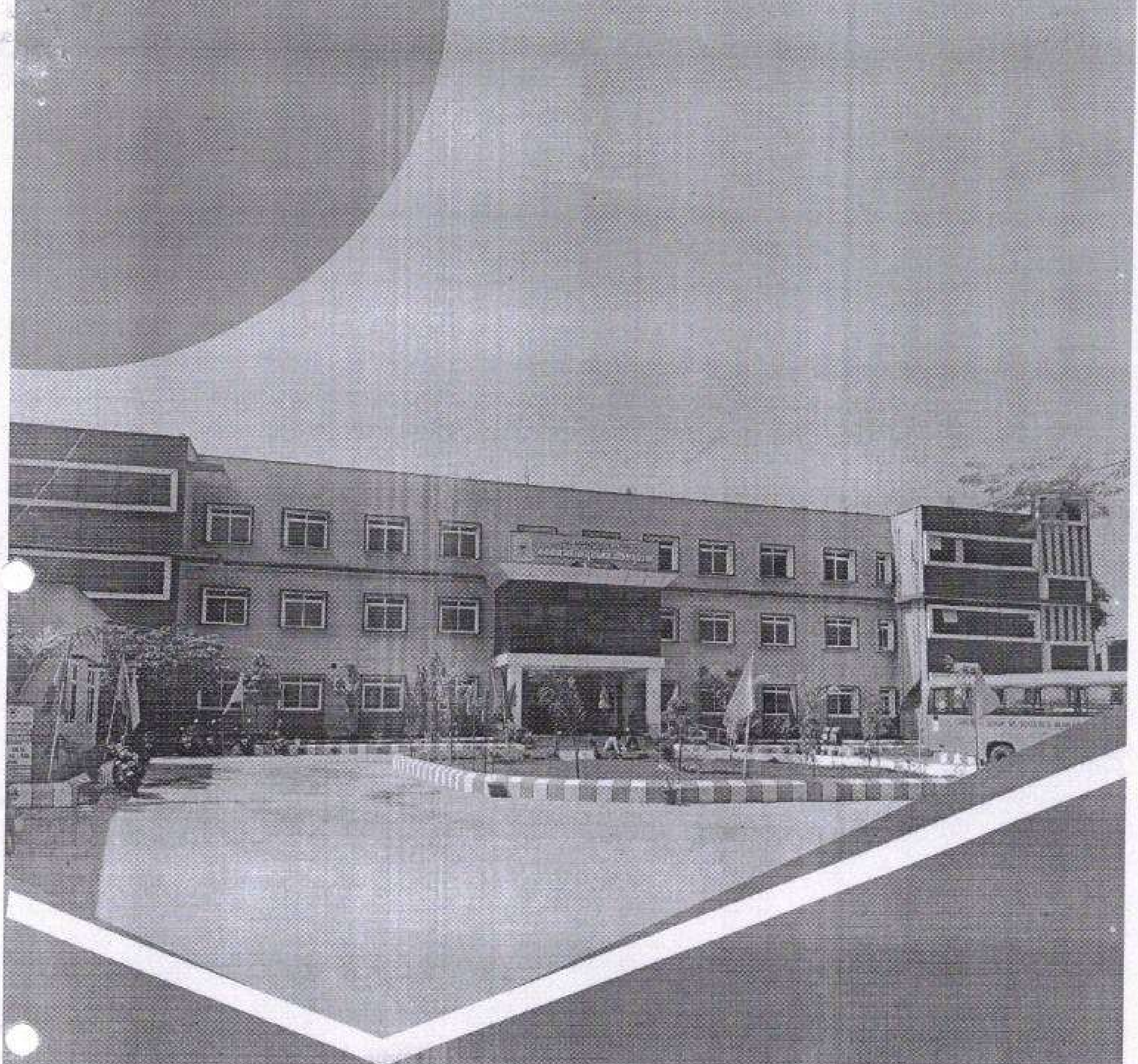

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade

Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur

(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

# Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0

Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

An Assessment of New Education Policy 2020: Teacher's Opinion

Kamta Prasad
Asst. Professor
Bhagwan Aadinath College of Education
Maharra - Lalitpur
Tanmay Gupta
Bhagwan Aadinath College of Education
Maharra - Lalitpur

Abstract

New education policy will guide India to achieve good trade mark in the field of education. The aim and objectives of the study is to know the opinion of Higher education teacher about new education policy 2020. There are more than 840 universities and 40000 Higher education institute in India (B.Venkateshwarlu, 2021).The NEP shift from 10+2 to 5+3+3+4 structure. New education policy will give importance in formative assessment rather than summative assessment. Vocational education will add in school and higher education system. The researcher obtained the primary source of data by conducting an empirical study on seeking responses from the college teacher based on a questionnaire. Total (N=30) subjects has been chosen by using convenient sampling methods. Teachers which were taken for the study were from Madhyapradesh. Data were collected under supervision. Once data were collected and put in SPSS software also results were shown in graphical representation. four drafted questionnaire were distributed to teachers. Maximum teacher believes that NEP will help nation building few teachers were disagreed with the statement. Most of the teachers also supported that M.Phil. Should be discontinued in higher education. Maximum teachers agreed

that NEP 2020 will develop research temperament no one denied about the statement.

Key words: Education, Higher education, National Education policy, Vocational, Research

Introduction

A country plan or modify their education system to Progress Further (Rizvi, F.,&Lingard,B.2009). National education policy 2020 is a wide-ranging structure (L.Devi, 2020). New education policy will guide India to achieve good trade mark in the field of education. NEP (2020) focuses on vocational subjects too. The aim and objectives of the study is to know the opinion of Higher education teacher about new education policy 2020. New education policy first Implemented in 1968 than second phase of the new education policy came in 1986 and revised in 1992.Third NEP released in 29^{th} July 2020.India is growing in education system. There are more than 840 universities and 40000 Higher education institute in India (B.Venkateshwarlu, 2021).The NEP shift from 10+2 to 5+3+3+4 structure. New education policy will give importance in formative assessment rather than summative assessment. Learner will get flexibility to choose their subjects according to their talent. There will not be any hard separation between curricular and extra-curricular, Science, arts and commerce, vocational and academic stream. The of NEP 2020 is by 2040 all Higher educational Institute (HEI) will be multidisciplinary and will have more than 3000 students and aims to promote as global education destination with affordable cost. Vocational education will add in school and higher education system.

Methods:

The researcher obtained the primary source of data by conducting an empirical study on seeking responses from the college teacher based on a questionnaire and also relied on secondary sources of

data such as Journals, books, e-sources, articles and newspapers. The research method followed in this research is empirical research.

Participants:

Total (N=30) subjects has been chosen by using convenient sampling methods. Teachers which were taken for the study were from different college of Madhyapradesh.

Data collection:

Subjects were given self made questionnaire. Data were collected under supervision. Once data were collected and put in SPSS software also results were shown in graphical representation. Four draft Questionnaires were distributed to teachers. Finally questionnaire was finalized. The required data collected through questionnaire usedLIKERT scale.There spondent was ensured that all the information would be kept confidential. Questions were translated in Hindi language so that it can be understood by everyone.

Results:

Table 1" Training should be given to teachers about new education Policy 2020"

Agree		Undecided		Disagree	
Frequency	Percentage	frequency	Percentage	Frequency	Percentage
26	86.66	1	3.33	3	10

From the above table it is evident that 86.66 percent of respondents agree with opinion that training should be given to teachers about new education policy 2020 whereas 10 percentages of people are disagreeing with same opinion. 33 percentages of respondents have not expressed any opinion.

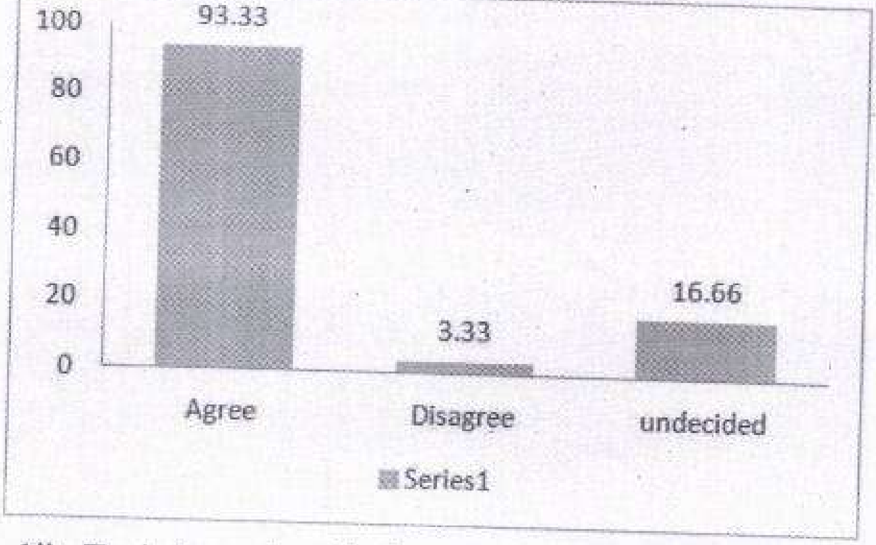

Figure 1" Training should be given to teachers about new education Policy 2020"

Table 2" New education policy will help in nation building"

Agree		Undecided		Disagree	
Frequency	Percentage	frequency	Percentage	Frequency	Percentage
21	70	3	10	6	20

From the above table it is evident that 70 percent of respondents agree with opinion that new education policy will help in nation building whereas 20 percentages of people are disagreeing with same opinion. 10 percentages of respondents have not expressed any opinion.

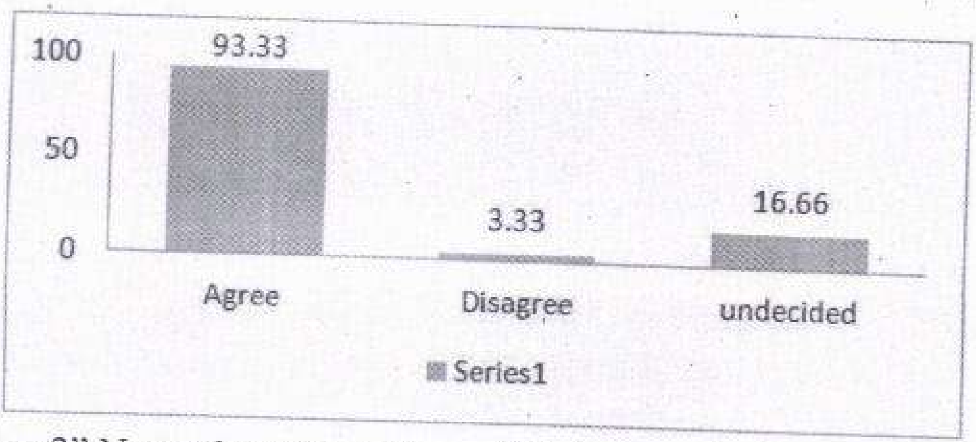

Figure 2" New education policy will help in nation building"

Table 3" Wise decision is taken to discontinue M.Phil course"

Agree		Undecided		Disagree	
Frequency	Percentage	frequency	Percentage	Frequency	Percentage
17	56.66	5	16.66	8	26.66

From the above table it is evident that 56.66 percent of respondents agree with opinion that wise decision is taken to discontinue M.Phil. Course whereas 26.66 percentages of people are disagreeing with same opinion. 16.660 percentages of respondents have not expressed any opinion.

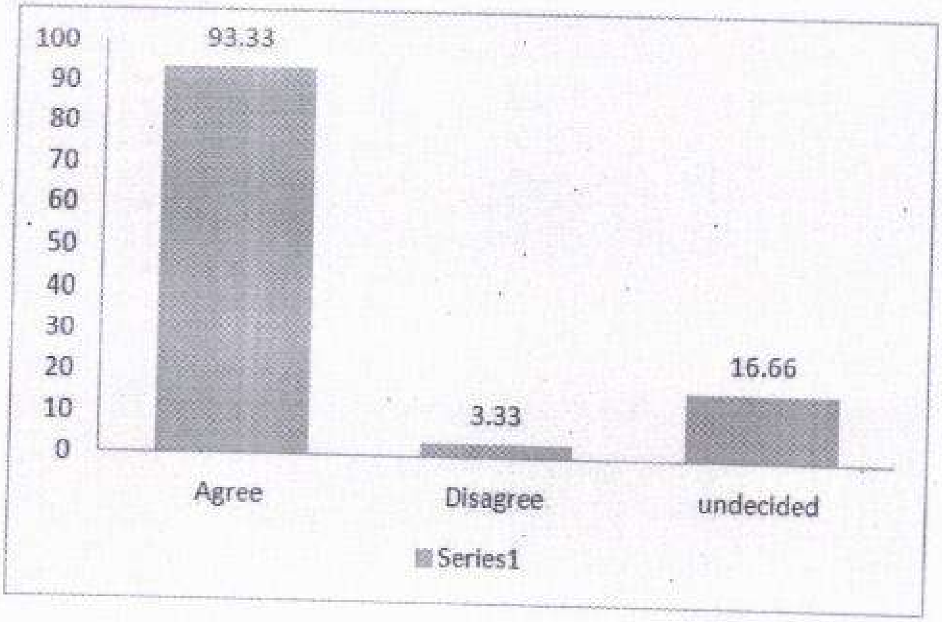

Figure 4" Wise decision is taken to discontinue M.Phil course"

Table 4" national education policy will develop research temperament"

Agree		Undecided		Disagree	
Frequency	Percentage	frequency	Percentage	Frequency	Percentage
27	90	2	6.66	1	0

From the above table it is evident that 93.33 percent of respondents agree with opinion that national education policy will

develop research temperament whereas 3.33 percentages of people are disagreeing with same opinion. 6.660 percentages of respondents have not expressed any opinion.

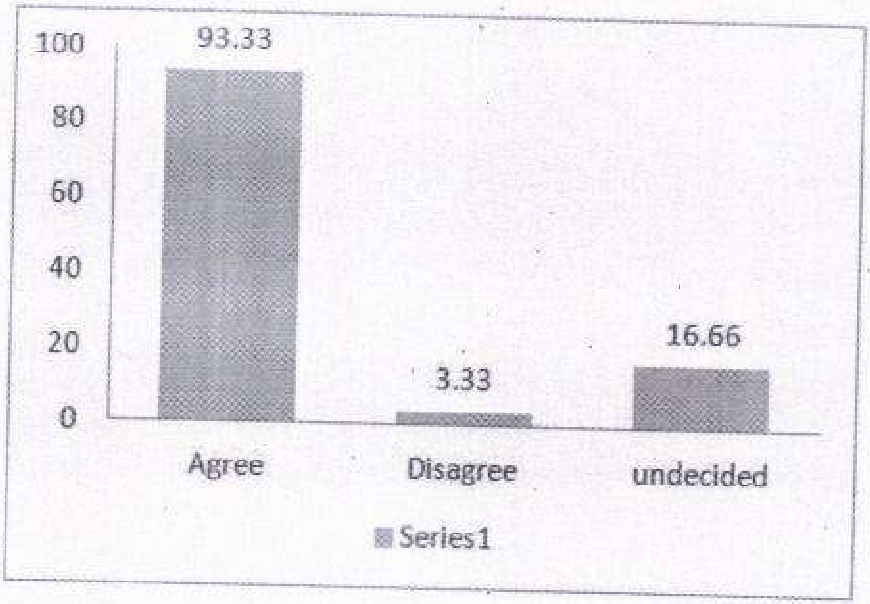

Figure 4" national education policy will develop research temperament"

Discussion and conclusion:

Education is the key to bring social changes. As the time has changed new technology has arrived there is a need of changes in education system to adjust with today's Scenario. There is need of changes in process of education, teaching learning process and methods. Time to India is adopting new education policies. As India is diverse and second most populated country in the world it may take time to adjust with situation but in coming days everyone will adjust with the situations. To know the opinion of the people researchers conducted study on higher education system where he found that maximum teacher agreed that training should be given to teacher to know better about the NEP2020. Maximum teacher believes that NEP will help nation building few teachers were disagreed with the statement. Most of the teachers also supported that M.Phil. should discontinue in higher education. Maximum

teachers agreed that NEP 2020 will develop research temperament no one denied about the statement.

References

- Albirini, A. (2006). Teachers' attitudes toward information and communication technologies: The case of Syrian EFL teachers. Computers & Education, 47(4), 373-398.
- Arthur, Mensah, N. (2020). Bridging the industry education skills gap for human resource development.*Ind. Commer.Train.*,*52*, 93–103
- B.Venkateshwarlu. (2020). A critical study of nep 2020: issues, approaches, challenges, oppertunities and criticism. *internationaljournalof multidisciplinaryeducationalresearch* ,10(2) 191-196.
- Ball, S. J. (2019). Australian education policy a case of global. *Journal of education policy* ,34(6), 747.
- Baser, D.; Ozden, M.Y.; Karaarslan, H. (2017). Collaborative project-based learning: An integrative science and technological education project. *Res. Sci. Technol. Educ., 35,* 131–148.
- Bonini, P. (2020). When tomorrow comes: Technology and the future of sustainability learning in higher education.*Environ. Sci. Policy Sustain Dev.*, *62*, 39–48
- Brosnan, T. (2001).Teaching Using ICT. University of London: Institute of Education.
- Cantwell, B. (2020). Explanatory accounts in international and comparative higher education research. *High. Educ. Q.*, *74*, 149–161.
- Gopal, K. N. (2021). Public Opinion on The New Education Policy 2020. *Journals educators, teachers and trainner* ,13(1), 183-192.
- Gündüz, S,. (2020). Investigation of the relationship between pre-service teachers' perceptions of education and support for

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade

Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur

(Approved by NCTE & Affitiald to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

डॉ. रोहित कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा में समानता और समावेश सुनिश्चत करने में शिक्षक शिक्षण का प्रभाव

भानुप्रताप वाजपेयी
सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा ललितपुर
श्याम प्रताप सिंह
सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा ललितपुर

सारांश – प्राचीन काल से ही समावेशन और समानता की समस्या चली आ रही है चाहे बात एकलव्य की हो या करण की आज स्वतंत्रता के 70 वर्षों के बाद भी यदि देश में समानता और समावेशन जैसी समस्याएं खड़ी हैं तो यह वास्तव में विचारणीय प्रश्न है द्य क्योंकि संविधान में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि राज्य किसी भी व्यक्ति के रंग,जाति,लिंग,भाषा नस्ल तथा क्षेत्र आदि के आधार पर किसी भी 6 वर्ष से 14 वर्ष आयु वर्ग के बालक की शिक्षा की गारंटी देता है तो कोई भी संस्थान या समाज इन्हें शिक्षा से वंचित नहीं कर सकेगा इसके बाद भी शिक्षा में समानता और समावेशन की समस्या बनी हुई है तो इसके क्या कारण हैं जिसकी चर्चा करना अध्ययन करना शोधार्थी का प्रयास है जिससे समाज के लोगों में जागरूकता लाने की संभावना तलाशी जा सके।

प्रस्तावना – भारत सरकार द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत विकास एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 (SDP) में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार 2030 तक सभी के लिए समावेशी और सामान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य है इस तरह के उदात्त लक्ष्य के लिए संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को समर्थन और अधिगम को बढ़ावा देने के लिए पुनर्गठित करने की

आवश्यकता होगी, ताकि सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के सभी महत्वपूर्ण लक्ष्य (एसडीजी) प्राप्त किए जा सकें। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में जिस तरह की शिक्षा व्यवस्था ने आकार लिया है इससे शिक्षा का संबंध वर्ग विशेष की उन्नति से जुड़ गया है, वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने वर्ग भेद को बढ़ावा दिया है द्य भारत गांव का देश है कृषि का देश है हाथों की कलाकारी का देश है बेहतर यही होगा कि हमारी शिक्षा व्यवस्था इन्हें भी अपने साथ लेकर चले तो देश की हवाएं विविध प्रकार की खुशबू आ से सराबोर हो सकेंगी वातावरण सतरंगी हो सकेगा सब साथ मिले–जुले रूप में उन्नति कर सकेंगे सबके पास अक्षर ज्ञान होगा अंको की जादूगरी होगी किताबों की छुअन होगी और सब के पास अपनी मूलभूत जरूरतें पूरा करने का हुनर भी होगा इसमें संवाद शायद धीमा हो लेकिन प्राप्त अवश्य होगा द्य अहिंसक और उत्कृष्ट समाज आकार लेगा, खुशी होगी, अपनापन होगा व भाईचारा होगा और यह तभी होगा जब हम सभी की आगे बढ़ने की योजना को अमल में लाएंगे जैसा की समानता के लिए कहा गया है कि आज हम जिस समाज में रह रहे हैं वह 17 वीं या 18 वीं शदी का या कोई अन्य समाज नहीं है द्य यों तो हर समाज अपने में 9 टन होता है पूर्ण होता है विकासवान परिपेक्ष में हर क्षण अतुलनीय होता है आधुनिक संदर्भ से हमारा तात्पर्य एक ऐसा क्षण है जो बीता नहीं है द्य इसके बीतने मैं वस्तुतः हम जी रहे हैं। हमारे जीवन के जीने के साथ–साथ बीतते क्षण का सम्बन्ध है वह अनुपमेय भी है, वह क्षण अपने अनुकूल जीने के लिए हमें विवश करता है, विवश होकर हम उसके पीछे दौड़ते रहते हैं, प्रतिरोध मृत्यु बन सकता है अतः यह जानना कि वह क्षण जिसमें हम जी रहे हैं कैसा है हितकारी है या इससे जीने के लिए दिशा बोध होगा हमें भविष्य के गंतव्य का ज्ञान होगा वर्तमान भारत का संदर्भ नए उदीयमान मूल्यों का है वह टूटते धार्मिक विश्वासो निष्ठाओं का संदर्भ है द्य इस संदर्भ मैं एक ओर राष्ट्रीय सीमायें विकसित होंगी, दूसरी ओर ऐतिहासिक ऐतिहासिक परंपराएं विघटित हो रही हैं हम यह नहीं कह सकते कि इसमे संस्कार हो रहा है, हाँ यह अवश्य माना जा सकता है कि इसमें दिनोदिन संकरता आ रही है, यह संकरता ही आधुनिक संदर्भ में सबसे विसंगति है ।

शोध अध्ययन की आवश्यकता – मेरे शोध पत्र के माध्यम से अध्ययन करना है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षण में समानता और समावेशन गाने में शिक्षक की भूमिका और प्रभाव क्योंकि मैं भी एक उच्च शिक्षण का प्राध्यापक हूं इसलिए मुझे लगता है कि जहां जहां पर शिक्षा में समावेशन एवं समानता की मुझे आवश्यकता महसूस हुई हो उसे मैं दूर करने के सुझाव एवं इस पर शोध करने की आवश्यकता मुझे महसूस होती है और मैं अपने सामर्थ्य के अनुसार इस पर अध्ययन कर रहा हूं ।

शोध के उद्देश्य ––

1. शैक्षिक अवसरों की समानता का अध्ययन करना ।
2. शैक्षिक अवसरों की समानता का संविधान में क्या प्रावधान है का अध्ययन करना ।
3. समावेशन से अभिप्राय का अध्ययन करना ।
4. समावेशन में अध्यापक की भूमिका का अध्ययन करना ।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अनुसार विशेष प्रतिभा वाले विद्यार्थियों के लिए सहायता प्रावधान ।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अनुसार शिक्षक ।

शैक्षिक अवसरों की समानता का अध्ययन करना – शैक्षिक अवसरों की समानता से अभिप्राय शिक्षा प्राप्त करने के लिए सभी को समान रूप से अध्ययन अवसर उपलब्ध होने से है, इसमें लिंग, भाषा, जाति, रंग, क्षेत्र या नस्ल के आधार पर कोई भी पक्षपात नहीं किया जायेगा ––

1. पुरुषों के समान महिलाओं को भी शिक्षा की आवश्यकता होती है, जितनी ही अधिक महिलाओं की साक्षरता होगी उसी अनुपात में स्वास्थ्य परीक्षण, परिवार नियोजन, परिपक्व आयु में विवाह और जन्मदर में न्यूनता परिलक्षित होने के अतिरिक्त सामाजिक उत्थान का कार्य भी संभव हो सकेगा ।
2. अनुसूचित जातिः अनुसूचित जनजातियों का एक विशाल समुदाय आर्थिक और शैक्षिक रूप से पिछड़ेपन से ग्रस्त है । उन्हें भी सभी आयामों में तथा शिक्षा के क्षेत्रों और स्तरों में सामान अवसर एवं सुविधाएं कराई जायें । इन्हें प्रेरित किया जाए अपने पाल्य को 14 वर्ष की आयु पूर्ण होने तक नियमित रूप से पाठशाला भेजतें रहें ।

3. समाज के वंचित वर्ग तथा विकलांग विशेष रुप से हमारा ध्यान आष्ट करते हैं । इस वर्ग के लोगों की शिक्षा सुविधाओं में विस्तार करने के लिए विशेष प्रकार के विद्यालय ६ शिक्षा संस्थान स्थापित किए जाएं जहां ऐसे लोगों के लिए विशेष सुविधा उपलब्ध हो ।

4. सामाजिक संरचना की दृष्टि से अल्पसंख्यकों की शिक्षा का विशेष ध्यान रखा जाए, ताकि अल्पसंख्यक वर्ग में शैक्षिक अन्तराल न रहे । संवैधानिक प्रतिबद्धता की दृष्टि से उनकी भाषा और संस्कृति की सुरक्षा आवश्यक है और इस दृष्टि से विद्यालयों में कार्यकलाप आयोजित हों तथा पाठ्य पुस्तकों की संरचना हो विद्यालय के समस्त कार्यकलाप सर्वधर्म समभाव मूल्य के अनुसार संपन्न हों ।

शैक्षिक अवसरों की समानता का संवैधानिक प्रावधान – भारतीय संविधान में शैक्षिक अवसरों की समानता का स्पष्ट उल्लेख किया गया है, शिक्षा से संबंधित संविधान की कुछ धारायें इस प्रकार से हैं ––

1. **अनुच्छेद 15 –** धर्म मूल वंश जाति लिंग व जन्म स्थान के आधार पर कोई भेदभाव किसी भी भारतीय नागरिक के साथ नहीं किया जाएगा–

2. अनुच्छेद 16 – सरकारी नौकरियां सभी के लिए खुली रहेंगी तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों के लिए विशेष सुविधाएं सुरक्षित स्थानों के रूप में रहेंगी ।

3. **अनुच्छेद 19 –** प्रत्येक भारतीय नागरिक को अपनी पसंद के अनुसार व्यवसाय या धंधा करने का अधिकार होगा ।

4. **अनुच्छेद 25 –** हिंदुओं की सार्वजनिक धार्मिक संस्थाओं के द्वार समस्त हिंदुओं के लिए खुले रहेंगे ।

5. **अनुच्छेद 28 –** शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के मामले में कोई भेदभाव किसी के साथ नहीं किया जाएगा ।

6. **अनुच्छेद 29 –** राज्य द्वारा पोषित अथवा राज्य निधि से सहायता पाने वाली किसी भी शिक्षा संस्थान में प्रवेश पर किसी भी तरह का प्रतिबंध निषेध ।

7. अनुच्छेद 46 – इन जातियों के शैक्षिक और आर्थिक हितों की रक्षा और उनका सभी प्रकार के शोषण और सामाजिक अन्याय से बचाव ।

8. अनुच्छेद 146 – केंद्र व राज्यों में अछूतों के कल्याण हेतु सामान कल्याण एवं अशासकीय संस्थाओं को खोलने पर बल दिया गया है ।

9. अनुच्छेद 244 – अनुसूचित जातियों के लिए प्रशासन संबंधी विशेष व्यवस्था की गई है ।

10. अनुच्छेद 330 व 335 – संसद और विधान मंडलों में अनुसूचित जातियों को विशेष प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना ।

समावेशन से अभिप्राय का अध्ययन करना – समावेशन से अभिप्राय सामान्य बालकों के साथ विशिष्ट बालकों को एक साथ प्रदान की जाने वाली शिक्षा व्यवस्था से है । शिक्षा सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने का एकमात्र और सबसे प्रभावी साधन है । समतामूसक और समावेशी शिक्षा न सिर्फ स्वयं में एक आवश्यक लक्ष्य है बल्कि समतामूलक और समावेशी समाज निर्माण के लिए भी अनिवार्य कदम है, जिसमें प्रत्येक नागरिक को सपने संजोने, विकास करने, और राष्ट्रहित में योगदान करने का अवसर उपलब्ध हो यह शिक्षा नीति (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) ऐसे लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ती है, जिसमें भारत देश के किसी भी बच्चे के सीखने और आगे बढ़ने के अवसरों में उसकी जन्म या पृष्ठभूमि से संबंधित परिस्थितियाँ बाधक न बन पाए यह नीति इस बात की पुनः पुष्टि करती है, कि स्कूल शिक्षा में पहुंच, सहभागिता और अधिगम परिणामों में सामाजिक दूरी के अंतरालों को दूर करना सभी शिक्षा के क्षेत्र विकास कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य होगा ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के अनुसार ई सी सी ई में दिव्यांग बच्चों को शामिल करना और उनकी समान भागीदारी सुनिश्चित करना भी इस नीति की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी द्य दिव्यांग बच्चों को प्रारंभिक स्तर से उच्चतर स्तर तक की शिक्षण प्रक्रियाओं में सम्मिलित होने के लिए स्तंभ बनाया जाएगाद्य दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 (आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम) समावेशी शिक्षा को एक ऐसी व्यवस्था के रूप में परिभाषित करता है,जहां सामान्य व दिव्यांग बच्चे सभी एक साथ सीखते हैं, तथा शिक्षण एवं सीखने की प्रणाली को इस प्रकार अनुकूलित किया

जाता है, कि वह प्रत्येक बच्चे की सभी सामान्य अथवा विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हो।

समावेशन में अध्यापक की भूमिका का अध्ययन करना – अध्यापक को असामान्य बच्चों के साथ स्वाभाविक तरीके से व्यवहार करना चाहिए, जिससे कि बच्चे व्यवहार में किसी प्रकार का भेदभाव महसूस ना करें । इसके साथ ही अध्यापक को बच्चों से इस सत्य को भी नहीं छुपाना चाहिए कि वह समस्या का सामना कर रहा है, उसे बच्चे को यह स्वीकार करने में मदद करनी चाहिए कि काम के क्षेत्र में तो वह दूसरे बच्चों से भिन्न है, किंतु अन्य दूसरे क्षेत्रों में वह बिल्कुल भी भिन्न नहीं है । अपने बारे में इस प्रकार की समझ विकसित होने से उसे कई मनोवैज्ञानिक समस्याओं को कम करने में सहायता मिलेगी।

सर्वप्रथम अध्यापक को असमान्य बच्चों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना चाहिए जिसमें उनके साथ सामान्य समकक्षों, सामान्य अध्यापकों, सामान्य बच्चों के माता–पिता जैसा व्यवहार हो इस तरह का व्यवहार बच्चे के लिए स्वास्थ्यकारी होगा तथा इससे बच्चे के दूसरे किसी भी सामान्य बच्चे की तरह विकास में मदद मिलेगी द्य अध्यापक, असामान्य बच्चों (दिव्यांग बालक) तथा उनकी शिक्षा में शामिल अन्य व्यक्तियों के बीच मध्यस्थ होता है, इस कारण वह इन व्यक्तियों के व्यवहार में परिवर्तन करने में मदद कर सकता है,इससे बच्चे के सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा मिलेगा द्य समकक्षों, माता–पिता तथा अध्यापकों के नकारात्मक व्यवहारमुक्त बच्चे की आत्म संबंधी अवधारणा के प्रति पहुंच सकती है द्य असामान्य बच्चों के प्रति सामान्य वातावरण तैयार करने में अध्यापक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि अध्यापक समाज के उन महत्वपूर्ण सदस्यों में से एक हैं जिससे एक समाज के दृष्टिकोण के बदलने की आशा की जा सकती है, समाज के दृष्टिकोण को बदलने के लिए अध्यापक सम्मेलनों, भाषणों, वीडियो फिल्म्स व स्लाइड्स आदि का आयोजन कर सकता है तथा असामान्य बालकों के गुणों को और बेहतर कर सकता है द्य राष्ट्रीय जीवन के लिए जागरूकता पैदा करने के लिए संचार साधनों की मदद लेनी चाहिये द्य अध्यापक को बच्चों की जरूरतों को कभी भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए, इसके कारण बच्चे में उपेक्षा की भावना उत्पन्न हो सकती है, यदि एक बार उसे यह महसूस हो गया

कि वह उपेक्षित है तो इससे उसकी आत्म संबंधी धारणा नष्ट हो सकती है, जिसका प्रभाव आगे चलकर उसकी शिक्षा और उसके जीवन पर देखने को मिल सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार विशेष प्रतिभा वाले विद्यार्थियों के लिए सहायता प्रावधान –

I. प्रत्येक विद्यार्थी में कुछ जन्मजात प्रतिभाएं होती हैं जिन्हें खोजा जाना चाहिए,उनका पोषण करना चाहिए, उन्हें बढ़ावा देना चाहिए और उनका विकास करना चाहिए द्य यह प्रतिभाएं अलग–अलग रुचियां, प्रस्तावों और क्षमताओं के रूप में खुद को व्यक्त कर सकती हैं । जो छात्र किसी दिए गए दायरे में विशेष रूचि और क्षमताओं को दिखाते हैं, उन्हें इस बारे में सामान्य स्कूली पाठ्यक्रम से परे भी अध्ययन करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए । शिक्षक शिक्षा में विद्यार्थियों की प्रतिभाओं और उनकी रूचियों की पहचान और इन्हें बढ़ावा देने के तरीके शामिल होते हैं।

ठ. शिक्षकों का उद्देश्य छात्रों को पूरक संवर्धन सामग्री और मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन देकर कक्षा में उनके एकल हितों और या प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना होगा। विषय केंद्रित प्रोजेक्ट आधारित क्लब और सर्कल स्कूल कांप्लेक्स जिले और उसके आगे के स्तरों पर अत्यधिक प्रोत्साहित और समर्थित किए जाएंगे। साइंस सर्कल, मैथ्स सर्कल, म्यूजिक परफारमेंस सर्कल, चेस सर्कल, पोएट्री सर्कल, लैंग्वेज सर्कल, ड्रामा सर्कल, डिबेट सर्कल, स्पोर्ट सर्कल, इको क्लब सर्कल,स्वास्थ्य और कल्याण क्लब, योग क्लब इत्यादि इस प्रकार के कुछ उदाहरण हैं ।

ब.देशभर में विभिन्न विषयों में ओलंपियाड और प्रतियोगिताओं को आयोजित किया जाएगा। जिनमें स्कूल से लेकर स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर जरूरी समन्वय के जरिए यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी छात्र सभी स्तर पर जिनमें उन्होंने क्वालीफाई किया हो उनमें भाग ले सकें द्य सार्वजनिक एवं निजी विश्वविद्यालयों जिनमें आईआईटी और एनआईटी जैसे प्रमुख संस्थान शामिल हो।

क.एक बार जब इंटरनेट से जुड़े स्मार्टफोन या टेबलेट सभी घरों या स्कूलों में उपलब्ध होंगे तो क्विज प्रतियोगिताओं और ज्ञान संवर्धन सामग्री

वाले ऑनलाइन एप और साझा हितों के ऑनलाइन समुदाय विकसित किए जाएंगे । और सभी उपरोक्त चीजों को समृद्ध बनाने के लिए काम करेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षक –

शिक्षक वास्तव में बच्चों के भविष्य को आकार देते हैं, अतः हमारे राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करते हैं । इस नेक योगदान के कारण ही भारत में शिक्षक, समाज के सबसे ज्यादा सम्मानित सदस्य थे, और सिर्फ सबसे अच्छे विद्वान ही शिक्षक बन सकते हैं। विद्यार्थियों को निर्धारित ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्य प्रदान करने के लिए समाज, शिक्षक या गुरुओं को उनके जरूरत की चीजें प्रदान करता था। आज ध्अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता व पदस्थापना सेवा शर्तें और शिक्षकों के अधिकारों की स्थिति वैसी नहीं है, जैसी होनी चाहिए, और इसके परिणाम स्वरूप शिष्यों की गुणवत्ता और उत्साह वांछित मानकों को प्राप्त नहीं कर पाता है । शिक्षकों के लिए उच्चतर दर्जा और उनके प्रति आदर व सम्मान के भाव को पुनर्जीवित करना होगा, ताकि शिक्षण व्यवसाय में बेहतर लोगों को शामिल करने हेतु उन्हें प्रेरित किया जा सके। हमारे छात्रों और हमारे राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम संभव भविष्य सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों की प्रेरणा और सशक्तिकरण की आवश्यकता है। शिक्षक पात्रता परीक्षा (टी.ई.टी.) सामग्री और शिक्षाशास्त्र दोनों के संदर्भ में बेहतर परीक्षण सामग्री को विकसित करने के लिए मजबूत किया जाएगा । स्कूल शिक्षा में सभी स्तरों (बुनियादी, प्रारंभिक, उच्च प्रारंभिक और माध्यमिक) के शिक्षकों को शामिल करते हुए भी टीईटी को विस्तृत किया जाएगा। विषय विशेषज्ञ शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया में उनके संबंधित विषय में प्राप्त टी.ई.टी.या एन.टी.ए. परीक्षा के अंकों को भी शामिल किया जाएगा। शिक्षण के प्रति जोश और उत्साह को जांचने के लिए साक्षात्कार या कक्षा में पढ़ाने की प्रदर्शन प्रक्रिया को स्कूल या स्कूल के वातावरण में शिक्षक भर्ती प्रक्रिया का अभिन्न अंग होगा। इन साक्षात्कारों का आयोजन स्थानीय भाषा में शिक्षण सहायता और दक्षता का आकलन करने के लिए किया जाएगा, जिससे प्रत्येक स्कूल अथवा स्कूल कांप्लेक्स में कम से कम कुछ शिक्षक हों जो स्थानीय भाषा और घरों की अन्य प्रचलित घरेलू भाषाओं में छात्रों के साथ बातचीत कर सकें।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वर्तमान में जो शिक्षा प्रणाली है, उसमें शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई 2010) का पूर्णतरू पालन करना चाहिए 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के सभी बालकों एवं बालिकाओं का अनिवार्य रूप से विद्यालय में पंजीयन कराना चाहिए और सिर्फ पंजीयन से ही इसकी इतिश्री नहीं होगी, बल्कि वह बालक बालिका अपनी शिक्षा पूर्ण कर के ही विद्यालय से निकले, जिससे शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्याओं से निजात पायी जा सके। शिक्षा में समानता के अवसर सभी के लिए उपलब्ध हो सकें, कोई भी बालक बालिका जाति, रंग, भाषा,नस्ल, क्षेत्र अथवा धर्म के आधार पर शिक्षा से वंचित नहीं होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार असामान्य (दिव्यांग) बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ ही एकीकृत शिक्षण प्रणाली समावेशी शिक्षा प्रदान करानी चाहिए जिससे उन बच्चों में निराशा, भग्नासा, बेरंग, तनाव की जगह उमंग, उत्साह और जीवन के प्रति लगाव उत्पन्न हो और वह भी सामान्य बालकों की तरह रंगीन सपने देख और संजो सकें जिसे पूरा करने के लिए वह प्रयासरत हों ।

संदर्भग्रंथ—

1. शर्मा डा. आर. ए.–– अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी – आर लाल बुक डिपो मेरठ 2011 ।NISO 900 – 2008
2. भार्गव डा. महेश –– विशिष्ट बालक उनकी शिक्षा एवं पुनर्वास एच पी भार्गव बुक्स 4 –230 कचहरी घाट, आगरा उ.प्र. 2009 ISBN 778 – 8 – 81 – 1
3. त्यागी डॉ. गुरुसरण दास, डॉ. विजय कुमांर –– उदीयमान भारतीय समाज के शिक्षक – श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2011 ISBN– 873 – 81– 745 – 260 – 8
4. पाण्डेय,डॉ. रामसकल – उदीयमान भारतीय समाज के शिक्षक – श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, उ. प्र. ISBN 81– 7457 311 – 9
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 – भारत सरकार

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade
Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur
(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand
University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

Effects of New Education Policy 2020 on Higher Education

ANKIT NAMDEV
Assistant Professor
Bhagwan Aadinath College of Education
Maharra- Lalitpur (U.P.)&
Anil Kumar Singh Kushwaha
Assistant Professor
Bhagwan Aadinath College of Education
Maharra- Lalitpur (U.P.)

Abstract

The New Education Policy announced by using Government of India (NEP 2020) become a welcoming alternate and sparkling news amidst all the negativities surrounding the world due to the demanding situations posed by using Covid19 pandemic. The declaration of NEP 2020 changed into merely surprising by way of many. The adjustments that NEP2020 has advocated were some thing that many educationists by no means saw coming. Though the schooling policy has impacted faculty and college training equally, this text in particular focuses on NEP2020 and its impact on Higher Education. This paper additionally outlines the salient functions of NEP and analyses how they have an effect on the prevailing schooling machine.

Keywords: New Education Policy, Higher Education, Covid-19

Introduction

The National Policy on Education (NPE) is a coverage formulated by using the Government of India to promote education among India's humans. The policy covers essential training to colleges in

each rural and urban India. The first NPE turned into promulgated by way of the Government of India by using Prime Minister Indira Gandhi in 1968, the second one with the aid of Prime Minister Rajiv Gandhi in 1986,and the third through Prime Minister Narendra Modi in 2020.

The National Education Policy 2020 (NEP 2020), which become permitted by means of the Union Cabinet of India on 29 July 2020, outlines the vision of India's new training device. The new coverage replaces the preceding National Policy on Education, 1986. The policy is a comprehensive framework for basic schooling to better education in addition to vocational education in both rural and urban India. The policy ambitions to convert India's education machine by means of 2021. The language policy in NEP is a wide guideline and advisory in nature; and it's far as much as the states, establishments, and schools to determine at the implementation. The NEP 2020 enacts several adjustments in India's education policy. It pursuits to increase nation expenditure on education from round 4% to 6% of the GDP as quickly as viable.

In January 2015, a committee beneath former Cabinet Secretary T. S. R. Subramanian started the consultation system for the New Education Policy. Based on the committee document, in June 2017, the draft NEP changed into submitted in 2019 by a panel led with the aid of former Indian Space Research Organization (ISRO) leader Krishnaswamy Kasturirangan. The Draft New Education Policy (DNEP) 2019, changed into later released by way of Ministry of Human Resource Development, observed through a number of public consultations. The Ministry undertook arigorous consultation technique in formulating the draft coverage: "Over two lakh guidelines from 2.5 lakh gram panchayats, 6,600 blocks, 6,000 Urban Local Bodies (ULBs), 676 districts were received." The imaginative and prescient of the National Education Policy is:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

"National Education Policy 2020 envisions an India-centric education device that contributes immediately to remodeling our country sustainably into an equitable and colorful knowledge society via providing super schooling to all."

Quality better schooling need to purpose to increase folks that are notable, considerate, well-rounded, and innovative. It ought to allow someone to look at one or more specialized areas of interested an in-intensity stage and increase man or woman, moral and constitutional values, high brow curiosity, clinical mood, creativity, service spirit, and the competencies of the twenty first century throughout arrange of fields, inclusive of sciences, social sciences, the arts, humanities, languages, private, technological the vocational subjects. The new training coverage brings some fundamental modifications to the contemporary device, and the important thing highlights are multidisciplinary universities and schools, with as a minimum one in or close to each district, revamping student curricula, pedagogy, assessment, and assist for enhanced pupil revel in, organizing a National Research Foundation to help splendid peer-reviewed work and efficaciously seed study at universities and schools.

The foremost troubles faced with the aid of the Indian better schooling system includes enforced separationof qualifications, early specialization and scholar streaming into restricted research areas, less attention on studies at most universities and faculties, and shortage of aggressive peer-reviewed instructional research investment and big affiliated universities main to low levels founder graduate schooling. Institutional restructuring and consolidation aim to quit the fragmentation of better education by using remodeling higher education establishments into big multidisciplinary, growing well rounded and innovative people, and transforming other international locations educationally and economically, growing the gross enrolment ratio in higher training, inclusive of vocational education, from 26.3% (2018) to 50% via 2035.

Holistic and multidisciplinary training need to strive in an incorporated manner to enhance all human capacities-mental, cultural, social, bodily, emotional, and ethical. In the long term, this sort of complete training will be the approach for all undergraduate applications, including those in medical, technical, and vocational disciplines. Optimal studying environments and guide for college students provide a holistic method which include good enough curriculum, interactive pedagogy, constant formative evaluation, and ok aid for college students.

Objectives of the Study

The primary goal of this research is to observe the effect of New Education Policy 2020 on better training. The examine additionally outlines the salient features of NEP and analyses how they have an effect on the prevailing schooling gadget.

Research methodology

This study is a descriptive have a look at. The essential secondary information changed into collected from numerous websites which include those of Government of India, magazines, journals, different guides, and so forth. These records changed into then analyzed and reviewed to reach on the inferences and conclusions.

Salient Features of Nep 2020 Related To Higher Education

The new NEP has been introduced with an intention to formalize adjustments in the machine from college level to college/university degree. Keeping in thoughts the developing state of affairs, training content material henceforth, will cognizance on key-concepts, thoughts, programs and problem-fixing angles. The National Education Policy is predicted to deliver high-quality and lengthy-lasting impact at the higher education device of the country. The truth that foreign universities can be allowed to open campuses in India is a commendable initiative by the authorities. This will assist the student several in the global first-class of

training in their very own country. The coverage of introducing multi-disciplinary institutes will cause a renewed cognizance on each subject which includes arts, human ities and this form of education will assist college students to examine and develop holistically. Thus, college students willbe ready with stronger understanding base.

The new better education regulatory shape will make sure that awesome administrative, accreditation, financing, and educational preferred-placing roles are done with the aid of separate ,self-sustaining, and empowered bodies. These 4 structures can be set up as four impartial verticals inside a unmarried umbrella institution, India's Higher Education Commission (HECI). There are a variety of reforms and new developments which have been brought by using NEP in the higher education region. Some of the salient functions are:

Single regulatory body for better training:

The NEP ambitions to set up Higher Education Commission of India in an effort to be the single regulatory frame besides for felony and clinical training.

Multiple entry and go out programme :

There will be more than one entry and go out options for folks who desire to go away the path inside the center. Their credit might be transferred via Academic Bank of Credits.

Tech- based totally alternative for adult studying thru apps, TV channels:

Quality generation-primarily based alternatives for person gaining knowledge of consisting of apps, online courses/modules, satellite TV for pc-based totally TV channels, on line books, and ICT-geared up libraries and Adult Education Centers, and so forth.Will be advanced.

E-publications to be available in nearby languages:

Technology will be a part of training planning, teaching, mastering, evaluation, instructor, faculty ,and scholar schooling. The e-content material to be available in regional languages, beginning with 8 primary languages – Kannada, Odia, Bengali amongst others to enroll in the e-courses available in Hindi and English.

Common entrance examination for all Universities:

The commonplace Entrance examination for all higher education institutes to be held by means of National TestingAgency (NTA). The examination could be optional.

Detailed Analysis of Impact of Nep 2020 On Higher Education Regulatory System of Higher Education:

A full-size exchange in NEP 2020 is the inspiration to set up the Higher Education Commission of India (HECI), as an umbrella body for higher training, except for scientific and prison education. This will normally convey out a question that what is going to appear to the existing UGC and AICTE? HECI is aiming at reforming the higher training sector; the Bill will separate the Academic and Funding aspects of the sector. According to the new Bill, HECI will now not have any monetary powers. The investment methods which have been handled by way of the University Grants Commission (UGC) might be taken care via the Ministry of Education, formerly called the Ministry of Human Resource Development (MHRD). This alternate however is expected to clear the regulatory mess in India's Higher Education gadget. HECI is anticipated to have 4 independent verticals - National Higher Education Regulatory Council(NHERC) for regulation, General Education Council (GEC) for general-putting, Higher Education Grants Council (HEGC) for investment, and National Accreditation Council (NAC) for accreditation. To have uniformity in training standards, a single umbrella frame become

usually a requirement andthis has been a imaginative and prescient of several educationists. This is considered because the proper step in streamlining schooling policy. However, to make sure excellent of better education, institutes ought to be measured based totally on applicable parameters like studies, industry linkages, placements and educational excellence, and so on. If the HECI can manage this, the blessings to its biggest stakeholder, the teenagers of India, might be sizable.

The structure and lengths of various programmes:

In the context of the National Education Policy 2020 scheme, any undergraduate diploma in any institution will be of duration of three or 4 years. One can depart the diploma within this era. Any instructional group will ought to give to the pupil a degree diploma after the student completes two years of take a look at, a degree after the scholar completes 3 years of examine and a certificate to those college students who whole three hundred and sixty five days of take a look at in any expert or vocational course in their choice. The Government of India will also help in setting up an Academic Bank of Credit for storing the academic rankings digitally. This will enable the institutions to count the credit score at the end and positioned it inside the degree of thescholar. This might be helpful for those individuals who might ought to go away the path mid-manner. They can begin the path in a while from wherein they left off and not begin from the start once again. Even though NEP 2020says that Higher schooling establishments will be given the liberty to begin PG guides there might also be a few difficulty in designing One Year PG Degree for college kids who've completed four Year UG Degree and a Two Year PG Degree for students who have finished three Year UG Degree.

Conclusion

The coverage introduces a whole gamut of adjustments and reads in large part as a totally revolutionary file, with a firm draw close

at the modern-day socio-economic panorama and the chance of future uncertainty. Education for a brand new technology of rookies has to essentially have interaction with the increasing dematerialization and digitalization of economies, which calls for a very new set of talents for you to be able to maintain up. This seems to be a good extra important perquisite now, with the trend towards digitalization and disruptive automation being quickened with the aid of the pandemic. Overall, the NEP 2020 addresses the need to expand specialists in a variety of fields ranging from Agriculture to Artificial Intelligence. India wishes to be equipped for the destiny and the NEP 2020 paves the manner beforehand for many young aspiring college students to be ready with the proper skill set.

The new training coverage has a laudable imaginative and prescient, however its energy will rely upon whether it's far able to effectively combine with the other policy initiatives of presidency like Digital India,Skill India and the New Industrial Policy to name a few, so as to effect a coherent structural transformation. Hence, coverage linkages can make certain that education policy addresses to and learns from Skill India's enjoy in enticing more dynamically with the company area to form vocational education curriculum with a purpose to make it a fulfillment. There is likewise a need for more evidence-based totally selection-making, to adapt to hastily evolving transmutations and disruptions. NEP has reassuringly provisioned for real-time evaluation structures and a consultative monitoring and overview framework. This shall empower the training machine to continuously reform itself, in preference to awaiting for a brand new education coverage every decade for a shift in curriculum. This, in itself, may be a super achievement. The NEP 2020 is adefining second for better education. Effective and time-certain implementation is what's going to make it honestly course-breaking.

References

1. New Education Policy 2020 by MHRD Govt. of India
2. Mandal Keshav Chandra, National Educational Policy 2020: The key to development in India, Notion Press 2021
3. "National Education Policy: NTA to conduct common entrance exam for higher education institutes". *The Indian Express*. 29 July 2020.
4. *Kumar, Shuchita (31 July 2020). "New education policy: The shift from 10+2 to 5+3+3+4 system". Times Now.*
5. "National Education Policy 2020: Cabinet approves new national education policy: Key points". *The Times of India*. 29 July 2020.
6. "Govt approves plan to boost state spending on education to 6% of GDP". *Livemint*. 29 July 2020.
7. Thomas K Joseph, India's New Education Policy 2020, The Write Order Publications 2022

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade

Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur

(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0

Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय– भारतीय उच्चतर शिक्षा व्यवस्था हेतु एक नया और भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण

डा. राकेश कुमार वर्माएम.ए.–इतिहास, हिन्दी, शिक्षा शास्त्र,
एम.एड.– नेट,पी.एच.डी.
सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा ललितपुर
कु0ज्योति श्रीवास्तव,सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा ललितपुर

उच्चतर शिक्षा मनुष्य और साथ ही सामाजिक कल्याण के विकास में अति आवश्यक भूमिका निभाती है। "सा कि हमारे संविधान में भारत को एक लोकतांत्रिक, न्यायपूर्ण, सामाजिक रूप से सचेत, सांस्कारिक और मानवीय राष्ट्र, जहाँ सभी के लिए न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का भाव हो, एक ऐसे राष्ट्र के रूप में विकसित करने की परिकल्पना की गई है। एक राष्ट्र के आर्थिक विकास और आजीविकाओं को स्थायित्व देने में भी उच्चतर शिक्षा एक महत्वपूर्ण योगदान देती है। जैसे–जैसे भारत ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था और समाज की ओर बढ़ता जा रहा है वैसे–वैसे और अधिक भारतीय युवा उच्चतर शिक्षा की ओर बढ़ेंगें।

इक्कीसवीं सदी की आवश्यकताओं को देखते हुए, गुणवत्तापूर्ण उच्चतर शिक्षा का जरूरी उद्येश्य, अच्छे, चिंतनशील, बहुमुखी प्रतिभा वाले रचनात्मक व्यक्तियों का विकास करना होना चाहिए। यह एक व्यक्ति को एक या एक से अधिक विशिष्ट क्षेत्रों में गहन स्तर पर अध्ययन करने में सक्षम बनाती है और साथ ही चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा की भावना और विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, भाषा, साथ ही व्यावसायिक, तकनीकी और व्यावसायिक विषयों सहित विभिन्न विषयों में 21वीं सदी की क्षमताओं

को विकसित करती है। उच्चतर गुणवत्ता वाली शिक्षा द्वारा व्यक्तिगत उपलब्धि और ज्ञान, रचनात्मक सार्वजनिक सहभागिता और समाज में उत्पादक योगदान को सक्षम करना चाहिए। इसे छात्रों को अधिक सार्थक और संतोषजनक जीवन और कार्य भूमिकाओं के लिए तैयार करना चाहिए और आर्थिक स्वतंत्रता को सक्षम करना चाहिए।

व्यक्तियों के समग्र विकास के उद्येश्य के लिए यह आवश्यक है कि पूर्व–विद्यालय से उच्चतर शिक्षा तक, सीखने के प्रत्येक चरण में कौशल और मूल्यों का एक निर्धारित सेट शामिल किया जायेगा।

सामाजिक स्तर पर, उच्चतर शिक्षा का उद्येश्य राष्ट्र को प्रबुद्ध, सामाजिक रूप से जागरूक, जानकार और सक्षम बनाना है जो अपने नागरिकों का उत्थान कर सके और अपनी समस्याओं के लिए सशक्त समाधानों को ढूँढ़कर लागू कर सके। उच्चतर शिक्षा देश में ज्ञान निर्माण और नवाचार का आधार भी बनाती है और इसके चलते राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए उच्चतर शिक्षा का उद्येश्य व्यक्तिगत रोजगार के अवसरों का सृजन करना ही नहीं बल्कि अधिक जीवंत और सामाजिक रूप से जुड़े हुए सहकारी समुदायों के साथ मिलकर एक अधिक खुशनुमा, सामंजस्यपूर्ण, सुसंस्कृत, उत्पादक, अभिनव, प्रगतिशील और समृद्ध राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करना है।

वर्तमान में, भारत में उच्चतर शिक्षा प्रणाली की कुछ एक प्रमुख समस्याओं में निम्नलिखित शामिल हैं:–

क. गम्भीर रूप से खंडित उच्चतर शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र;

ख. संज्ञानात्मक कौशल के विकास और सीखने के परिणामों पर कम बल;

ग. विषयों का एक कठोर विभाजन, विद्यार्थियों को बहुत पहले ही विशेषज्ञ और अध्ययन के संकीर्ण क्षेत्रों की ओर ढकेल देना;

घ. सीमित पहुँच, विशेष रूप से सामाजिक, आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में जहाँ कुछ एक ही ऐसे विश्वविद्यालय और महाविद्यालय है, जो स्थानीय भाषाओं मे पढ़ाते है।

ङ. सीमित शिक्षक और संस्थागत स्वायत्तता;

च. योग्यता आधारित कैरियर प्रबंधन और संकाय और संस्थागत

लीडरों की प्रगति के लिए अपर्याप्त तंत्र;

छ. अधिकांश विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शोध पर कम बल और विषयक अनुशासनों में पारदर्शी और प्रतिस्पर्धा समीक्षा शोध निधियों की कमी;

ज. उच्चतर शिक्षा संस्थानों में गवर्नेंस और नेतृत्व क्षमता का अभाव;

झ. एक अप्रभावी विनियामक प्रणाली; और

ञ. बहुत सारे संबद्ध विश्वविद्यालय, जिनके परिणामस्वरूप अवर स्नातक शिक्षा के निम्न मानक।

यह नीति उच्चतर शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल बदलाव और नये जोश के संचार के लिए उपयुक्त चुनौतियों को दूर करने के लिए कहती है। जिससे सभी युवा लोगों को उनकी आकांक्षा के अनुरूप गुणवत्तपूर्ण, समान अवसर देने वाली एवं समावेशी उच्चतर शिक्षा मिले। इस नीति की दृष्टि में वर्तमान उच्चतर शिक्षा प्रणाली में निम्नलिखित प्रमुख परिवर्तन शामिल हैं:–

क. ऐसी उच्चतर शिक्षा व्यवस्था की ओर बढ़ना, जिसमें विशाल बहु विषयक विश्वविद्यालय और महाविद्यालय हों, जहाँ प्रत्येक जिले में या उसके पास कम से कम एक और पूरे भारत में अधिकतर एच.ई.आई. ऐसे ही हो, जो स्थानीय/भारतीय भाषाओं में शिक्षा कार्यक्रमों का माध्यम प्रदान करते हों;

ख. और अधिक बहु विषयक स्नातक शिक्षा की ओर बढ़ना;

ग. संकाय और संस्थागत स्वायत्तता की ओर बढ़ना;

घ. विद्यार्थियों के अनुभव में वृद्धि के लिए पाठयचर्या, शिक्षण शास्त्र, मूल्यांकन और विद्यार्थियों को दिये जाने वाले सहयोग में आमूल–चूल परिवर्तन करना;

ङ. शिक्षण अनुसंधान और सेवा के आधार पर योग्यता–नियुक्तियों और कैरियर की प्रगति के माध्यम से संकाय और संस्थागत नेतृत्व की स्थिति की अखण्डता की पुष्टि करना;

च. सहकर्मी द्वारा समीक्षा की गयी उत्तम अनुसंधान और

विश्वविद्यालयों और कालेजों में सक्रिय रूप से अनुसंधान की नींव रखने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एन. आर.एफ.) की स्थापना;

छ. शैक्षणिक और प्रशासनिक स्वायत्तता वाले उच्चतर योग्य स्वतंत्र बोर्डों द्वारा एच.ई.आई. का गवर्नेंस;

ज. व्यावसायिक (प्रोफेशनल) शिक्षा सहित उच्चतर शिक्षा के सभी एकल नियामक द्वारा "लचीला लेकिन स्थायित्व प्रदान करने वाला विनियमन";

झ. उपायों की एक श्रृंखला के माध्यम से पहुँच, समता और समावेशन में वृद्धिः इसके साथ ही उत्कृष्ट सार्वजनिक शिक्षा के लिए अधिक अवसर; वंचित और निर्धन छात्रों के लिए निजी/परोपकारी विश्वविद्यालयों द्वारा छात्रवृत्ति में पर्याप्त वृद्धि; ओपन स्कूलिंग, ऑनलाइन शिक्षा और मुक्त दूरस्थ शिक्षा (ओ.डी.एल.); और दिव्यांग शिक्षार्थियों के लिए सभी बुनियादी ढांचे और शिक्षण सामग्री की उपलब्धता और उस तक उनकी पहुँच।

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade

Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur

(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

उच्च शिक्षा में नवीन कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये शिक्षक की भूमिका एन0ई0पी0 2020 के संदर्भ में

अमरेन्द्र कुमार लाल
यू0जी0सी0 नेट शिक्षाशास्त्र
सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन,
महर्रा–ललितपुर एवं
नीरज कुमार तिवारी
सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन,
महर्रा–ललितपुर

सारांश :– शिक्षा एक राष्ट्र के विकास में एक विशिष्ट उत्पादनीय सेवा है जिसमें अध्यापक अपनी अहम भूमिका निभाता है साथ ही साथ अपने अध्यापकों के मार्गदशर्न में विद्यार्थी अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। अध्यापक एक सुगमकर्ता के रुप में ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सहभागिता निभाता है जिसमें सीखना बच्चों के लिये अर्थपूर्ण बन सके। छात्रों को नैतिक, सामाजिक, अध्यात्मिक रूप में गढ़ने में उनका योगदान एक शिल्पकार की तरह होता है। एक अध्यापक विद्यार्थी की योग्यता, क्षमता, रूचि तथा बुद्धि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान कर सके इस सम्बन्ध में विगत वर्षो में आयी शिक्षा नीतियों तथा विभिन्न आयोगो द्वारा इस विन्दु पर ध्यान आकृष्ट किया गया है। तत्कालीन केन्द्रीय सरकार द्वारा NEP 2020 के माध्यम में उच्च शिक्षा में शिक्षकों को अपेक्षाकृत अधिक सुदृढ़ बनाने में किए विभिन्न प्रावधानों को सम्मालित किया गया है तथा कई प्रावधानों को हटाया गया है या उन्हे संशोधित किया गया है जिससे भविष्य में भारतीय उच्च शिक्षा को और उन्नत बनाया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

प्रस्तावना :– उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को नवीन कौशल विकसित करके शिक्षा के माध्यम से युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करना , यही विजन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को एक क्रान्तिकारी दस्तावेज बानाता है। भारत एक ऐसे मुहाने पर है जहाँ राष्ट्र को फिर से जीवित करने और 21वी सदी के पूर्वाद्व के लिये इसके पाठ्यक्रम की रुपरेखा तैयार करने हेतू मजबूत और अच्छी तरह से परिभाषित कदमों की आवश्यकता है । जिसमें एक शिक्षक की भूमिका अति महात्वपूर्ण है जो कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निर्देशित है जिससे उच्च शिक्षा में विद्यार्थीयों में नवीन कौशलों का विकास किस किस प्रकार से किया जा सकता है ,पर बल डाला गया है आज के समय में शिक्षक की भूमिका ज्ञान के प्रसारक के बजाय बच्चों में ज्ञान सृजन कराने वाले उत्प्रेरक के रूप में बदल गयी है। एक अच्छे अध्यापक के लिये आवश्यक है कि विद्यार्थियों के अधिगम की विविध स्थितियाँ उपलब्ध कराये तथा यह भी सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में संलिप्त रहें।

भारत सरकार विश्व के प्रगतिशील देशों में भारत को शीर्ष पर लाने के लिये लगभग प्रत्येक क्षेत्र में व्यापक और साहसिक सुधार लाने की प्रक्रिया में कार्यरत् है। पिछले पॉच वर्षो में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिर्वतन हुये है। नई शिक्षा नीति 2020 ने हमारी शिक्षा प्रणली में बहुत ही मौलिक परिवर्तनों का प्रास्ताव रखा गया । NEP 2020 में न केवल सकल नामांकन अनुपात में वृद्धि पर जोर देने के विषय की बात कही गयी है बल्कि हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के महात्वकांक्षी मिशन आत्मनिर्भर भारत के उद्देश्यों को साकार करने के लिये कौशल विकास पर भी जोर दिया गया है जिसमें एक शिक्षक की अहम भूमिका है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता :– इस शोधपत्र के माध्यम से अध्ययन करना है कि नई शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा में नवीन कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये एक शिक्षक की भूमिका पर क्या–क्या नवीन प्रावधान या सुधार किये गये है जो कि पूर्व में आयी शिक्षा नीतियों से बेहतर है या जिन्हे अभी तक क्रियान्वित नहीं किया जा सका है उनके लिये सरकार की क्या योजनायें या दृष्टि कोण है ? क्योंकि वर्षो से हमारे देश में जो शिक्षा प्रणाली चल रही है उसमें किस प्रकार से बदलाव होगा जिससे आज हमारी युवा पीढ़ी रटंत विद्या प्रणाली को छोड़कर

अपेक्षाकृत बेहतर शिक्षा की ओर बढ़ सके। आज हमारे समाज को रचनात्मक, कलात्मक तथा आलोचनात्मक केन्द्रित सोच रखनी होगी और इसके लिये आज के शिक्षक को भी नवीन सोच वाला होना होगा जो कि उच्च शिक्षा में विद्यार्थीयों को नवीनता के साथ जोड़ सकें।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :– आज के समय में शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियों में शिक्षा को कौशल आधारित बनाने की प्रकृति चल रही है जिसमें शिक्षक की भूमिका अति महात्वपूर्ण है। अतः प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. कौशल आधारित शिक्षा का अध्ययन।
2. डिजिटल साक्षरता।
3. पुस्तकालय मीडिया विशेषज्ञ।
4. उच्च शिक्षा में स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम।
5. इन्सिटीट्यूशनल परिणाम और काउंसलिंग।
6. विश्वविद्यालय/महाविद्यालय स्वायत्ता।

कौशल आधारित शिक्षा :– वर्तमान समय में कौशल आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे यह व्यवस्था दी गयी है कि इसके लिये शिक्षकों को प्रशिक्षण एवं प्रोत्साहन दिया जाये ताकि यह शिक्षा विद्यार्थियों के लिये रोजगारोन्मुखी होने के कारण विशेष उपयोगी हो। आज विश्व स्तर पर रूझान बदल रहे है, मशीनें मनुष्यों का स्थान ले रही है। चालक रहित कार, रोबोट सर्जरी का प्रचलन बढ़ रहा है इसलिये बदलती हुई तकनीक से युक्त रखने के लिये शिक्षार्थियों को शिक्षित किया जायें।

हर व्यक्ति को परिस्थितियों को संभालने, समस्याओं के समाधान खोजने, समीक्षको को सोचने, आत्मनिरीक्षण करने, संकट का प्रबन्धन करने और उससे बचने के साधनों को खोजने के लिये तैयार होने की आवश्कता है।

डिजिटल साक्षरता :– आज अधुनिक शिक्षा प्रोद्योगिकी से संचालित हो रही है। आज के विशाल आनलाईन पाठ्यक्रमों के साथ शिक्षा का भविष्य बढ़ रहा है। छात्र अधिक से अधिक इण्टरनेट का प्रयोग कर सके एवं सभी की वहाँ तक पहुँच हो। NEP2020 में उक्त नई परिस्थितियों और वास्तविकताओं के लिये नयी पहल की गयी है। इस सम्बन्ध में प्रौद्योगिकी

की नई चुनौतियों को स्वीकार करते हुये उससे मिलने वाले लाभों के साथ–साथ ऑनलाईन डिजिटल शिक्षा की हानियों को कम करते हुये हम कैसे इनका लाभ उठायें इसका भी ध्यान रखा गया है।

पुस्तकालय मीडिया विशेषज्ञ :– वास्तव में पुस्तकालय तेजी से स्थानीय प्रौद्योगिकी के केन्द्र बन रहे हैं। चूँकि पुस्तकालय अध्ययन सामग्री सेवाओं की पेशकश करते हैं जिसके किये प्रौद्योगिकी के ज्ञान और अध्ययन की आवश्यकता है। NEP2020 के तहत आज शिक्षकों के ऊपर यह दायित्व भी आ गया है कि पुस्तकालय मीडिया विशेषज्ञो की तरह प्रौद्योगिकी और अनुसंधान विधियों की जानकारी रखे तथा इस ज्ञान को अपने छात्रों तक पहुँचाये। जहॉ जहॉ NEP2020 की व्यावस्थाये लागू हो रही है वहॉ वहॉ शिक्षक वर्ग इस काम को बखूवी अंजाम भी दे रहे है।

उच्च शिक्षा में स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रम :– हमारे देश में उच्च शिक्षा प्रणली में सर्वोच्च रूप से गणित अध्याधिक स्तरीय तथा राष्ट्र के सम्मानित नागरिकों द्वारा प्रभावित रही है। उच्च शिक्षा अनेक परिर्वतनों के दौर से गुजर चुकी है। भारत में उच्च शिक्षा के सामने सुलभता, प्रासंगिकता, गुणवत्ता, समता तथा समतुल्य चुनौतियॉ है। आज एक और राजनैतिक बाध्यता, सामाजिक मांग, वाह्य दबाव तथा आन्तरिक असंतोष बढ़ रहा है। वहीं विद्यार्थियों की बेचैनी तथा रोजगारपरक की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रहीं है। इसी के साथ–साथ राष्ट्रीय नीतियों में परिर्वतन जैसे कि वैश्वीकरण, औद्योगीकरण, निजीकरण तथा सूचना तकनीकी का प्रभाव शैक्षिक क्षेत्रों में पड़ा है। जिससे उच्च शिक्षा का प्रसार और विकास अनेक दिशाओं में हुआ ।

NEP 2020 में शिक्षा सुधार के लिये एक नीतिगत ढॉचा तैयार किया गया है जिसमें कहा गया है कि विश्वविद्यालय को उद्योगो के साथ भागीदारी के लिये अधिक प्रोत्साहन देना चाहिये। इससे विश्वविद्यालयों को शिक्षण व अनुसंधान के लिये अत्याधिक राशि जुटाने का अवसर मिलेगा। उनको आर्थिक स्वतंन्त्रता, अभिनव तकनीकी की सुलभता तथा विद्यार्थियों के लिये बेहतर रोजगार, पाठ्यक्रम का सत्त् उन्नयन तथा विद्यार्थियों को बेहतर प्रेरणा प्राप्त होगी। यही कारण है कि विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय एक वैकल्पिक व्यवस्था उत्पन्न करने की दृष्टि से स्ववित्त

पाठ्यक्रमों की मदद ले रहे हैं। जो उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान कर सकें और उच्च शिक्षा केवल वर्ग तक सीमित न रह जाये।

इन्सिटीट्यूशनल रिजल्ट और काउंसलिंग :– NEP2020 के तहत् –

1. 2040 तक सभी उच्च शिक्षा संस्थानों को बहुविषयक संस्थान बनाने पर जोर दिया गया है जिसमें प्रत्येक का लक्ष्य 3000 या अधिक छात्र होंगें।
2. 2030 तक हर जिले में या उसके व्यास में कम से कम एक बड़ा बहुविषयक उच्च शैक्षणिक संस्थान होगा।
3. इसका उद्देश्य उच्चशिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 2035 तक व्यवसायिक शिक्षा सहित 50 प्रतिशत तक बढ़ाना होगा।
4. विकास सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थानों में से होगा जिसमें बड़ी संख्या में उत्कृष्ट सार्वजनिक संस्थानों पर जोर होगा।
5. नवीन कौशलों को बढ़ावा देने के लिये NEP2020 की नीति में केवल कृषि विश्वविद्यालयों, कानूनी विश्वविद्यालयों, स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालयों, तकनीकी विश्वविद्यालयों, और अन्य क्षेत्रों में एकल संस्थानों का उद्देश्य समग्र और बहुविषयक शिक्षा प्रदान करने वाले बहुविषयक संस्थान के रुप में होगा।

NEP 2020 के तहत नवीन कौशल को बढ़ावा देने के लिये योग्यता आंकलन के बजाय नियमित एवं रचनात्मक आंकलन को अपनाने की परिकल्पना की गयी है जो कि अपेक्षाकृत अधिक योग्यता आधारित है जिसमें शिक्षक महात्वपूर्ण भूमिका निभायेंगें। इस तरह के आंकलन सीखने के साथ–साथ अपना विकास करने का भी बढ़ावा देगा साथ ही उच्चस्तरीय कौशल जैसे कि विश्लेषण क्षमता, आवश्यक चिन्तन–मनन करने की क्षमता और वैचारिक स्पष्टता का ऑकलन करेगा।

विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों को स्वायत्ता :– भारत में आज सरकारी अंकुश को विश्वविद्यालयों के विधेयको में परिर्वतन कर कम किया जा रहा है ताकि विश्वविद्यालय आर्थिक दृष्टि से इतने आत्मनिर्भर बनाये जा सके कि उन्हे कि उन्हे राजकीय कोष पर आधारित न होना पड़े। NEP2020 में उपरोक्त कार्यक्रम पर दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाते हुये नई विनियामक प्रणली को ग्रेडेड ऑटोनामी के माध्यम से समाप्त किया जायेगा। वर्तमान

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

में विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सभी महाविद्यालय प्रत्यायन कराने और स्वायत्त डिग्री देने वाले महाविद्यालय बनाने के लिये निर्धारित बैचमार्क एक समय अवधि में प्राप्त करेंगे, जिसे उचित मेंटरिंग और सरकार के सहयोग से प्राप्त किया जा सकेगा।

ग्रेडेड प्रत्यायन और ग्रेडेड स्वायत्ता की एक उपयुक्त प्रणाली के माध्यम तथा चरणबद्ध तरीके से सभी उच्चतर शिक्षण संस्थानों को उत्कृष्टता का अनुशीलन करने वाले स्वतन्त्र स्वास्थायी संस्थान बनाना होगा। इस कदम से हमें अधिक ऊर्जावान एवं योग्य शिक्षक मिल सकेंगें जिससे हमारे विद्यार्थी जो कि भारत का भविष्य हैं एक सफल, आत्मनिर्भर तथा आदर्श नागरिक बन सकेंगें।

निष्कर्ष :– उच्च शिक्षा में नवीन कौशल आधारित शिक्षा को किस–किस तरीके से NEP2020 में सुधार दिया गया है तथा किन–किन नये आयामों को रखा गया है यह सब इस शोध पत्र के माध्यम से हमने सीमित शब्दों में परन्तु प्रभावी ढंग से जाना। NEP2020 के प्रावधानों में व्यवसायिक कौशल जैसे कारपेन्टिग, प्लम्बिंग, बिजली, की मरम्मत, बागवानी, कटाई, सिलाई आदि में प्रशिक्षण दिया जायेगा साथ ही साथ डिजिटल साक्षरता, शिक्षक को मीडिया विशेषज्ञ की भूमिका में निर्वाहन, उच्च शिक्षा में स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रमों तथा विश्वविद्यालयों को स्वायत्ता प्रदान करने की महात्वपूर्ण दूरदर्शी सोच है। वर्ष 2022 तक भारत दुनियां में सबसे ज्यादा कामकाजी आबादी वाला देश होगा। इसके लिये नवीन कौशलों के साथ–साथ जो भी प्रावधान NEP2020 में किये गये है वे सराहनीय एवं चुनौतीपूर्ण भी है जिसमें एक शिक्षक की महती भूमिका है और रहेगी। क्योंकि हम वर्षो से सुनते आयो है और यह अटल सत्य भी है कि शिक्षक ही वह मूर्तिकार या कुम्हार की भूमिका में होता है जो अपने शिक्षार्थियों को जो चाहे आकार दे दे। और यह शिक्षा नीति जैसा कि आशा है अपने शिक्षकों को मात्र शिक्षक ही नही बल्कि अपने विद्यार्थियों के लिये एक पथप्रदर्शक, दार्शनिक और मित्रवत् व्यवहार करने वाला बनाने के साथ–साथ अधिक कर्त्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी और जवाबदेही पूर्ण बनायेगी।

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade
Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur
(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

शिक्षा में समानता और समावेशन सुनिश्चित करने में शिक्षक शिक्षा का प्रभाव

राकेश कुमार
एम.एड. ,एम.फिल,यू.जी.सी.नेट(शिक्षाशास्त्र),
सहायक प्राध्यापक बी.एड.
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा ललितपुर ।
एवं
कु0वंदना सिंह
सहायक प्राध्यापक बी.एड.
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा ललितपुर ।

सारांश – आज के लोकतांत्रिक परिदृश्य में शैक्षिक समानता की चर्चा आम है शिक्षा के अवसर व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार मिलने चाहिए। अवसरों की प्राप्ति मे जाति , समप्रदाय, क्षेत्र , भाषा,दलगत , राजनीति या शारीरिक विकलांगता बाधक नहीं होने चाहिए । जिससे बिना किसी भेदभाव के छात्र को विद्यालय में प्रवेश मिले , उसे शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा मिले और मूल्यांकन मे उसकी योग्यता की परख हो। इसमें कोई भेद भाव ना होकर सबको आगे बढने के अवसर उपलब्ध होना चाहिए ।

संकेताक्षर – समानता, समायोजन, अवसर, भेदभाव, वंचित, अधिगम असमर्थी, विभेद, संरचना, परिदृश्य, अक्षमता, समप्रदाय।

प्रस्तावना – शिक्षा में समानता से लोग इसका आशय अधिकारों और अवसरों तथा सुविधाओं के बराबर बॉटने से लगाते हैं चाहे कोई उनका लाभ उठा सके अथवा नहीं । सभी मनुष्यों में एक सी शक्ति नहीं होती है और सभी लोग अवसरों व सुविधाओं से बराबर लाभ भी नहीं उठा सकते है। अतः सबको बराबर बॉट कर देने का परिणाम यह होगा कि कुछ उनका लाभ उठा सकेगें और कुछ नहीं । कुछ उनका दुरुपयोग करेगें तो

कुछ को अधिक अवसरों व सुविधाओं की आवश्यकता होगी। समता या समानता का आशय यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को उतनी सुविधा या अवसर दिए जाए जिनका वह लाभ उठा सके और यदिवह उनसे लाभ न उठा सके तो वे उतनी मात्रा में न दिए जायें , समानता का अर्थ सबके लिए समान नीति से है ,सबको समान बनाने से नहीं । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में प्रावधान है कि लोकतंत्र को सफल बनाने तथा उसकी सुरक्षा के लिए सभी नागरिकों का शिक्षित होना अनिवार्य है लोकतंत्र वह शासन पद्धति होती है जिसमें सर्वोच्च सत्ता जनता के हाथ में होती है। शैक्षिक अवसरों की समानता के अन्तर्गत महिलाओं की शिक्षा, अनुसूचित जाति की शिक्षा , अनुसूचित जनजाति की शिक्षा , अल्पसंख्यकों की शिक्षा, विकलांगों की शिक्षा तथा वंचितो की शिक्षा की व्यवस्था आती है।

शिक्षा में समावेशन से अभिप्राय सामान्य बच्चों के साथ साथ असमान्य बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था की जाए इसका प्रमुख उद्देश्य यह है कि असमर्थ बच्चे भी सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करते है तो उनमें भी जिंदगी के प्रति उत्साह ,राग, उल्लास,आनन्द उत्पन्न होता है इससे उनके अंदर निराशा हताशा की जगह जिजीविशा उत्पन्न होती है।जिंदंगी में रंग बिखरने लगते है सामान्य बालको की तरह उनमें भी स्वस्थ स्पर्धा जन्म लेने लगती है। जिससे वे समाज की मुख्य धारा से जुड कर जीवन जीना प्रारम्भ कर देते है।

किसी भी देश की शिक्षा का मूल्यांकन करना हो तो सबसे पहले प्रारम्भिक शिक्षा का ही नाम जेहन में आता है और प्राथमिक शिक्षा के स्तर से ही उस देश की शिक्षण व्यवस्था का मुल्याकंन किया जा सकता है। हमारे देश में स्वराज्य के 75 वर्षों भी प्राथमिक शिक्षा की स्थिति संतोष जनक नहीं है । इसके कई कारण है और सबसे बडा कारण प्राथमिक शिक्षा की मशीनरी का सही से कार्य न करना भी है । शिक्षा में समानता का अभाव देखने को मिल रहा है।यह सिर्फ विद्यालय में रजिस्ट्रेशन करने से खत्म नहीं की जा सकती है बल्कि इसका आउटपुट क्या है इससे आकी जानी चाहिए। हमारे देश में सर्वप्रथम कोठारी आयोग 1964–66 ने सुझाव दिया है कि 6से 14 आयु वर्ग के बच्चों की कक्षा 1 से 08 तक ही शिक्षण अनिवार्य एवं निःशुल्क दी जाय , संविधान के अनुच्छेद 45 में यह घोषणा की गई है कि राज्य इस संविधान के लागू होने के समय से 10 वर्ष के अन्दर 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों की अनिवार्य एवं निशुल्क

शिक्षा की व्यवस्था करेगा और इसके अनुछेद 29 में यह घोषणा की गई है कि राज्य द्वारा घोषित अथवा आर्थिक सहायता प्राप्त किसी भी शिक्षण संस्थान में किसी भी बच्चे के धर्म , मूलवंश , अथवा जाति ,नस्ल ,भाषा के आधार पर प्रवेश से वंचित नही किया जायेगा।जिसका अनुसरण करते हुए शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 (Right to Education) बनाया गया।

शोध अध्ययन की आवश्यकता – मेरे शोध पत्र के माध्यम से अध्ययन करना है कि शिक्षा में समानता और समावेशन सुनिश्चित मे शिक्षक की भूमिका का प्रभाव का अध्ययन करना है । मुझे इसकी आवश्यकता इसलिए महसूस हुई क्योंकि आजादी के बाद से ही सबको समान बनाने की चर्चा चल रही है।लेकिन आज आजादी के 75 वर्षो बाद भी समाज में समनता नहीं हो पा रही है। किसी को शिक्षा का किसी को जाती का ,किसी को धर्म का ,किसी को अमीरी का ,किसी को सत्ता का दम्भ है और असमनता इन्ही स्तरों पर बनी हुई है। तो हम जितने भी स्तरों पर असमनता को कम करके समानता ला सकें यह समाज के लिए संजीवनी का कार्य करेगा। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एवं NEP 2020 जैसी योजनाएं सरकार ने लागू की है इससे सम्भवता कुछ असमानताओं को कम करने में मदद मिलेगी । अब बात करें समावेशन की तो इसकी अत्यन्त आवश्यकता मुझे महसूस हुई क्योंकि कक्षाओं में एक भी बालक विकलांग दिख जाता है तों मन में उसके भविष्य के प्रति संवेदनशीलता तथा हमदर्दी होने लगती है। अत: मुझे महसूस हुआ कि समावेशन पर भी शोध की आवश्यकता है।जिससे उनके उज्जवल भविष्य की सम्भावना तलाशी जा सके।

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

1. शिक्षा में समानता का अध्ययन करना।
2. शिक्षा में महिला शिक्षा की समानता का अध्ययन करना।
3. शिक्षा में वंचितो की शिक्षा में समानता का अध्ययन करना।
4. समावेशन का अध्ययन करना ।
5. समावेशन कैसे किया जा सकता है इसका अध्ययन करना।

शिक्षा में समानता से अभिप्राय – शैक्षिक अवसरों की समानता से तात्पर्य सभी के लिए एक समान शिक्षा नही है। बल्कि प्रत्येक बालक की शारीरिक

, मानसिक, नैतिक, परिस्थितियों के अनुरुप शिक्षा प्रदान करना है। इसका तात्पर्य राज्य द्वारा व्यक्तियों की शिक्षा के संदर्भ में जाति ,रंग, रुप, प्रान्तीयता, भाषा एवं धर्म आदि के मध्य भेदभाव न करने से भी है।साधारणतया जब हम शिक्षा में समानता की बात करते हैं तो तीन बातें शिक्षा की समानता की सूचक कही जा सकती है–

क. प्रवेश की समानता

ख. स्तर की समानता

ग. परिणाम की समानता

क. प्रवेश की समानता – योग्यता के अलावा प्रवेश की कोई भी कसोटी नही होनी चाहिए। जाति ,धर्म , भाषा, क्षेत्र इसमें बाधक न हो । कुछ समय पहले शूद्रों एवं स्त्रियों को पढने का अधिकार नही था इस असमानता को दूर करने के लिए संविधान के अनुछेद 45 में यह घोषणा की गई है कि राज्य इस संविधान के लागू होने के 10 वर्ष के अंदर 6 से 14 वर्ष के बालक बालिकाओं को निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा, अनुच्छेद 29 में यह घोषणा की गई है कि राज्य द्वारा पोषित किसी भी शिक्षण संस्थान में किसी भी बच्चें के धर्म मूलवंश तथा जाति के आधार पर प्रवेश से वंचित नही किया जायेगा।

ख.स्तर की समानता – स्तर की समानता का तात्पर्य है कि एक स्तर की शिक्षा सबको,बिना भेद भाव के मिलनी चाहिए,यह स्तर प्राथमिक या माध्यमिक हो सकता है। यह शिक्षा अनिवार्य एवं निशुल्क होनी चाहिए। देश में सर्वप्रथम कोठारी आयोग (1964–66) ने यह सुझाव दिया था जिसका अनुसरण करते हुए शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 लागू हुआ।

ग.परिणाम की समानता – शिक्षा के परिणाम स्वरुप व्यक्ति जीविकोपार्जन करता है शिक्षा प्राप्त करने के बाद जीवनयापन समान एवं सुलभ होने चाहिए जैसा कि महात्मा गांधी ने बेसिक शिक्षा के संदर्भ में कहा है कि शिक्षा बीमे की तरह होनी चाहिए।

2.शिक्षा में महिला समानता का अध्ययन करना– 1947 के बाद स्त्री शिक्षा की प्रगति तीव्रगति से हुई और उनकी सामाजिक स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन आये। स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण समानता का हो रहा है भारतीय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

संविधान के अनुच्छेद 15(1), 16 (1),16 (2) के अनुसार किसी भी नागरिक से लिंग के आधार पर भेदभाव नही किया जायेगा,धारा 15 के अनुसार राज्य किसी नागरिक के विरुद्व केवल धर्म, जाति,लिंग,जन्म स्थान या इनमें से किसी के आधार पर कोई भेद भाव नही किया जायेगा। इसी कारण जो महिलाओं की 1951 में साक्षरता दर 8.86 प्रतिशत थी वो 2001 में बढकर 54.16 प्रतिशत हो गई। स्त्री शिक्षा के लिए राधाकृष्णन आयोग ने कहा – शिक्षित स्त्री के बिना व्यक्ति शिक्षित नही हो सकता है। नारी शिक्षा के लिए आयोग ने सुझाव दिये–

1. नारी को सुगृहणी एवं सुमाता बनाने की शिक्षा दी जाए।
2. स्त्रियों के लिए शिक्षण सुविधाओं का विस्तार किया जाए।
3. अध्यापिकाओं को समान कार्य के लिए समान वेतन दिया जाए।

राष्ट्रीय महिला शिक्षा समिति – इस समिति को समिति की अध्यक्षा के नाम पर दुर्गाबाई देशमुख समिति कहकर भी पुकारा जाता है समिति ने अपना प्रतिवेदन 1959 में भारत सरकार के सम्मुख प्रस्तुत किया जिसके सुझाव इस प्रकार है–

1. भारत सरकार से कुछ समय तक स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है साथ ही स्त्रीयों के लिए अलग से प्रशासनिक व्यवस्था की जानी चाहिए।
2. स्त्री शिक्षा के प्रसार हेतु राज्यों में बालिकाओं तथा महिलाओं की शिक्षा के लिए राज्य परिषदें गठित की जानी चाहिए।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्री शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष प्रयास किये जाने चाहिए।

कोठारी आयोग (1964–66) में दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में गठित शिक्षा आयोग जिसने अपना प्रतिवेदन 1966 मे प्रस्तुत किया था ने मानव संसाधन के विकास ,परिवारो की उन्नति तथा बालको के चरित्र निमार्ण में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की शिक्षा को अधिक महात्वपूर्ण ,स्वीकार किया है तथा महिला शिक्षा के लिए अपने सुझाव दिये है–

1. बालिकाओं की अनिवार्य शिक्षा के लिए अधिकाधिक प्रयास किये जाए।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं के लिए अलग विद्यालय खोले जायें।

3. बालिकाओं के लिए निःशुल्क छात्रावासो एवं छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जाए।
4. बालिकाओं के लिए उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
5. स्त्री शिक्षा के मार्ग की बाधाओं को दूर करने के लिए ठोस कदम उठाये जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में स्त्रियों की शिक्षा में व्यापक परिवर्तन लाने की संकल्पना की गई है जिसमें निम्न बाते सामने आयी –

1. विभिन्न पाठकमों के अंग के रुप में स्त्रीयों के अध्ययन को बढावा दिया जाए।
2. शिक्षण संस्थानों को स्त्री विकास के कार्यकमों को संचालित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
3. विभिन्न स्तरों व्यवसायिक ,तकनीकि तथा कृषि शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी पर विशेष बल दिया जाए।

प्रोफेसर राममूर्ति समिति 1991 – समिति ने बालिका शिक्षा पर निम्न सुझाव दिये है–

1. अध्यापिकाओं की अधिक से अधिक नियुक्ति की जाए।
2. विद्यालय में पोषण ,स्वास्थ्य तथा बालविकास का समावेश किया जाए।
3. विभिन्न स्तरो पर महिला अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना की जाए।
4. शिक्षा में वंचितो की शिक्षा की समानता का अध्ययन करना– वंचित शब्द का शाब्दिक अर्थ है आभाव ,विहीन आदि। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु या सुविधा से विहीन हो जाता है तो ऐसा व्यक्ति असंतुष्ट रहता है और अपने व्यक्तित्व का पूर्ण या अधिकतम विकास नही कर पाता ।कभी कभी जब समाज में किसी एक वर्ग के लिए किसी सुविधा से वंचित कर दिया जाता है तो वह वर्ग वंचित वर्ग कहलाता है।वैसे वंचन कई प्रकार के होते है–

1. शारीरिक वंचना या विकलांगता
2. मानसिक वंचना या विकलांगता
3. आर्थिक वंचना या विकलांगता
4. सामाजिक वंचना या विकलांगता
5. सांस्कृतिक वंचना या विकलांगता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार समानता के अवसर – शिक्षा सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने का एक मात्र और प्रभावी साधन है यद्यपि भारतीय शिक्षा प्रणाली और सरकारी नीतियों ने विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के सभी स्तरों में लिंग और सामाजिक श्रेणीयों के अंतरालों को कम करने की दिशा में लगातार प्रगति की है किन्तु असमानता अभी भी देखी जा सकती है विशेषकर माध्यमिक स्तर पर हम सामाजिक आर्थिक रुप से वंचित ऐसे समूहों को देख सकते है जो शिक्षा के क्षेत्र में भूतकाल से ही पीछे रहे है। सामाजिक ,आर्थिक रुप से वंचित (एस0ई0डी0जी0) इन समूहों में लिंग (विशेष रुप महिला व टांन्सजेंडर व्यक्ति) सामाजिक सांस्कृतिक पहचान (जैसे अनुसूचित जाति ,अनुसूचित जन जाति ,ओ0बी0सी0 और भाषायी तथा धार्मिक अल्पसंख्यक) भौगोलिक पहचान (जैसे – गांव ,कस्बे आंकाक्षी जिले के विद्यार्थी , विशेष आवश्यकता) सीखने से संबन्धित अक्षमता सहित और सामाजिक, आर्थिक स्थिति जैसे कि प्रवासी समुदाय,निम्नआय वाले परिवार,असहाय स्थिति में रहने वाले बच्चे, बाल तस्करी के शिकार बच्चे जिनमें शहरों में भीख मॉगने वाले अनाथ बच्चे शहरी गरीब भी शामिल है के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। अब जबकि स्कूलों में कक्षा 1 से लेकर 12वीं तक लगातार नामाकंन घट रहा है। और नामाकंन में यह गिरावट सामाजिक आर्थिक रुप से वंचित समूहों में अधिक है और विशेषकर इन (एस0ई0डी0जी0) कीमहिला विद्यार्थियों के संबन्ध में यह और अधिक स्पष्ट है तथा उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में (एस0ई0डी0जी0) के नामाकंन में यह गिरावट और अधिक है।

4. समावेशन का अध्ययन करना – शैक्षिक समावेशन से आशय उस शिक्षा व्यवस्था से है जो सामान्य स्तर के छात्रों से अधिक एवं निम्न मानसिक स्तर के छात्रों के लिए होती है इसका स्वरूप छात्रों की योग्यता क्षमता एवं स्थितियों के अनुरूप होता है जिसमें सामान्य बालकों के साथ विशिष्ट बालकों को शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था रहती है ।

शैक्षिक समावेशन के उद्देश्य–

1. इसके माध्यम से छात्राध्यापक या प्रशिक्षु विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति संवेदनशील हो सकेंगे।

2. सामान्य विद्यालय के अध्यापक शारीरिक मानसिक सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से पिछड़े बालकों की पहचान कर उनकी उचित देखरेख का निर्देशन दे सकेंगे ।
3. शैक्षिक समावेशन द्वारा विशेष आवश्यकता वाले बालकों की शैक्षिक मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्याओं की विवेचना कर समाधान कर सकेंगे ।
4. शैक्षिक समावेशन की आवश्यकता को समझ कर विद्यालय में समावेशित वातावरण का सृजन कर सकेंगे ।
5. विशिष्ट बालकों के लिए शैक्षिक कार्य योजना का निर्माण कर उसका क्रियान्वयन कर सकेंगे ।
6. विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों की पहचान कर विशेष शिक्षण योजना तैयार कर सकेंगे तथा एक अच्छे अध्यापक की भूमिका का निर्वाह निर्वहन कर सकेंगे।

समावेशन कैसे किया जा सकता है इसका अध्ययन करना– ऐसे बालकों की पहचान कर ऐसी शिक्षा दी जाए कि वह आत्मनिर्भर बन सकें तथा जीवन निर्वाह भली–भांति कर सकें अतः हस्तकला दस्तकारी की व्यवसायिक शिक्षा देना अपेक्षित है इनमें समायोजन की भावना का विकास करना आवश्यक है समाज में भली–भांति समायोजन के लिए उनकी भाषाएं क्षमता का विकास किया जाना चाहिए सामान्य एवं प्रतिभावान बालकों के साथ संपर्क बनाए रखने से इनकी मानसिक शक्ति बढ़ती है और सामाजिक तत्वों का ज्ञान होता है विशेष रूप से ऐसे बालकों के लिए पृथक विद्यालयों अथवा कक्षाओं की आवश्यकता रहती है मानसिक रूप से मंद बालकों के लिए पाठ सहगामी क्रियाएं होनी चाहिए इन में अधिकाधिक खेलकूद एवं मनोरंजन की व्यवस्था होनी चाहिए विभिन्न पाठ सहगामी क्रियाओं के माध्यम से उनमें आत्मनिर्भरता एवं समायोजन की भावना उत्पन्न होती है सामान्य बालकों से इनका पाठ्यक्रम पृथक होना चाहिए पठन में वस्तुओं और सड़कों गलियों नगरों मूल्यों सूचियों के जानने तथा अपने परिवार एवं पास पड़ोस की वस्तुओं से परिचय पाने आदि पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि इससे उन्हें सामाजिक जीवन से संबंधित ज्ञान प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार समावेशन – समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा न केवल स्वयं में एक आवश्यक लक्ष्य है बल्कि समतामूलक एवं समावेशी समाज निमार्ण के लिए अनिवार्य कदम है जिसमें प्रत्येक नागरिक को अपने सपने सजोने ,विकास करने और राष्ट्रहित में योगदान करने का अवसर उपलब्ध हो । यह शिक्षा नीति ऐसे लक्ष्यों को लेकर आगे बढती है जिससे भारत देश के किसी भी बच्चे के सीखने और आगे बढने के अवसरों में उसकी जन्म या पृष्ठभूमि से संबन्धित परिस्थितियां वाधक न बन जाए। यह नीति इस बात की पुनः पुष्टि करती कि स्कूल शिक्षा में पहुॅच ,सहभागिता और अधिगम परिणामों में सामाजिक श्रेणी के अंतरालों को दूर करना सभी शिक्षा क्षेत्र विकास कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य होगा।

सरकार द्वारा उठाये जाने वाले कदम–

क.(एस0ई0डी0जी0)की शिक्षा के लिए समुचित सरकारी निधि का निर्धारण।

ख.उच्चतर तथा (एस0ई0डी0जी0) के लिए स्पष्ट लक्ष्यों का निर्धारण ।

ग.उच्चतर शिक्षण संस्थानों की प्रवेश प्रक्रिया में जेंडर संतुलन को बढावा देना।

घ.विकास की ओर उन्मुख जिलों में उच्चतर गुणवत्तायुक्त उच्चतर शिक्षण संस्था बनाकर और बडी संख्या में (एस0ई0डी0जी0) के लिए हुए विशेष शिक्षा क्षेत्र बनाकर पहुच को सुधारना।

सभी उच्चतर शिक्षण संस्थानों द्वारा उठाये जाने वाले कदम–

1. सामाजिक आर्थिक रुप से वंचित छात्रों को अधिक वित्तीय सहायता और छात्रवृत्ति प्रदान करना।
2. उच्चतर शिक्षा के अवसरों और छात्रवृत्ति से जुडी जागरुकता का प्रचार प्रसार करना।
3. प्रवेश प्रक्रियाओं को अधिक समावेशी बनाना।
4. पाठ्यकम को अधिक समावेशी बनाना।
5. उच्चतर शिक्षा पाठ्यकमों को रोजगार परक बनाना।
6. यह सुनिश्चित करना कि सम्बन्धित इमारते और अन्य बुनियादी सुविधाएं ,व्हीलचैयर सुलभ और दिव्यगजनों के अनुकूल हों।
7. वंचित शैक्षिक पृष्ठ भूमि से आने वाले विद्यार्थियों के लिए ब्रिजकोर्स निर्मित करना।

8. ऐसे सभी विद्यार्थियों को उपयुक्त सलाह और कार्यक्रमों के जरिये सामाजिक भावात्मक और अकादमिक सहायता व सलाह प्रदान करना।
9. भेदभाव और उत्पीडन के खिलाफ बने सभी नियमों को शक्ति से लागू करना।
10. पाठ्यक्रम सहित उच्चतर शिक्षण संस्थानो के सभी पहलूओं द्वारा संकाय सदस्यों ,परामर्शदाताओं और विद्यार्थियों को जेंडर पहचान के प्रति संवेदनशील और समावेशित करना।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने शिक्षा में समानता और समावेशन सुनिश्चित करने में शिक्षक के प्रभाव का अध्ययन किया है। इसमें शोधार्थी ने सभी तथ्यों पर प्रकाश डालने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि जब तक अध्यापक स्वयं उत्साहित होकर विद्यालयों में शिक्षा प्रसारित नही करेगा तब तक हम कितनी भी योजना बनाले आउटपुट शून्य ही रहने वाला है क्योंकि आप अध्यापकों को विद्यालय पहुँचा सकते है अध्यापन कार्य नही सकते। पढाने की अध्यापक के अंदर से इच्छाशक्ति होनी चाहिए। तभी वह प्रभावी शिक्षण कर पायेगा। इसके लिए चाहिए कि अध्यापकों ,अधिकारियों ,शिक्षा से संबन्धित अधिकारियों के पाल्यों का पंजीकरण उनसे संबन्धित विद्यालयों में होना चाहिए जिससे उनके बच्चों का भविष्य भी विद्यालयों पर निर्भर होना चाहिए जहॉ से आप हजारो लाखों रुपये वेतन प्रतिमास प्राप्त कर रहे हो। जबतक यह व्यवस्था लागू नही होती तब तक अध्यापक अपने कार्यो की इतिश्री करते रहेगें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. टण्डन डा.उमा ,गुप्ता डा0 अरुणा (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आलोक प्रकाशन लखनऊ इलाहाबाद
2. सारस्वत डा0 मालती,गौतम प्रो0एस0एल0 भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामायिक समस्यायें आलोक प्रकाशन लखनऊ इलाहाबाद
3. पाण्डेय डा0 रामसकल (2005) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
4. सक्सेना एन0आर0स्वरुप एवं चर्तुवेदी शिक्षा (2010) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आर लाल बुक डिपो।
5. जैन डा0अंजु ,सिंह मोनिका शिक्षा अधिगम के सिद्वान्त कुमार पब्लिकेशन आगरा उत्तर प्रदेश।

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade
Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur
(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b & 2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ में सीखने को बढ़ावा देने केलिए अभिनाव शिक्षा

अश्विनी कुमार जैन
सहायक प्राध्यापक बी.एड.
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा ललितपुर ।
एवं
जयप्रकाश
सहायक प्राध्यापक बी.एड.
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजूकेशन
महर्रा ललितपुर ।

सारांश – ज्ञान की अभिवृद्धि, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति तथा भौतिकता के संचार के कारण समाज तेजी से बदल रहा है ।समाज में आर्थिक,सामाजिक ,सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तन भी तेजी से परिदृश्य को बदलते जा रहे हैं। लेकिन इन परिवर्तनों के अनुरूप शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन नहीं हो पा रहा है ।अतएव शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप लाने तथा जन आकांक्षाओं की प्रतिपूर्ति हेतु सक्षम बनाने के लिए नए विचारों, नई तकनीकों ,नई विधियों अथवा नवाचार की आवश्यकता है ।बच्चों को नवोन्मेषी हम तभी बना पाएंगे, जब उनका पालन पोषण इस तरह से किया जाए कि अभिनव उनकी प्रकृति में आ जाए ।इसके लिए अध्यापकों, अभिभावकों को अपनी सोच कामों में अभिनव को बढ़ावा देना चाहिए ।इसके साथ सरकारों को भी इस पृष्ठभूमि पर आधारित शिक्षा के विकास के लिए शिक्षा नीति का निर्माण करना होगा। इसी को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020 में नवाचार के विकास के लिए विभिन्न उपायों का वर्णन किया गया है ।ये उपाय न केवल अध्यापकों को नवाचार अपनाने के लिए पर्याप्त समय ,संसाधन एवं स्वतंत्रता देने की बात करते हैं, वहीं दूसरी ओर बच्चों को इससे जोड़ने के लिए छात्रों के

पाठ्यक्रम ,शिक्षण विधियों एवं शिक्षक व्यवहार में परिवर्तन लाने कि बात करते है।

प्रमुख संकेतक्षर – नवोन्मेषी ,अभिनव,नवाचार, NEP – 2020, DIKSHA,

प्रस्तावना –यद्यपि सतत रूप से नवाचार शिक्षण व्यवस्था में महत्वपूर्ण है । सोचना और नया करने का कौशल, 21वीं शताब्दी के छात्रों के लिए वांछनीय कौशल है। शिक्षा में नवाचार न केवल छात्रों को प्रोत्साहित करता है, अपितु शिक्षकों के लिऐ भी यह मांग करता है कि वे नए विचारों और रणनीतियों के साथ अनुसंधान एवम खोज के माध्यम से नए तथ्यों को उजागर करें।नवाचार किसी समस्या को नए तरह से देखने एवम हल करने का अलग तरीका है। यह शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में सुधार में भी योगदान देता है। क्योंकि यह छात्रों को सोचने के लिए प्रेरित करता है, एवम जटिल समस्याओं को हल करने में भी मदद करता है। यदि विद्यालयी वातावरण में अध्यापकों के लिए नवाचार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तो छात्रों और सीखने में तेजी आयेगी। इसी का परिणाम है कि भारत नवाचार में तेजी से बड़ रहा है। ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स रिपोर्ट 2020 के अनुसार भारत नवाचार में 131देशों की तुलना में 48 वें पायदान पर है।

शोध के उद्देश्य –

1. शिक्षकों को नवोन्मेषी शिक्षा के प्रति प्रेरित करना।
2. शिक्षकों को अभिनव शिक्षा के प्रति जागरूक करना।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इससे संदर्भित तत्वों को सभी के सम्मुख रखना।
4. अभिनव शिक्षा के लिए संभावित उपायों पर चर्चा करना ।

शोध की आवश्कता – शिक्षा के अर्थशास्त्र ने शिक्षा की परिभाषा एवम उनके उद्देश्यों में अमूलचूक परिवर्तन किया है। जहाँ पहले शिक्षा को व्यक्ति की बौद्धिक संपदा के समझा जाता था ,वही अब इसे व्यक्ति की भौतिक संपदा के रूप में देखा जाने लगा है। इसने अभिभावकों के दृष्टिकोण मे परिवर्तन तो किया ही है , साथ ही साथ बच्चों की सोच में भी परिवर्तन हमे दृष्टिगत होने लगा है। अब बच्चे पुरानी परंपरागत शिक्षण व्यवस्था में परिवर्तन चाहते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षा, शिक्षक शिक्षण संस्थाओं को

अपने आप में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। यही आवश्यकता उन्हें नवोन्मेषण के लिए प्रेरित करती है। क्योंकि बदलते शिक्षा बाजार में वहीं शिक्षा, शिक्षण संस्थाएं एवं शिक्षक अपने आप को स्थापित रख सकेंगे, जो अभिनव शिक्षा को अपनाएंगे। इसी को ध्यान में रखते हुए यह शोध पत्र लिखा जा रहा है। जिसका शीर्षक ७ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में सीखने को बढ़ावा देने के लिए अभिनव शिक्षा।

कक्षा मे नवाचार का पोषण – बच्चो को नवोन्मेषी बनाने के लिए उनका पालन पोषण इस तरह से करना चाहिए कि, अभिनव उनकी प्रकृति में आ जाए।इसके लिए अध्यापक को कक्षा कक्ष प्रणाली मे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए उन्हें तैयार कर आपसी सहयोग सहभागिता से हल करने का प्रयास करना चाहिए ।हमें एहसास है कि नए और अज्ञात रास्ते पर चलने से जोखिम और असफलताओं का सामना करने का डर मन में होता है ,लेकिन यदि शिक्षक लीक से हटकर सोचता है तो ऐसे कई तरीके हैं जिनसे शिक्षक धीरे–धीरे अभिनव को अपनी कक्षा में कर सकता है। उनमें से कुछ निम्न है ....

1. छात्रों को समस्या समाधान गतिविधि के माध्यम से सोचने के अवसर प्रदान कराना।
2. बच्चों में अलग तरह की सोच विकसित करने के लिए , उन्हें लगातार चुनौतियों एवम समस्याएं प्रदान करना।
3. विविध विचारों एवम दृष्टिकोणो को समायोजित और स्वीकार करना।
4. परंपरागत शिक्षण विधियों को छोड़ , नवीन शिक्षण विधियों का उपयोग करना।
5. बच्चों के मन में जिज्ञासा पैदा कर , प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित कर,उत्तर खोजने में सहयोग करना।
6. छात्रों को सोचने , कार्य करने ,दोहराने और नया करने के लिए पर्याप्त समय देना।
7. पूर्व ज्ञान से प्रारंभ कर शिक्षण एवम अधिगम प्रकिया को आनंद दायक और सुखद बनाकर।
8. बच्चों को सतत रूप से प्रेरित करके।

राष्टीय शिक्षा नीति 2020 भावी शिक्षकों एवम कार्यरत शिक्षकों केलिये एक ऐसी पाठ्यचर्चा प्रस्तुत करती है,जो उन्हें पर्याप्त अवसर , सोचने के लिऐ समय प्रदान करती है, जिससे वे कुछ नया कर सके।

इस पृष्ठभूमि पर NEP 2020सिफारिसे –

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धांत तार्किक निर्णय लेने की क्षमता एवं नवाचार द्वारा प्रोत्साहित छात्रों की रचनात्मक एवम आलोचनात्मक चिंतन को पहचानकर उनमें छिपी अद्वितीय क्षमताओं को बड़वा देना।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा योजनाओं ,प्रबंधन एवं भाषाई अवरोध को दूर करने की बात कहती है ।यह स्वायत्ता सुशासन , और सशक्तिकरण के माध्यम से नवाचार और नए विचारों को प्रोत्साहित करती है। यह अपेक्षित रूप से उत्कृष्ट संस्थानों को बढ़ावा देती है।
3. NEP 2020 शिक्षा के सभी क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देने की कल्पना करती है और सभी क्षेत्रों में नवाचार करने की आवश्यकता की सिफ़ारिश करती है ,इसके साथ ही यह नवाचार में योगदान देने वाली रचनात्मक और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ावा देती है।
4. इस नीति का उद्देश्य रचनात्मकता के लिए समान अवसर ,नवाचार एवम भारतीय समाज को जीवंत समाज में बदल कर , शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना।

शिक्षा नीति निम्नलिखित तरीकों से नवाचार एवं रचनात्मकता पर केंद्रित कही जा सकती है –

1. NEP 2020 मूलभूत साक्षरता और सांख्यिकी आंकड़ों पर उच्च गुणवत्ता वाले संस्थानों के ज्ञान एवं कौशलों को DIKSHA(Digital Information for knowledge sharing) पर लाने की बात करती है।
2. यह DIKSHA App शिक्षकों के लिए तकनीकि के उपयोग में आने व्यवधानो को, छात्रों के बीच किसी भी प्रकार की भाषागत बाधा को दूर करने में सहायक होगा।
3. सभी स्तरों पर आनंददायक एवम प्रेणादायक पुस्तकों को विकसित किया जाएगा ।

4. भारतीय भाषाओं में अनुवाद तकनीक को स्कूल , स्थानीय सार्वजनिक पुस्तकालयो में व्यापक रूप से उपलब्ध कराया जाएगा।
5. व्यवसायिक एवम तकनीकि शिक्षा जैसे प्रौद्योगिकी,प्रबंधन, वास्तुकला, नगर नियोजन, फॉर्मेसी, होटल प्रबंधन, आदि में नवाचर को बड़वा दिया जाएगा।
6. राष्ट्रीय तकनीकि मंच स्कूलों, उच्च शिक्षण संस्थानों के द्वारा बनाया जायेगा।
7. इस पटल को मुफ्त एवम स्वतंत्र रूप से प्रगट किए विचारों , तकनीकों को, मूल्यांकन ,नियोजन एवम प्रबन्धन के अनुभवों से सीखने में प्रयोग किए जाएगा।

कक्षाओं को नवोन्मेषी बनाने के उपाय–

1. रचनात्मकता और नवाचार की बाधाओं को दूर किया जाना चाहिए।
2. नए तरीकों की खोज , बच्चों में रचनात्मकता की प्रकृति को दर्शाती है। इसलिए इसका अभ्यास सतत् रूप स विद्यालयों के सभी स्तरों पर किया जाना चाहिए।
3. न केवल विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अपितु छात्रों को सभी विषयों में प्रयोग करने एवम प्रतिबिम्वित करने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।
4. विचारों कि विविधता को सम्मान देकर और उनका पालन पोषण करके कक्षा में नवाचार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर सकते हैं।
5. अध्यापकों की क्षमता को इस क्षेत्र में इस प्रकार विकसित किया जाए कि वे विभिन्न संस्थानों की मदद एवं प्रोत्साहन द्वारा छात्रों में नवोन्मेषी वातावरण का निर्माण कर सकें ।
6. कक्षा कक्ष प्रक्रिया में लचीलेपन को प्रोत्साहित किया जाए।
7. सतत रूप से अच्छा कर रहे अध्यापकों को प्रेरित करने के लिए प्रोत्साहन, एवम पुरस्कार दिए जाए।

निष्कर्ष – नवाचार के लिए एक अनुकूल और सक्षम वातावरण बनाना न कि शिक्षण की पारंपरिक पद्धति से चिपके रहना । जबकि परिक्षण आज के समय की आवश्यकता है। विभिन्न विषयों को मिलाकर, मूलभूत बातों से आगे बढ़ते हुए ,कक्षा कक्ष से बाहर निकलना ,सभी से मिलकर नए और अलग परिणाम छात्रों में शुरू से ही नवाचार की एक लकीर विकसित

करने में मदद करता है ।सबसे पहले मूल बातों को जाने तदुपरांत आगे बढ़ते हुए तब तक खोजबीन जारी रखें जब तक की छात्रों के संदर्भ में सर्वोत्तम उत्तर न मिल जाए । कवि विलियम बटलर येट्स ने शिक्षा में नवाचार की भूमिका के संदर्भ में समांतर उदाहरण दिया जो इस प्रकार है शिक्षा बाल्टी भरना नहीं बल्कि आग द्वारा रोशनी जैसा है।

संदर्भ सूची –

1. भाई योगेंद्र जीत,2020 प्रकाशन, शिक्षा में नवाचार,आगरा,श्री विनोद पुस्तक मंदिर, उत्तर प्रदेश।
2. बंगल, आर., शिक्षा में नवीन प्रवृत्तिया, आगरा,एस व बी वपी वडी व प्रकाशन।
3. राजपूत ,जगमोहन सिंह ,नवीन प्रकाशन ,शिक्षा की गतिशीलता अवरोध ,नवाचार एवं संभावनाएं ,नई दिल्ली ,किताबघर प्रकाशन।
4. द्विवेदी ,डॉ किरण, शिक्षा में नवाचार ,लखनऊ ,ठाकुर प्रकाशन ।
5. MHRD India द्वारा प्रकाशित गजट |.ऊीतक.हवअ.पद
6. अरोड़ा ,पंकज एवं उषा शर्मा, 2021 ,मेरठ ,शिप्रा प्रकाशन।
7. पांडे, डॉ सुधांशु कुमार, प्रथम संस्करण, 2021 ,नई दिल्ली नोशन प्रेस।
8. यादव ,जितेंद्र ,प्रथम संस्करण, 2021 ,नई दिल्ली ,नोशन प्रकाशन।

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade
Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur
(Approved by NCTE & Affitialld to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

राष्ट्र निर्माण में नई शिक्षा पद्धति का महत्व एक परिचय और विवेचना

मनीषा साहू
प्रवक्ता– शिक्षा शास्त्र विभाग
आदिनाथ कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा– २८४४०३,
ललितपुर, उत्तर प्रदेश.
एवं
विपिनचंद
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा ललितपुर

परिचय –

मानव पूंजी और एक समतामूलक समाज इनके निर्माण के लिए शिक्षा मौलिक अधिकार है, शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता काफी हद तक किसी भी देश में नवाचारों, आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और समानता को निर्धारित करती है। संयुक्त राष्ट्र (1948) में अपनाए गए मानवाधिकारों पर घोषणा के अनुच्छेद 26 में कहा गया है कि लोगों की स्वतंत्रता को मजबूत करने और उनकी रक्षा करने के लिए कम से कम प्रारंभिक चरणों में शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य होनी चाहिए। इस अर्थ में, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 को भारत में 6–14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा के मौलिक अधिकार के रूप में लागू करने के लिए अधिनियमित किया गया था। इसके अलावा, भारत में शिक्षा प्रणाली समाज के सीमांत वर्ग के लिए 25 प्रतिशत आरक्षण भी अनिवार्य करती है।

सन् 2018 से 2019 के मध्य भारत में शिक्षा का कुल सार्वजनिक व्यय 62वें स्थान पर था और शिक्षा पर 305.28 बिलियन अमरीकी डालर (कुल सकल घरेलू उत्पाद का 3:) खर्च किया। जबकि, दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था भारत में दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी है।

यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि 2019 में भारत में बेरोजगारी दर लगभग 11 प्रतिशत है और इस बेरोजगार आबादी के 30 प्रतिशत से अधिक देश में स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री धारक हैं। किसी देश के जीवन की गुणवत्ता और विकास शिक्षा की गुणवत्ता से निर्धारित होता है।

इन्ही सब बिन्दुओं को देखते हुए भारत में शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को बदलने के लिए भारत सरकार (GOI) द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 पेश की गई है। नई शिक्षा नीति की प्रासंगिकता और आवश्यकता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि यह 21वीं सदी में भारत की पहली शिक्षा नीति है और 1947 में भारत को आजादी मिलने के बाद से कुल मिलाकर तीसरी नीति है।

पूर्व की दो शिक्षा नीतियां वर्ष 1968 और 1986 में पेश की गई थीं। 34 साल पहले शिक्षा नीति में अंतिम संशोधन मुख्य रूप से ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड के माध्यम से भारत में प्राथमिक शिक्षा प्रणाली पर केंद्रित था। हालाँकि, जैसा कि हम सभी जानते हैं कि प्रौद्योगिकी ने बड़े पैमाने पर प्रगति की है और शिक्षा को प्रौद्योगिकी के संबंध में समाज, अर्थव्यवस्था और बड़े पैमाने पर देश की चुनौतियों का समाधान करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए।

इस प्रकार, भारत में भावी पीढ़ी के लिए समग्र, बहु–विषयक और कौशल – उन्मुख शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति अनिवार्य है। एनईपी 2020 को भारत को वैश्विक ज्ञान केंद्र बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम बताया जा रहा है। यह शिक्षा प्रणाली में पहुंच, समानता और गुणवत्ता के मामले में भारतीय शिक्षा में सुधार के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करता है।

• इसका लक्ष्य 2030 तक भारत में प्राथमिक और माध्यमिक स्कूल शिक्षा में 100 प्रतिशत सकल नामांकन प्राप्त करना है। एनईपी 2020 के माध्यम से भारत में शिक्षा प्रणाली का पूर्ण सुधार भारत को एसडीजी के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगा। एनईपी 2020 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सभी के लिए एनईपी 2020 गुणवत्ता शिक्षा के प्रमुख मानकों जैसे उच्च शिक्षा में बेहतर नामांकन, शिक्षण–शिक्षण परिणाम और युवाओं को कौशल – उन्मुख शिक्षा पर जोर देता है। यह शिक्षण–अधिगम परिणामों में सुधार के प्रभाव को मापने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करता है। इसमें भारत में उच्च

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

शिक्षा में वयस्क साक्षरता दर, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा में लिंग समानता सूचकांक, बेरोजगारी दर और सकल नामांकन अनुपात जैसे प्रमुख संकेतकों में भारत के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए प्रमुख हस्तक्षेप शामिल हैं।

भारत जैसे बड़े और विविध देश के लिए, एक रैखिक दृष्टिकोण अब गुणवत्ता विकसित करने का समाधान नहीं हो सकता है। शिक्षा प्रणाली और इसे बड़े सामाजिक अहसास के लिए शिक्षा में प्रौद्योगिकी और नवाचार के माध्यम से स्थायी समाधान लागू करने की आवश्यकता है।

• इस दिशा में, एनईपी 2020 भारत के संदर्भ को प्रासंगिक बनाने के लिए एक व्यापक ढांचा प्रदान करता है। एसडीजी 2030 के सिद्धांतों के अनुरूप, यह नई नीति पांच अंतर्निहित निर्धारकों पर आधारित है, अर्थात् सामर्थ्य, गुणवत्ता, पहुंच, इक्विटी और जवाबदेही ।

समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए संरचनात्मक सुधारों के माध्यम से एसडीजी के तहत महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भारत में संपूर्ण शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को फिर से संगठित करने के लिए नीति को रणनीतिक बनाया गया है।

इसमें स्थानीय भाषा में शिक्षा, स्कूलों में सामाजिक रूप से एकजुट वातावरण, सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों और समूहों जैसे आदिवासी समुदायों, ट्रांसजेंडर बच्चों, आर्थिक रूप से पिछड़े समुदायों पर विशेष ध्यान देना शामिल है।

नए एनईपी 2020 ने भारत में मौजूदा शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए कई महत्वपूर्ण सुधार पेश किये गए। एक बड़े बदलाव में, दुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालयों को अब भारत में परिसरों की स्थापना और संचालन की अनुमति दी जाएगी।

एक एकीकृत वितरण के लिए, सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश परीक्षा आयोजित करने के लिए एक एकल राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) की रणनीति बनाई गई है। छात्रों के शिक्षा क्रेडिट को प्रतिस्पर्धा के बजाय प्रगति की प्रणाली के रूप में स्थानांतरित करने के लिए छात्रों के लिए क्रेडिट का अकादमिक बैंक बनाया जाएगा।

कौशल प्रदान करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा अब इंटर्नशिप के रूप में छठी कक्षा से शुरू होगी। शिक्षण,शिक्षण परिणामों की गुणवत्ता में सुधार

के लिए छात्रों के लिए एक 360 डिग्री समग्र प्रदर्शन कार्ड पेश किया गया है। राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन भारत में बढ़ावा शिक्षा में एकीकृत दशाओं और अनुसंधान, नवाचार को बढ़ावा देने के लिए पत स्थापित गया है।

अत्याधुनिक आवश्यकताओं के साथ सर्वोत्तम बहु–विषयक शिक्षा प्रदान करने के लिए भारत के IIT और IIM जैसे प्रीमियम संस्थानों की तर्ज पर बहु–विषयक शिक्षा और अनुसंधान विश्वविद्यालय (MERU) बनाएँ जाएंगे। नई नीति के तहत, स्नातक शिक्षा एक स्टेप अप डिलीवरी है। इसमें कई निकास और प्रवेश विकल्पों के साथ 4 साल का बहु–विषयक स्नातक कार्यक्रम है।

इस कदम का उद्देश्य छात्र को विभिन्न पर्यावरण परिदृश्यों के अनुकूल बनाना है। प्रथम वर्ष की शिक्षा एक प्रमाण पत्र शिक्षा, दूसरे वर्ष में डिप्लोमा और 3 वर्ष पूर्ण होने के बाद स्नातक की डिग्री है। चौथा वर्ष अनुसंधान के लिए समर्पित किया गया है। छात्र मास्टर डिग्री के लिए आगे बढ़ेगा जो अब तक 2 साल की डिग्री के बजाय केवल 1 वर्ष के लिए होगा। इस तरह की शिक्षा छात्र को अपने ज्ञान को जब और जब फिट हो, लागू करने की शक्ति देगी।

विभिन्न स्तरों पर प्रवेश और निकास यहां परस्पर जुड़े चक्रों के रूप में शिक्षा और अनुप्रयोग का एक अच्छा संयोजन बनाते हैं। छात्र बाहर निकल सकता है और उद्योग में शामिल हो सकता है और शिक्षा प्राप्त करने के लिए वापस आ सकता है। इस तरह का संयोजन 3 साल की स्नातक डिग्री के बाद उद्योग में प्रवेश करने की आवश्यकता को भी समाप्त कर देता है।

निष्कर्ष – राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीयों को कल में छलांग लगाने के लिए एक सही कदम है। वर्तमान नीति में एक वैश्विक मूल्य योजक की संरचना के लिए एक स्ट्रीम–आधारित शैक्षिक सेटअप से एक मल्टीमॉडल सेटअप में बदलाव की आवश्यकता है।नीति में बदलाव इस बात पर ध्यान देते हैं कि सिस्टम को मल्टीमॉडल सिस्टम से कैसे जोड़ा जाए, लेकिन दूसरी ओर एक ऐसी प्रणाली को कैसे पूरा किया जाए, जो एक प्रतिस्पर्धी माहौल में छात्रों को आकार देती है, इसके रूप में चुनौतियां सामने आती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

यह मेक इन इंडिया, स्टार्ट–अप इंडिया, स्किल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे भारत सरकार के अन्य मेगा कार्यक्रमों के साथ भारत की समस्याओं के लिए मजबूत समाधान की आवश्यकता को संबोधित करता है।

संदर्भ सूची –

1. पांडे, बी। (2019)। भारत में सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करेंरू इसके लिए पूर्वापेक्षाएँ एसडीजी 4 हासिल करना। एस चतुर्वेदी में, टी। जेम्स, एस। साहा, और पी। शॉ (सं।) 2030 एजेंडा और भारतरू मात्रा से गुणवत्ता की ओर बढ़ना। दक्षिण एशिया आर्थिक और नीति अध्ययन (पीपी) 165–196)। सिंगापुररू स्प्रिंगर. https://doi-org/10.1007ɸ978–981–32–9091–4 8.
2. मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (2020, 5 अगस्त)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 https://www-mhrd-gov-in/sites/uploadfiles/mhrd/files/NEP Final English 0-pdf-
3. गूगल

A National Seminar Collaborated With NAAC

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियां

डॉ. रोहित कुमार

NAAC "A" Grade

Bhagwan Aadinath College Education Mahrra Lalitpur

(Approved by NCTE & Affitiald to Bundelkhand University Jhansi (U.P.) 12b&2f UGC)

Insta Publishing

Ring Road 2, Bilaspur, Chhattisgarh – 495001

Website: **www.instapublish.in**

© Copyright, 2022, Rohit Kumar

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

First Edition, 2022
ISBN: 798-93-95037-02-0
Price: ₹ 500.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Insta Publishing.

Published by: Insta Publishing

डॉ. रोहित कुमार

नवीन शिक्षा नीति–आवश्यकता और चुनौतियां

रामसेवक चंद्राकर
यू.जी.सी.नेट ,जे.आर.एफ.इतिहास
सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा ललितपुर उ.प्र.
एवं सतलेश कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक
भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजुकेशन
महर्रा ललितपुर उ.प्र.

सारांश – भारत सरकार द्वारा नवीन शिक्षा नीति 2020 को अपनी मंजूरी प्रदान की है जिसका उद्देश्य भारत को अग्रणी देशों के समकक्ष रखना है। इस नवीन शिक्षा नीति 2020 के तहत 3 साल से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अंतर्गत रखा गया है। 34 वर्षों पश्चात आई नई शिक्षा नीति का उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है जिसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक बनाना तथा शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ,मशीन ,डेटा, विश्लेषण जैब प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों के समावेशन से आधुनिक शिक्षा क्षेत्र के कुशल रिसीवर तैयार होंगे और युवाओं की रोजगार क्षमताओं में वृद्धि होगी।

प्रस्तावना – भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली की शुरुआत ब्रिटिश शासन काल में लार्ड मैकाले के द्वारा की गई थी जिसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य के लिए भारतीय क्लर्क तैयार करना था किंतु स्वतंत्रता आंदोलन और आजादी के पश्चात अनेकों शिक्षा संबंधी सुझाव तथा आयोगों की स्थापना की गई। जिन्होंने समय–समय पर भारतीय शिक्षा से संबंधित अपने सुझाव एवं प्रस्ताव पेश किए। 1986 ईस्वी की शिक्षा नीति एक समग्र तथा व्यापक शिक्षा नीति थी जिसका उद्देश्य असमानताओं को दूर करना था विशेष रुप से भारतीय महिलाओं ,अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए शिक्षा की बराबरी प्रदान करना था। इस शिक्षा नीति के द्वारा ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड

चलाया गया साथ ही साथ ओपन यूनिवर्सिटी का सुझाव भी इसी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिया गया था। इस शिक्षा नीति के द्वारा ही ग्रामीण विश्वविद्यालयों के निर्माण का आह्वान किया था जोकि गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित था।

शिक्षा संबंधी प्रावधान – उच्च शिक्षा से संबंधित इस नवीन शिक्षा नीति 2020 में नामांकन अनुपात को बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा गया है जिसकी प्राप्ति हेतु देशभर के उच्च शैक्षिक संस्थानों में 3.5 करोड़ नवीन सीटों की वृद्धि का प्रस्ताव है। एन.ई.पी. 2020 के अंतर्गत इस स्नातक पाठ्यक्रम में मल्टीपल एंट्री एंड एग्जिट व्यवस्था को अपनाया जाएगा जिसके अंतर्गत 4 वर्ष के स्नातक पाठ्यक्रम में छात्र कई स्तरों पर पाठ्यक्रम को बदल सकते हैं तथा छोड़ सकते हैं और उन्हें उसी के अनुरूप प्रमाण पत्र अथवा डिग्री प्रदान की जाएगी। 1 वर्ष के पश्चात प्रमाण पत्र 2 वर्षों के पश्चात एडवांस डिप्लोमा तथा 3 वर्षों के पश्चात स्नातक की डिग्री एवं 4 वर्षों के बाद शोध स्नातक की डिग्री प्राप्त होगी। नवीन शिक्षा नीति में विकलांग छात्रों हेतु भी विशेष प्रावधान किए गए हैं जैसे क्रॉस विकलांगता प्रशिक्षण संस्थान केंद्र, आवास सहायक उपकरण तथा शिक्षकों का पूर्ण समर्थन इत्यादि।

प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक नियमित रूप से स्कूली शिक्षा प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करना एवं नवीन शिक्षा नीति के अंतर्गत ही ऐसे आकांक्षी जिले जहां बड़ी संख्या में सामाजिक आर्थिक अथवा जातिगत बाधाओं का सामना करने वाले छात्र छात्राएं पाए जाते हैं उन्हें विशेष शैक्षिक क्षेत्र (स्पेशल एजुकेशनल जोंस) के रूप में नामित किया जाएगा और देश में क्षमता निर्माण हेतु सभी लड़कियों और ट्रांसजेंडर छात्रों को समान गुणवत्ता प्रदान करने की दिशा में जेंडर फंड की भी स्थापना की जाएगी। 8 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा हेतु एक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या और शैक्षणिक ढांचे का निर्माण भी एनसीईआरटी द्वारा किया जाएगा। इसी शिक्षा नीति द्वारा एससी ओबीसी और अन्य सामाजिक तथा आर्थिक रूप से वंचित समूहों से संबंधित मेधावी छात्र छात्राओं को वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाएगी।

इस प्रकार से इस शिक्षा नीति के द्वारा एक सर्व सुलभ वैश्विक शिक्षा नीति का प्रारंभ किया जा रहा है किंतु इस शिक्षा नीति से संबंधित भी अनेक चुनौतियां हैं जैसे इस शिक्षा नीति के वास्तविक क्रियान्वयन हेतु राज्य सरकारों का सहयोग आवश्यक रूप से अपेक्षित है। साथ ही शीर्ष नियंत्रण संगठन के तौर पर एक राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक परिषद को लाने के विचार का राज्यों द्वारा विरोध किया जा रहा है और महंगी शिक्षा नीति का विरोध भी स्वाभाविक है। अनेकों शिक्षाविदों का मानना है कि विदेशी विश्वविद्यालयों में प्रवेश से भारतीय शिक्षा व्यवस्था के महंगा होने की आशंका है जिसके फलस्वरूप निम्न वर्ग के छात्रों का उच्च शिक्षा प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है तथा शिक्षा का संस्कृतिकरण किए जाने का भी राज्यों द्वारा आरोप लगाया जा रहा है और इस नवीन शिक्षा नीति के समक्ष सबसे महत्वपूर्ण और गंभीर समस्या तथा चुनौती संपूर्ण देश में शिक्षकों की कमी को दूर करना है। केग की वर्ष 2017 की रिपोर्ट के अनुसार आज भी देश में एक ही शिक्षक के भरोसे हजारों प्राथमिक स्कूल चल रहे हैं जो शिक्षा की गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं। उच्च शैक्षिक संस्थानों में भी प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर तथा असिस्टेंट प्रोफेसर के हजारों पद रिक्त हैं जोकि नवीन शिक्षा नीति की सफलता में एक बहुत बड़ी बाधा है इन बाधाओं को दूर किए बगैर नवीन शिक्षा नीति की सफलता पर एक गंभीर प्रश्न चिन्ह है। एक अन्ना चुनौती शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना तथा शैक्षिक संस्थानों में रैगिंग को समाप्त करना भी है साथ ही साथ प्राथमिक से लेकर उच्च शैक्षिक संस्थानों में शिक्षकों के दायित्व तथा उनकी जवाबदेही और प्रदर्शन के संबंध में भी कानून एवं जवाबदेही लागू करना वर्तमान शिक्षा परिवेश की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

स्कूल शिक्षा संबंधी प्रावधान – इस शिक्षा नीति में 5+3+3+4 डिजाइन वाले शैक्षिक संरचना को प्रस्तावित किया गया है जो 3 से 18 वर्ष की आयु वाले बच्चों को शामिल करता है।

1. 5 वर्ष की फाउंडेशन स्टेज– 3 साल का प्री– प्राइमरी स्कूल और ग्रेड 1–2 तथा 3 वर्ष का प्रीपेटैरी स्टेज।
2. वर्ष का उच्च प्राथमिक चरण– ग्रेड 6,7,8 और 4 वर्ष का उच्च माध्यमिक चरण–9,10,11,12

3. N.E.P. 2020 के तहत HHRO द्वारा बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान पर एक राष्ट्रीय मिशन (National mission on foundational literacy and Numeracy) की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है जिसे वर्ष 2025 तक बच्चों के लिए आधारभूत और कौशल सुनिश्चित किया जाएगा।

विद्यालयों में सभी स्तरों पर छात्रों को बागवानी, नियमित रूप से खेलकूद, नृत्य तथा मार्शल आर्ट आदि को स्थानीय उपलब्धता के अनुसार प्रदान करने की कोशिश की जाएगी ताकि बच्चे शारीरिक गतिविधियों एवं व्यायाम आदि में सम्मिलित हो सके।

भाषायी विविधता का संरक्षण – वर्ष 2020 में कक्षा 5 तक की शिक्षा में मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को अध्ययन के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है साथ ही इस नीति में मातृभाषा को कक्षा 8 और आगे की शिक्षा के लिए प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है। स्कूली और उच्च शिक्षा में छात्रों के लिए संस्कृत तथा अन्य प्राचीन भारतीय भाषाओं का विकल्प उपलब्ध होगा परंतु किसी भी छात्र पर भाषा के चुनाव की कोई बाध्यता नहीं होगी।

इस नवीन शिक्षा नीति की आवश्यकता के अनेक कारण हैं जैसे बदलते वैश्विक परिदृश्य में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए मौजूदा शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन तथा शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि अनुसंधान और नवाचार आदि एवं भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर पहुंचाना, सुनिश्चित करना तथा वैश्विक मांगों को अपनाने हेतु भारतीय शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता आदि।

इस नवीन शिक्षा नीति के द्वारा मानव संसाधन मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है इससे नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संपूर्ण देश में परिवर्तनकारी सुधारों की अपेक्षा की गई है जिसके उद्देश्य के अंतर्गत वर्ष 2030 तक शिक्षा में 100 प्रतिशत जी.पी.आर. के सभी प्राथमिक विद्यालयों से माध्यमिक स्तर तक शिक्षा के सार्वभौमीकरण का लक्ष्य रखा गया है। इस शिक्षा प्रणाली में केंद्र सरकार राज्य सरकारों के सहयोग से शिक्षा क्षेत्र पर जी.डी.पी. का 6 प्रतिशत व्यय का लक्ष्य रखा गया है। इससे शिक्षा प्रणाली में प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में तथा आगे की शिक्षा को भी स्थानीय भाषा में देने को प्राथमिक सुझाव

दिया गया है। छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कक्षा 10 और 12 की परीक्षाओं में भी परिवर्तन किया जाएगा तथा भविष्य में सेमेस्टर या बहुविकल्पी प्रश्न इत्यादि जैसे सुधार भी शामिल किए जाएंगे। इस नीति के अंतर्गत परीक्षा परिणाम का एक राष्ट्रीय आकलन केंद्र स्थापित किया जाना है एवं छात्रों के मूल्यांकन हेतु एक इंटेलिजेंस सॉफ्टवेयर का भी प्रयोग सुनिश्चित किया जाना है। इस शिक्षा नीति में शिक्षकों की नियुक्ति को प्रभावी और पारदर्शी करने हेतु परीक्षाओं का एक पारदर्शी तथा साफ–सुथरा तरीका अपनाया जाना है एवं अध्यापकों के समय–समय पर किए गए कार्य उनके प्रदर्शन एवं शिक्षा के आधार पर उनको पदोन्नति दिए जाने का भी सुझाव सम्मिलित है। इससे शिक्षा नीति द्वारा राष्ट्रीय खेल अध्यापक शिक्षा परिषद शिक्षकों के लिए एक मानक का विकास करेगी।

निष्कर्ष– प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने नवीन शिक्षा नीति 2020 आवश्यकता और चुनौतियां के संबंध में अध्ययन किया है। जिसमें शोधार्थी ने सभी तथ्यों पर प्रकाश डालने का प्रयास करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि शिक्षा नीति कितनी ही उत्साहित क्यों ना हो बिना योग्य अध्यापक के बिना शिक्षा नीति के सभी मानकों तथा उद्देश्य को प्राप्त करना असंभव है। एक योग्य शिक्षक ही शिक्षा नीति की सफलता का मजबूत स्तंभ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. MHRD India द्वारा प्रकाशित गजट www-mhrd-gov-in
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार
3. भारतीय आधुनिक शिक्षा जर्नल्स एन.सी. ई. आर.टी. जनवरी 2017
4. Google.in